दलितों को पट्टों की जमीन से बेदखल करने की कार्रवाइयों पर रोक लगाई जाए। जाए। उन्होंने बाराबंकी जिले के अंबेडकर गांवों में विद्युतीकरण कराने, संपर्क मार्ग

करने वाले राशन दुकानदारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

रईस को रमजान बताकर पेश करने पर कोर्ट ने फटकारा

खनऊ, 3 जून (विधि)

सली मुजरिम की जगह एक नाबालिग लड़के को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करने पर शेष अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सहदेव कुमार ने थानाध्यक्ष सआदतगंज को कारण ताओनोटिस जारी की। पत्रावली के मुताबिक, अदालत में वजीरगंज थाने से संबंधित रकार बनाम मुन्ना का एक मुकदमा विचाराधीन है। इसमें एक अभियुक्त रमजान पुत्र ल्लू काफी दनों से पेशी पर नहीं आ रहा था। 18 मार्च को उसके खिलाफ गैरजमानती रंट जारी कर सआदतगंज थाने भेजा गया। वर्ष 1999 के इस मामले में पुलिस को जब मजान नहीं मिला तो 14 वर्षीय रईस पुत्र सलीम को रमजान पुत्र कल्लू दिखाते हुए रोगा आद्या प्रसाद ने गिरफ्तार कर लिया। इसका भेद खुलने पर अदालत ने गंभीर रुख पनाया। कोर्ट ने थाने से स्पष्टीकरण मांगा कि गिरफ्तार युवक की उम्र जी.डी. में क्यों हीं दर्ज है और उसके घर वालों को उसकी गिरफ्तारी की सूचना क्यों नहीं दी गई।

लात्कार के अभियुक्त को 23 वर्ष का कारावास

खनऊ, 3 जून (विधि संवाददाता)

पहरण व बलात्कार के मामले में सजा होने की जानकारी मिलते ही अदालत से फरार गए अभियुक्त मुकेश को आज अदालत में पेश किया गया। अपर सत्र न्यायाधीश यतन राम ने 23 वर्ष के कठोर कारावास एवं पांच हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। योजन की ओर से कहा गया कि 14 मई को अदालत ने अभियुक्त को अपहरण वं बलात्कार के आरोप में दोषी करार दिया था। खबर मिलते ही अभियुक्त अदालत फरार हो गया, जिसे गिरफ्तार कर आज पेश किया गया है। अदालत को बताया गया क वादी ने कैंट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी अभियुक्त उसके पड़ोस में अपने भाई साथ रहता था। घटना के दिन अभियुक्त वादी की लड़की को यह कहकर ले गया उसकी भाभी की तबीयत खराब है, उसने बुलाया है अपने घर पर अभियुक्त ने चाय नशीला पदार्थ मिलाकर उसे बेहोश कर दिया एवं उसके साथ बलात्कार किया।

इस साल रिकार्ड चीनी उत्पादन

लखनऊ, 3 जून (ब्यूरो)

प्रदेश में इस साल 52.30 लाख टन चीनी का रिकार्ड उत्पादन किया गया। पिछले वर्ष की तुलना में 8.36 लाख टन ज्यादा चीनी का उत्पादन हुआ।

गन्ना विकास एवं सिंचाई मंत्री ओम प्रकाश सिंह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि चालू पेराई सत्र में 548.62 लाख टन गन्ना पेरा गया। यह बीते साल की तुलना में 97.25 लाख टन ज्यादा है। पेरे गए गन्ने में से चीनी परता का प्रतिशत 9.53 रहा। राज्य चीनी निगम ने 47.20 लाख टन गन्ने की पेराई कर 4.08 लाख टन चीनी, सहकारी चीनी मिलों ने 87.71 लाख टन गन्ना पेरकर 7.95 लाख टन चीनी तथा निजी चीनी मिलों ने 413.71 लाख टन गन्ने की पेराई कर 40.27 लाख टन चीनी का उत्पादन किया।

श्री सिंह के मुताबिक गन्ना के बढ़ते क्षेत्र को देखते हुए वर्ष 2001-02 में शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के अंतर्गत 37,844 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उन्नतशील गन्ना प्रजातियों की बुआई की गई। इससे गन्ना प्रजातियों का प्रतिशत 11.8 से बढ़कर 13.1 हो गया है। इस वर्ष 82.52 लाख कुंतल बीज का वितरण किया गया है।

लखनऊ, 3 जून (ब्यूरो)

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदेश सचिव अशोक मिश्र ने राज्य काउंसिल के सदस्य तथा रायबरेली जिला कमेटी के सचिव वृजेंद्र अग्निहोत्री के निधन पर शोक व्यक्त किया है। दिल का दौरा पड़ने के कारण श्री अग्निहोत्री को कल लारी कार्डियोलॉजी सेंटर में भरती कराया गया था जहां देर शाम उनका निधन हो गया।

दीक्षित आज यहां पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक भी आत्मचिंतन और आत्मविश्लेपण के लिए ही बुलाई गई थी।

प्रवक्ता ने सपा को जातिवादी दल बताया। साथ ही कहा कि एक-एक जाति की राजनीति करने वाले चिल्लर दलों को आमजनों की आकांक्षाओं को समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि जातिवाद,

नेताओं द्वारा बसपा से मिलकर लोकसभा चुनाव लड़ने की घोषणा के बाद किसी को गठबंधन को लेकर शंका नहीं व्यक्त करनी चाहिए।

प्रवक्ता ने कहा कि गठबंधन के सवाल पर भाजपा में कोई मतभेद नहीं है। भाजपा में आंतरिक लोकतंत्र है। पार्टी में सभी मुद्दों पर खुलकर बहसें होती हैं।

प्रमुख सचिव राजस्व के खिलाफ सपा का प्रदर्शन

लखनऊ, 3 जून

प्रमुख सचिव राजस्व हरीश चंद्र पर दलितों की जमीन पर कब्जा करके फार्म हाउस बनाने का आरोप लगाते हुए पूरे मामले की जांच राजस्व परिषद के किसी वरिष्ठ सदस्य से कराने की मांग को लेकर समाजवादी पार्टी ने आज जिला मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया व राज्यपाल को ज्ञापन दिया।

> जमीन पर कब्जा करने का मामला

विरोध प्रदर्शन से पहले सपा कार्यकर्ता जी.पी.ओ.स्थित पटेल प्रतिमा के समक्ष इकट्ठा हुए और जुलूस बनाकर हजरतगंज व परिवर्तन चौक होते हुए जिला मुख्यालय पहुंचे व वहां प्रदर्शन किया। कचेहरी के समक्ष हुई सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश सपा अध्यक्ष रामशरण दास ने कहा कि हरीश चंद्र जैसे भ्रष्ट अधिकारी के खिलाफ उन्होंने विधान परिषद में आवाज उठाई थी, बाहर भी उठाते रहेंगे। शहर सपा अध्यक्ष फाखिर सिद्दीकी ने कहा कि चूंकि प्रमुख सचिव राजस्व सचिव हरीश चंद्र के कारनामों का खुलासा वरिष्ठ सपा नेता भगवती सिंह ने कर दिया इसलिए अब वह अपने लोगों से फर्जी आरोप लगवा रहे हैं। सभा के बाद प्रदर्शनकारियों ने राज्यपाल को प्रेषित ज्ञापन जिलाधिकारी को दिया। विरोध प्रदर्शन में विधायक राजेंद्र यादव, पूर्व विधायक श्यामकिशोर यादव, रविदास मेहरोत्रा, राजकिशोर मिश्रा व शारदा प्रताप शुक्ला ने भी भाग लिया।

विवि कर्मचारियों का क्रमिक धरना शुरू

लखनऊ, 3 जून (ब्यूरो)

लखनऊ विश्वविद्यालय कर्मचारी परिषद ने अपनी मांगों को लेकर कुलसचिव कार्यालय के सामने आज से क्रमिक धरना शुरू कर दिया। परिषद ने 7 मई की बैठक में यह निर्णय किया गया था कि मांगें पूरी न होने तक कर्मचारी अलग-अलग चरणों में अपना प्रदर्शन जारी रखेंगे।

धरने की अध्यक्षता कर रहे परिषद के अध्यक्ष सुरेश मिश्रा ने तीन वर्षों से कार्यरत नियत वेतनभोगी कर्मचारियों को वेतनमान मंजूर करने, साइंस कांग्रेस के उपलक्ष्य में कर्मचारियों को तीन विशेष वेतन वृद्धि देने, नियुक्ति, निलंबन, निष्कासन अथवा अन्य किसी निर्णय से पूर्व कर्मचारी परिषद को विश्वास में लेने की मांग की।

उन्होंने सेवानिवृत्त से रिक्त पदों पर छात्रावासों एवं अन्य विभागों में कार्यरत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को समायोजित करने की मांग भी की। धरने को महामंत्री विनायक धर दुबे, विजय कुमार मिश्र, जय नारायण, राम गोपाल, रक्षा राम, मनोज शर्मा सहित कई कर्मचारियों ने संबोधित किया।

दादा मियां का 94 वां उर्स आज से

शास्त्री क्लब व यूनिक स्पोर्टिंग की आसान जीत

।।श्रीकाशीजीमें आदिविश्वेश्वरके पास महल्ला घुघुरानाश्यामाकीगलीश्रीयुतबाबूहरखचन्दजीके
वाडेमें पंडित दुर्गाप्रसादजीकटारेके गणेशयंत्रालयमें कार्तिकमाहात्म्य पद्मपुराणान्तर्गत जलंधरोपा
ख्यान सहित छापा गया लिखा सीताराम मिश्र छापनेवाला घुरविन जिसे लेना होय सो चांदनी चौ
कमें पंडित दुर्गाप्रसादजी कटारेके दुकानमे मिलेगा। ।। ❁ ।।

॥श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीमत्पद्मपुराणांतर्गतकार्तिकमाहात्म्यविहिताकथा आदौशौनकसंवादोनारदेनमहात्मना ब्रह्मलोकाभिगमनंनारद
स्यपितामहात् १ संप्रश्नोधर्मकथनंकार्तिकस्यप्रकाशनं ततश्चकार्तिकस्यास्यमाहात्म्यंचप्रसंगतः २ कथनंपुण्यपापानांप्रातःकृत्यंततः
परं स्नानकाम्यविधिःस्नानंपुष्पाणांचैवनिर्णयः ३ माहात्म्यंपूजनेविष्णोःशालग्रामस्यचोद्भवं वृंदायास्तुलसीभावकथाजालंधरीततः ४ जलंधरस्य
मुत्पत्तिस्तत्रस्तस्यपराक्रमः विष्णुसंतोषणंवासोनारदागमनंवचः ५ राहोःकैलासगमनंशिवेनसहभाषणं क्रोधात्कृतिमुखोत्पत्तिर्भयाच्चपु
नरागमः ६ जलंधरसमुद्योगोयुद्धंशिवगणैःसह ततश्चतुमुलंयुद्धंमायायुद्धंततःपरं ७ मायाशिवस्वरूपंचपार्वत्याश्चैवसंभ्रमः विष्णोरागमनं
तत्रप्रतिज्ञाश्वासनंपुनः वृंदायाःस्वप्नसंदर्शःवनस्यगमनंततः राक्षसद्वयसंदर्शात्तथातिभयविह्वला ९ तपस्विदर्शनंप्रश्नोमायापत्युश्चदर्श
नं संगःस्वरूपसंदर्शःक्रोधादभिभवस्ततः १० अन्योन्यशापकथनंतुलस्यादिसमुद्भवः जलंधरवधश्चैवमाहात्म्यानिततःपुनः ११ तुल
स्यादीपदानस्यमाहात्म्यंकार्तिकस्यच समुत्पत्तिर्विधानंचतिथिकृत्यंततःपरं १२ त्रयोदशीचतुर्दश्योर्दीपदानाच्चयत्फलं सत्यशर्मायथा
दीपंदत्वालक्ष्मीयुतोभवत् १३ लीलावतीसमुद्धारस्तथाबलिदिनोत्सवं यमद्वितीयाकथनंचाक्षयानवमीतिथिः १४ भात्राकलस्यचोद्धारः
प्रबोधिन्याःफलंततःपांडवानांतुकृत्वाद्विप्रीणोपूर्वभवाकथा १५ पंचभीष्मव्रतंचैवकार्तिक्याश्चफलंततः ततश्चनरकाख्यानंप्रेतोद्धारोद्वि
जेनच १६ दीपदानस्यमाहात्म्येयथाचमदनालसा सुदर्शनायचोक्तायगतिंलेभेस्वनुक्रमात् १७ मूषिकालुब्धकश्चैवगोपकोदीपदानतःमुक्तिमा
पधूम्र॰ यथापापमचीकरत् १८ पुनश्चमथुरांप्राप्यवेश्यायैसंप्रदर्शयन् हरिभक्तिधूनस्तत्रहतोराजभटैर्यथा १९ नीतोयमगणैस्तत्र
मात्कंधर्मजंफलं उद्धारोधूम्रकेशस्यकलहोविप्रसंगमः २० तस्याःप्राग्जन्मकथनंकार्तिकेनसमुद्धृतिः विप्रस्यविष्णुदूताभ्यांसंवादोहरिसेन

वेनविशेषतः १४ मौनीप्रदक्षिणान्मर्त्यःप्रागुक्तफलभाग्भवेत् विष्णोर्नामसहस्रेणाच्युतस्यपरिकीर्तनात् १५ अश्वत्थःस्थापितोयेनमूले
स्नपनमाचरेत् धनायुःसंततेर्वृद्धिर्नरकात्तारयेत्पितॄन् १६ अश्वत्थमूलमाश्रित्यजपहोमसुरार्चनात् अक्षयंफलमाप्नोतिब्रह्मणोवचनंयथा १७ अ
श्वत्थःछेदितोयेनछेदिताःसर्वदेवताः अतःसुधीभिःसंरोप्योऽश्वत्थोदेवमयःस्वभूः १८ अश्वत्थमूलमाश्रित्यशाकेनान्नोदकेनवा एकस्मिन्भोजि
तेविप्रेकोटिभुक्तिफलंभवेत् १९ सेव्यःसेव्यःपूजनीयस्त्रृणत्रयविनाशकः भौमार्कवासरेचैवमध्यान्हेनिशिसंध्ययोः २० नाश्वत्थस्पर्शनंकार्यंकु
लक्षयभयान्नृभिः शौनकउवाच अस्पृश्यत्वमयोजातःकथंवोधिद्रुमोमुने २१ अस्पृश्यत्वंकथंजातःपरंकौतूहलंहिमे नारदउवाच समुद्रमथ
नाद्यानि रत्नान्यासन्सुरोत्तमाः २२ श्रियंचकौस्तुभंतेषांविष्णवेप्रददुःसुराः यावद्दंगीचकारासौलक्ष्मींभार्यार्थमात्मनः २३ तावद्विज्ञापयामासलक्ष्मी
स्तंचक्रपाणिनं लक्ष्मीरुवाच असंस्कृतांकथंज्येष्ठांकनिष्ठापरिणीयते २४ तस्मान्ममाग्रजाह्येषाअलक्ष्मीर्मधुसूदन विवाहनीयासंस्कृत्य
विवाहयचमांप्रभो २५ नारदउवाच ततस्तद्वचनंश्रुत्वासविष्णुर्लोकभावनः उद्दालकायमुनयेसुदीर्घतपसेतदा २६ आत्मवाक्यानुरोधेनतासलक्ष्मी
र्ददौकिल स्थूलास्यांशुभ्रदशनांजरतींविधवांतनुं २७ विततांरक्तनयनांरूक्षपिंगशिरोरुहां समुनिर्विष्णुवाक्यात्तामंगीकृत्यस्वमाश्रमं वेदध्व
निसमायुक्तमानयामासधर्मवित् होमधूमसुगंधाढ्यंवेदघोषनिनादितं २९ आश्रमंतंसमालोक्यव्यथितासाब्रवीदिदं ज्येष्ठोवाच ननिवासोनु
रूपोयंवेदध्वनियुतोमम ३० नात्रागमिष्येभोब्रह्मन्नयस्वान्यत्रमांध्रुवं उद्दालकउवाच कथंनयसिकिंचात्रवर्ततेऽद्भुतमंतंतव ३१ नवयोग्यंचव
सतिःकाभवेत्तद्वदस्वमां ज्येष्ठोवाच वेदध्वनिर्भवेद्यस्मिन्नतिथीनांचपूजनं ३२ यज्ञदानादिकंचापिनैवतत्रवसाम्यहं उत्तमोनीतिकुशलोधर्म
युक्तःप्रियंवदः ३३ गुरुदेवार्चनंयत्रतत्रनैववसाम्यहं रात्रौरात्रौगृहेयस्मिन्दंपत्योःकलहोभवेत् ३४ निराशायांत्यतिथयस्तस्मिन्स्थानेरति

णं धुवं शौनक उवाच कथं वृक्षत्वमापन्ना ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः २१ एतत्कथय धर्मज्ञ संशयोत्र महान्मम नारद उवाच पार्वतीशिवयोर्देवैः सुरतं
कुर्वतोः किल २२ अग्निर्ब्राह्मणवेषेण प्रेष्य विघ्नः कृतः पुरा ततः सा पार्वती क्रुद्धा शशाप त्रिदिवौकसः २३ सुरतस्य सुखभ्रंशात्कंपमाना तदारुणा
पार्वत्युवाच कृमिकीटादयो ह्येते जानंति सुरते सुखं २४ तस्मात्मम सुखभ्रंशात्सर्वे वृक्षत्वमाप्स्यथ इति वृक्षत्वमापन्ना ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः २५
तस्मादिमौ विष्णुमहेश्वरावुभौ बभूवतुर्बोधिवटौ मुनीश्वराः गयापुरे बोध्यभिधश्च पिप्पलो ह्यक्षय्यनामा ह्यभवद्वटस्तदा २६ इतिश्रीपद्मपु
राणे कार्तिकमाहात्म्ये पंचविंशोऽध्यायः २५ नारद उवाच अश्वत्थो देवदेवस्य शुद्धसत्वात्मकं वपुः प्रदक्षिणकृतं नित्यं नराणां सर्वकाम
दं १ अश्वत्थदक्षिणे रुद्रः पश्चिमे विष्णुसंस्थितः ब्रह्मा चोत्तरतस्तस्य पूर्वे त्विंद्रादिदेवताः २ स्कंधोपस्कंधपत्रेषु विप्राः सऋषयस्तथा
मूलांकुरपदे तं स्थवेदा यज्ञाः समावृताः ३ नदीनदाः सागराद्याः पूर्वादिक्रमसंस्थिताः लोके धर्मसमाश्रित्य ह्यश्वत्थं सेवये द्बुधः ४ त्वं क्षीरोफ
लितश्चैव शीतलश्च वनस्पते त्वमाराध्य ततो विंद्यादैहिकामुष्मिकं फलं ५ अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकालं अतः
शुचिस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि चारिष्टनिवारकोऽसि ६ मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे अग्रतः शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः ७ यं दृष्ट्वा मु
च्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते यमाश्रित्य चिरंजीवी तमश्वत्थं नमाम्यहं ८ अश्वत्थ सुमहाभाग सुभग प्रियदर्शन इष्टान्भोगान्देहि मे शत्रूणां च पराभवं
९ आयुः प्रजा धनं धान्यं सौभाग्यं सर्वदा सुखं देहि देव महावृक्ष त्वामहं नाम अभिवादये १० अस्मिन्स्थितं भुजस्यैरं दुःस्वप्नं दुर्विचिंतनं शत्रूणां
च समुत्थानमश्वत्थ शमय स्वमे ११ ब्रह्महा गुरुहा चैव दरिद्रो व्याधिपीडितः आवर्त्य ह्यादशालं संशुद्धः पापात्तिगो भवेत् १२ ब्रह्मचारी ह
विष्याशी चाधः शायी जितेंद्रियः पापोपहत मर्त्यस्तु व्रतमेतत्समाचरेत् १३ एकहस्तं द्विहस्तं वा कुर्याद्गोमयलेपनं अर्चेत्पुरुषसूक्तेन प्रण
तलहो वप्रसंगम

नै. तिं. र्व.

॥२५॥ नारदउवाच एवंप्रभावःप्रोक्तोयंकार्त्तिकःपापनाशनः विष्णुप्रियकरोऽत्यंतंभुक्तिमुक्तिफलप्रदः १ हरिजागरणंप्रातःस्नानंतुलसिसे
वनं उद्यापनंदीपदानंव्रतान्येतानिकार्त्तिके २ पंचभिर्व्रतकैरेभिःसंपूर्णःकार्त्तिकव्रती संपूर्णफलमाप्नोतिभुक्तिमुक्तिफलप्रदं ३ शौनकउ
वाचविष्णुप्रियोऽतिफलदःप्रोक्तोयंभवताकिल कार्त्तिकस्यविधिः सम्यक्सेतिहासोरुचिप्रदः ४ अवश्यमेवकर्तव्यं पापदुःखविनाशकृत्
मोक्षार्थिभिर्नरैःसम्यक्भोगकामैरथापिवा ५ एवंस्थितेयदाकश्चिद्व्रतस्थःसंकटेस्थितः दुर्गारण्यस्थितोवापिव्याधिभिःपरिपीडितः कथंते
नप्रकर्तव्यंकार्त्तिकव्रतकंशुभं यस्मादत्यंतफलदंनत्याज्यंसर्वदानरैः ७ नारदउवाच एवमापद्गतोयश्चनरोनित्यंदृढव्रतःकार्त्तिकव्रतकर्त्तानक
र्तव्यंतुयथाभवेत् ८ तत्सर्वंकथयिष्येहं शृणुध्वंमुनिसत्तमाः विष्णोःशिवस्यालयेवायदिचापद्गतोभवेत् ९ कुर्यात्तदश्वत्थधात्रीतुलसीनांत
लेष्वपि विष्णुनामप्रबंधानांगायनाद्विष्णुसन्निधौ १० गोसहस्रप्रदानस्यफलमाप्नोतिमानवः वाद्यकृत्पुरुषश्चापिवाजपेयफलंलभेत्
११ सर्वतीर्थावगाहेयन्नर्तकःफलमाप्नुयात् आपद्गतोयदात्यंभोनलभेच्छृणुयाच्चसः १२ व्याधितोहिनरःकुर्याद्विष्णोर्नोस्नानमज्ज
नं उद्यापनविधिंकर्तुमशक्तोयोव्रतेस्थितः १३ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्याव्रतसंपूर्णहेतवे अव्यक्तरूपिणोविष्णोःस्वरूपंब्राह्मणाभुवि॥
१४ तस्मात्तुष्याससंतुष्टःसर्वदैवनसंशयः अशक्तोदीपदानेचपरदीपंप्रबोधयेत् १५ तेषांचरक्षणंकुर्याद्वातादिभ्यःप्रयत्नतः अभावेतु
लसीनांचपूजयेद्वैष्णवंद्विजं १६ यस्मात्सन्निहितोविष्णुःस्वभक्तेष्वेवसर्वदा सर्वाभावेव्रतीकुर्याद्ब्राह्मणानांगवामपि १७ सेवामश्वत्थवटयोर्व्रतसंपू
र्णहेतवे ऋषयऊचुः कथंत्वयाश्वत्थवटौगोब्राह्मणसमौकृतौ १८ सर्वेभ्यश्चतरुभ्यश्चकस्मात्पूज्यतमौकृतौ नारदउवाच अश्वत्थरूपीभगवा
नविष्णुरेवनसंशयः १९ रुद्ररूपीवटस्तद्वत्पलाशोब्रह्मरूपधृक् दर्शनस्पर्शनंसेवानेषांपापहरंस्मृतं २० दुःखापद्व्याधिदुष्टानांविनाशेकार

का. २५

मा. ५१

लापश्यद्विमानंयांतंमंबरात् ५३ शंखचक्रगदापद्महस्तैरासीनमंबरात् विष्णुरूपधरैःसम्यक्वैनतेयध्वजांकितं ४५ आरोहयद्विमानं
तमप्सरोगणसेवितं चामरैर्वीज्यमानांतांवैकुंठमनयन्गणाः ५५ अथसापिविमानस्थाज्वलदग्निशिखोपमा कार्तिकव्रतपुण्येनमत्सान्निध्य
गताभवत् ५६ अथभूमिरियंभूरिभाराक्रांतायदाभवत् तदाब्रह्मादिदेवानामग्रेदुःखंन्यवेदयत् ५७ गौर्भूत्वाश्रुमुखीदीनाक्लेशाति
भयविह्वला ततोब्रह्मादयोदेवाःप्रार्थयामासुराशुभा ५८ मयाप्युक्तंस्वरूपेणावतरिष्यामिभूतले भूमेर्भारमहंशीघ्रमपनेष्याम्यसंशयं
५९ यूयंमनुष्यरूपेणप्रयांतुधरणीतले इत्थंब्रह्मादिदेवानांयथाप्रार्थनयाभवं ६० आगतोऽहंगणाःसर्वेजातास्तेऽपिमयासह एतेहियादवाः
सर्वेमद्गणाएवभामिनी ६१ पितातेदेवशर्माभूत्सत्राजिदभिधोह्ययं यश्चन्द्रशर्मासोऽक्रूरस्त्वंसागुणवतीशुभा ६२ कार्तिकव्रतपुण्येनवहुमत्प्रीति
वर्द्धिनी मद्द्वारियत्त्वयापूर्वंतुलशीवाटिकाकृता ६३ तस्मादयंकल्पवृक्षस्तवांगणगतःशुभे कार्तिकेदीपदानंचयत्त्वयाचकृतंपुरा ६४
त्वद्देहगेहसंस्थेयंतस्माल्लक्ष्मीःस्थिराभवत् यच्चव्रतादिकंसर्वंविष्णवेभर्तृरूपिणे ६५ निवेदितवतीतस्मान्ममभार्यात्वमागता आजन्मम
रणात्पूर्वंयत्कृतंकार्तिकव्रतं ६६ कदाचिदपितेनत्वंमद्वियोगंनयास्यसि एवंयेकार्तिकेमासिनराव्रतपरायणाः ६७ मत्सान्निध्यगता।
स्तेपिप्रीतिदास्त्वयथामम यज्ञदानव्रततपःकारिणोमानवाःखलु ६८ कार्तिकव्रतपुण्यस्यनाप्नुवंतिकलामपि ६९ नारदउवाच इत्थंनि
शम्यभुवनाधिपतेस्तदानींप्राग्जन्मपुण्यभववैभवजातहर्षा विष्णोश्चरंत्रिभुवनैकनिदानभूतंकृष्णंप्रणम्यवनितविस्मयमाजगाम ७० एवंयः
खलुकार्तिकव्रतमिदंकुर्यान्नरोवैसवंआयुःकीर्तिधनप्रदंशुभमतेरुत्पादकंपुत्रदं आरोग्यादिसुखप्रदंचसततंसर्वापदांनाशनंसोन्ते
कार्जितपातकोपिव्रतकृद्विष्णोःप्रियोमुक्तिभाक् ७१॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येकृष्णेनसत्यभामायाःपूर्वजन्मकथनंनामचतुर्दशोऽध्या

प्राप्नुवंतौ ह्यवर्षीयः सागरं यथा ३३ एकोहं पंचधा जातः क्रीडार्थं नामभिः खलु देवदत्तो यथा कश्चित्पुत्राद्याह्वाननामभिः ३४ ततश्चतौ भद्रव
नाधिवासिनौ विमानयानौ रविवर्च्चसावुभौ मत्तुल्यरूपौ मम सन्निधानगौ दिव्यांगनाचंदनभूषितांगकौ ३५ ततो गुणवती श्रुत्वा रक्षसा निह
तावुभौ पितृभर्तृजदुःखार्ता करुणं प्रत्यदेवयत् ३६ गुणवत्युवाच हा नाथ हा पितस्त्यक्त्वा गच्छतः क्व मया विना "बालाहं किं करोम्यद्य त्व
..थाभवतोर्विना ३७ को नु मामाश्रिता गेहे भोजनाच्छादनादिभिः अकिंचित्कुशलां स्नेहात्पालयत्यतिदुःखितां ३८ हतभाग्याहतसुखा हताशा
हतजीविता शरणं कं प्रजाम्यद्य यो मे दुःखं प्रमार्जयेत् ३९ क्वयास्यामि क्वतिष्ठामि किं करोम्यघृणेन तु विधात्राहाहतोस्म्यद्य कथं जीवामि वा
निशा ४० श्रीकृष्ण उवाच एवं बहु विलप्याथ कुररीव भृशातुरा पपात भूमौ विकलारंभा वातहता यथा ४१ चिरादाश्वस्य सा भूयो विलप्य
करुणं बहु निमग्ना दुःखजालाब्धौ शोकार्तासमवर्तन ४२ सा गृहोपस्करान्सर्वान्विक्रीय शुभकर्मकृत् तयोश्चक्रे यथाशक्ति पारलौकीं ततः
क्रियां ४३ तस्मिन्नेव पुरे वासं चक्रे प्रभृति जीविनी विष्णुभक्तिपरा शांता सत्यशौचादितत्परा ४४ व्रतद्वयं तथा सम्यगाजन्ममरणान्तकं एकाद
शीव्रतं सम्यक्सेवनं कार्तिकस्य च ४५ एतद्व्रतद्वयं कांते मामातीव प्रियंकरं भुक्तिमुक्तिकरं पुण्यं पुत्रसंपत्तिदायकं ४६ कार्तिके मासि ये नित्यं
तुलासंस्थे दिवाकरे प्रातःस्नास्यंति ते मुक्ता महापातकिनोऽपि च ४७ संमार्ज्जनं गृहे विष्णोः स्वस्तिकादिनिवेदनं विष्णोः पूजां च कुर्युर्ये जीव
न्मुक्तास्त्वेते नराः ४८ स्नानं जागरणं दीपं तुलशीवनपालनं कार्तिके ये प्रकुर्वंति ते नरा विष्णुमूर्तयः ४९ इत्थं दिनत्रयमपि कार्तिके ये प्रकुर्व
ते देवानामपि ते वंद्याः किं यैराजन्मतः कृतं ५० इत्थं गुणवती सम्यक्प्रत्यब्दं व्रतिनी ह्यभूत् नित्यं विष्णोः परिकरे भक्त्यातत्परमानसा ५१ क
दाचिज्जरसासा यक्ष्मशांगी ज्वरपीडिता स्नातुं गंगां गता कांते कथं चिच्छनकैस्तदा ५२ यावज्जलांतरगता कंपिता शीतपीडिता तावत्सा विद्ध

त्वां मधुसूदन यदि त्वं मत्प्रियकरः कथयस्वात्र विस्तरं १३ श्रुत्वा तच्च पुनस्त्वाहं करोमि हितमात्मनः यथा कल्पं त्वया देव वियुक्ता स्यां न।
कर्हिचित् १४ नारद उवाच इति प्रियावचः श्रुत्वा स्मेरास्यः सगदाग्रजः सत्याकरे करं कृत्वागमत्कल्पतरोः स्थलं १५ निषिध्या
नुचरं लोकं सविलासः प्रियान्वितः प्रहस्य सत्यामामंत्र्य प्रोवाच जगतां पतिः १६ तत्प्रीतिपरितोषार्थं लसत्पुलकितांगकः कृष्ण उवाच न।
मे त्वत्तः प्रियतमा काचिदिह विविनिश्चितं १७ षोडशस्त्रीसहस्राणां प्रिये प्राणसमा ह्यसि त्वदर्थे देवराजेन विरोधो देवतैः सह १८ त्व
याय त्प्रार्थितं कांते शृणु यच्च महद्भवेत् अदेयमथवा कार्यमकथ्यमपि यत्पुनः १९ यत्करोषि कथाप्रश्नं कथयामि तव प्रिये तत्त्व
द्वांछं सर्वं कथये यत्ते मनसि वर्तते २० भामा उवाच दानं व्रतं तपो वापि किं तु पूर्वं कृतं मया येनाहं मर्त्यजाऽमर्त्यभवांतिकभवं किल २१ नवांगार्द्धह
रा नित्यं गरुडोपरिगामिनी इंद्रादिदेवतावासगमनं च त्वया सह २२ अतस्त्वां प्रष्टुमिच्छामि किं कृतं हि मया शुभं भवांतरे च किंशीला का वाहं कस्य
कन्यका २३ श्रीकृष्ण उवाच शृणुष्वैकमनाः कांते यथा त्वं पूर्वजन्मनि पुण्यं व्रतं कृतवती तत्सर्वं कथयामि ते २४ आसीत्कृतयुगस्यांते मायापु
र्यां द्विजोत्तमः आत्रेयो देवशर्मेति वेदवेदांगपारगः २५ आतिथेयोग्निशुश्रूषी सौरव्रतपरायणः सूर्यमाराधयन्नित्यं साक्षात्सूर्य इवापरः।
२६ तस्यातिवयसश्चासीन्नाम्ना गुणवती सुता अपुत्रः स च शिष्याय चंद्रनाम्ने ददौ सुतां २७ तमेव पुत्रवन्मेने स च तं पितृवद्वशी तौ कदाचिद्वने।
यातौ कुशेध्माहरणार्थिनौ २८ हिमाद्रिपादजवने चेरतुस्तौ यतस्ततः तावतौ राक्षसं घोरमायांतं प्रदृश्य तु २९ भयविह्वलसर्वांगावसम।
र्थौ पलायितुं निहतौ रक्षसा तेन कृतांतसमरूपिणा ३० तौ तत्क्षेत्रप्रभावेन धर्मशीलतया पुनः वैकुंठभवनं नीतौ मद्गणौ मत्समीपगौ ३१ याव
ज्जीवं तु यताभ्यां सूर्यपूजादिकं कृतं तेनाहं कर्मणा ताभ्यां सुप्रीतो ह्यभवं किल ३२ शैवाः सौराश्च गाणेशा वैष्णवाः शक्तिपूजकाः ममैव।

ने २१ द्विजस्यचोलनृपतेरीर्ष्या द्वारःपुनस्ततः जयस्यविजयस्यास्यसालोक्यंभक्तितोहरेः २२ कृष्णावेण्योश्चमाहात्म्येब्रह्मणोयत्नुवर्णनं का
र्तिकोद्यापनविधिर्व्रतपूर्णांतयोत्तमं २३ अदानात्पुण्यकथनंधनेश्वरसमुद्धृतिः दर्शनं नरकानांचतथानरकवर्णनं २४ कृष्णेनसत्यभामायाः पू
र्वजन्मप्रकाशनं यथा चापन्नतःकुर्यादश्वत्थमहिमाततः २५ अलक्ष्म्याश्चसमुत्पत्तिस्तथोद्दालकसंगमः एतत्कार्तिकमाहात्म्यंसंक्षेपात्परि
कीर्तितं २६ ऋषयोनैमिषारण्येश्रुत्वानामसहस्रकं मुख्यंशिवरहस्यंचभूयोदेवर्षिमब्रुवन् २७ ऋषयऊचुः स्वायंभुवकृतार्थाःस्मत्वदनुग्रह
तोवयं बहुहस्यंहरेर्नाम्नांश्रुतंत्वन्मुखपंकजात् २८ इदानीमीदृशंधर्मंहरेरत्यंततोषणं व्रतंकिंचिद्वदास्मभ्यंदृष्टाभक्तिर्यथाहरौ २९ नार
दउवाच साधुसाधुद्विजश्रेष्ठाःपृष्टंयत्तत्सुविस्तरात् व्रतमेकंप्रवक्ष्यामियच्छ्रुतंब्रह्मणोमुखात् ३० एकदापर्य्यटंल्लोकान्ब्रह्मलोकंगतोस्म्य
हं तत्रब्रह्माणमासीनंसुखेनपरमासने ३१ वेदैर्मूर्तिधरैर्देवैर्मुनिभिश्चसुसेवितं राजर्षिभिश्चगंधर्वैरप्सरोभिर्महोरगैः ३२ विद्याधरै
स्तथासिद्धैरुपश्यमुपसेवितं दंडवत्प्रणिपत्याहमग्रतःप्रांजलिःस्थितः ३३ ततोमामब्रवीद्ब्रह्माभोवत्सागम्यतामिति ततोहमंतिकेतस्यो
पविष्टउच्चितासने ३४ अपृच्छमिदमेवार्थंभवद्भिर्यदुदीरितं तदामामब्रवीद्ब्रह्माशृणुध्वंद्विजसत्तमाः ३५ ब्रह्मोवाच शृणुष्वभोमुनिश्रेष्ठ
विष्णोस्तुष्टिकरंपरं व्रतंकार्तिकमासस्ययथानान्यत्तथापरं ३६ अनंतपुण्यजनकंमोक्षदंसुखवर्द्धनं नारदउवाच ततोब्रुवमहंविप्रामाहा
त्म्यंवदमेप्रभो ३७ विधानंकार्तिकस्यास्य यथावत्प्रणतस्यमे किंपुण्यंकिंफलंचास्यकःकुर्यात्कस्यपूजनं ३८ एवंपृष्टस्तदाविप्रास
यालोकपितामहः हरेराधनंमह्यंव्रतमाहमहर्षिराट् ३९ ब्रह्मोवाच साधुपृष्टंत्वयापुत्रलोकोद्धरणहेतवे कथयामिनसंदेहस्त्वत्समाना
त्वैष्णवः ४० वैष्णवेवैष्णवंधर्मंयोददातिद्विजोत्तमः ससागरमहीदानफलंसलभतेधिकं ४१ स्वर्णानिमेरुतुल्यानिसर्वदानानिचैकतः॥

का·मा·

२

एकतः कार्त्तिकोवत्ससर्वदाकेशवप्रियः ४२ कृत्वाकोटिसहस्राणिपापानिसुबहून्यपि निमिषार्द्धेनसर्वाणिविलयंयांतिकार्त्तिके ४३ यत्किंचि
त्कुरुतेपुण्यंविष्णुमुद्दिश्यकार्त्तिके तस्यक्षयंनपश्यामिमयोक्तंतवनारद ४४ अस्मिन्मासेत्रयस्त्रिंशद्देवाःसंनिहितामुने तत्रदानानिविप्राणांभोज
नानिव्रतानिच ४५ तिलधेनुहिरण्यान्नरजतंभूमिवाससी गोप्रदानंचकुर्वंतिसर्वभावेननारद ४६ संप्राप्तंकार्त्तिकंदृष्ट्वापरान्नंयस्तुवर्जयेत्
दिनेदिनेसकृच्छ्रस्यफलमाप्नोतितत्वतः ४७ वृषाणांमोक्षणंचैवकार्त्तिकेमासिशस्यते यद्रात्रौवादिवाज्ञानाद्दुष्कृतंयेनयत्कृतं ४८ तद्दिन
श्यतिक्षिप्रंचवायुनापांसवोयथा नकार्त्तिकसमोमासोनतीर्थंगंगयासमं ४९ नचान्नेनसमंदानंनसुखंभार्ययासमं कृषेस्तुनसमंवित्तं
लाभःसुरभीसमः ५० नतपोनशनैस्तुल्यंनशमात्परमंपदं नधर्मस्तुदयातुल्योनज्योतिश्चक्षुषासमं १ नतृप्तिरसनातुल्यानप्राप्तिस्तुश्रु
तंविना नधर्मसदृशंमित्रंनकर्मसदृशंयशः ५२ नारोग्यात्समसुत्थानंनदेवःकेशवात्परः कार्त्तिकःप्रवरोमासोशेषशायिप्रियःसदा ५३॥
अन्नतेनक्षिपेद्यस्तुमासंदामोदरप्रियं तिर्यग्योनिमवाप्नोतिसर्वधर्मबहिःकृतः ५४ पक्षद्वयंव्रतंवत्सअयनेदक्षिणोत्तरे दुर्लभंवैष्णवेदानं
माघस्नानंनदीजले ५५ समुद्रगानदीवत्सदुर्लभास्नानशालिनां ज्येष्ठाषाढेतुपानीयमिंधनंपौषमाघयोः ५६ ब्राह्मण्यंदुर्लभंविप्रदुर्लभं
तीर्थसेवनं न्यायेनोपार्जितंद्रव्यंदुर्लभंकलिवर्द्धनं ५७ दुर्लभंमर्त्यधर्माणांपारक्यप्रतिपादनं कार्त्तिकस्यतुमाहात्म्यंपुनरेवशृणुष्वमे ५८ यत्कृ
त्वासुनिशार्दूलसर्वान्कामानवाप्स्यसि अक्रूरस्यवरेतीर्थेकार्त्तिकांसमुपोषितः ५९ स्नात्वायत्फलमाप्नोतिश्रुत्वातद्देवसंव्रतं वाराणस्यां
कुरुक्षेत्रेनैमिषेपुष्करेर्बुदे ६० गत्वायत्फलमाप्नोतिकृत्वातत्कार्त्तिकेव्रतं विधिवद्योविशेषेणव्रतंचनहिकार्त्तिके ६१ करोतिमुनिशार्दूलनरकं
यातिदारुणं आश्विनस्यसितेपक्षेएकादश्यांद्विजोत्तम ६२ वैष्णवैःकल्पनापूर्वंप्रारंभोस्यविधीयते यावत्कार्त्तिकशुक्लस्यपौर्णमासीतिथिर्भ

जा·
१

एम·
२

वेत् ६३ तावद्दस्यव्रतस्योक्तं सम्यगाचरणं बुधैः अन्नदायि सदा विप्रा व्रतमेतत्तु दुर्लभम् ६४ त्रिंशद्दिनानि पुण्यानि विष्णोः प्रीतिकराणि च त
दर्द्धपंचमी संवा शश्वत्तुष्टिकरं परं ६५ नरो वाथ द्विवा नारी कुरुते वै स्म वं व्रतं दिने दिने यत्तु फलं भवेत्तस्यैव कार्त्तिके ६६ यत्किंचित्कार्त्तिके कर्म्म
शुभं वाप्यशुभं द्विज क्रियते तत्क्षयो नास्ति कल्पकोटिशतैरपि ६७ तस्मात्समाचरेन्नैव पापं नरकदुःखदं विशेषात्कार्त्तिके वत्स यदीच्छेच्छ्रेय आ
त्मनः ६८ अस्नाताशी मलं भुंक्ते अजपी पूयशोणितं अहुत्वा च क्रमीन्भुंक्ते अदत्वा विषमश्नुते ६९ स्ववर्णाश्रमधर्म्मं हि नाचरेद्यु विमानवः स
याति नरकं घोरमित्याह भगवान्हरिः ७० यो द्विजोन्यस्त्रियं गच्छेत्पापात्मा काममोहितः स याति नरकं घोरं यस्तथा शास्त्रदूषकः ७१ ब्रह्महा स्व
र्णहारी च सुरापो गुरुतल्पगः महापातकिनः सर्वे तत्संसर्गी च पंचमः ७२ परदारपरद्रव्यपरक्षेत्रेषु ये रताः तेषामायुर्यशो लक्ष्मीः संततीनां क्षयो भ
वेत् ७३ सम्यक्कृत्वाश्रोत्रियेभ्यो विधानं स्वस्य कर्मणः दुःकृतस्याचरेद्धीमान्प्रायश्चित्तं तु कार्त्तिके ७४ द्विजपुत्रमनाथं तु संस्करोति च कन्यकां वि
वाहयति यो विद्वान्स याति परमं पदं ७५ अन्नं हि प्राणिनां प्राणा यस्मात्सर्वत्र निश्चितं विशेषात्कार्त्तिके मासि अन्नदानं प्रशस्यते ७६ पुराणदानं श्र
वणमर्च्चनं विष्णु विप्रयोः मातापित्रोः स्तोषणं च विष्णुलोकप्रदं भवेत् ७७ यज्ञोपवीतं वस्त्रं च तांबूलं चंदनं तथा पादत्राणं तथा छत्रं दत्वा स्वर्गे मही
यते ७८ विष्णुपूजापरो यस्तु हविष्याशी च कार्त्तिके व्रतकृद्दानशीलश्च स याति परमां गतिं ७९ हेमंतिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्गास्तिला यवाः कलाप
कंगुनीवारा वास्तूकं हिलमोचिका ८० कंदं सैंधवसामुद्रे लवणो दधिसर्पिषी पयोनुद्धृतसारं च नागरंगकतिंतिली ८१ कदली लवली धात्री फ
लान्यगुडमैक्षवं अतैलपक्वं चनथाहविष्यान्नं प्रचक्षते ८२ एतत्कार्त्तिकमाहात्म्यं प्रातःकृत्यमतः शृणु ८३ ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्त्तिकमा
हात्म्ये प्रथमोऽध्यायः १ ब्रह्मोवाच अत्यंतमलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः स्रवत्येव दिवा रात्रौ प्रातःस्नानेन शुद्ध्यति १ तुलामकरमेषे

का·मा· २

प्रातःस्नानंहियश्चरेत् सप्तजन्मजपापेभ्यस्त्रिभिर्वर्षैर्विमुंचति २ रात्र्यांतुर्यांशशेषायामुत्तिष्ठेच्चसदाव्रती नैर्ऋत्यांशांव्रजेदाशुवहिःसोद
कभाजनः ३ दिवासंध्यासुकर्णस्थब्रह्मसूत्रउदङ्मुखः कुर्यान्मूत्रपुरीषेचरात्रौचेदक्षिणामुखः गंधक्षयकरंशौचंमृदाकुर्याद्दत्तंद्विजः शौचा
कर्म्मविहीनस्यसकलानिष्फलाःक्रियाः ५ हस्तयोःपादयोःशुद्धिंमृदाकुर्यात्ततःपरं मुखस्यशुचयेदंतकाष्ठंकुर्यात्प्रयत्नतः ६ समिधाक्षी
रवृक्षस्यस्याहोयोषणंविना प्रतिपत्पर्वषष्ठीषुनवम्येकादशीरवौ ७ चंद्रसूर्योपरागेचनकुर्याद्दंतधावनं अपांद्वादशगंडूषैस्ततः
शुद्धिर्विधीयते ८ कंटकीवृक्षवर्ज्यासनिर्गुंडीब्रह्मवृक्षकाः वटैरंडविगंधाद्यान्वर्ज्जयेद्दंतधावने ततोविष्णोःशिवस्याथगृहंगच्छेत्प्रस
न्नधीः गंधपुष्पसताम्बूलान्गृहीत्वाभक्तितत्परः १० देवंस्तुत्वापुनर्नत्वाकुर्याद्दीपादिमंगलं तालवेणुमृदंगादीन्ध्वनियुक्तान्सनर्तकान् ११स
त्पुराणकथांयत्रसद्भक्तानांचगायनं श्रुत्वायांतिनयेमूढाहरेर्हर्म्यंभवंतिते १२ शिरीषोन्मत्तगिरिजमल्लिकाशाल्मलीभवैः अर्कजैःकर्णिकारै
श्चविष्णुर्नार्च्यस्तथाक्षतैः १३ केतकीभवपुष्पैश्चनैवार्च्यःशंकरःसदा गणेशस्तुलसीपत्रैर्दुर्गानैवतुदूर्वया १४ मुनिपुष्पैस्तथासूर्य्यैलक्ष्मीका
मोनचार्च्चयेत् नाडीद्वयावशिष्टायांरात्र्यांगच्छेज्जलाशयं १५ मानुषेदेवखातेचनद्यामथचसंगमे क्रमाद्दशगुणंस्नानंतीर्थेनंतफलंस्मृतं १६
विष्णुंस्मृत्वाततःकुर्यात्संकल्पंस्नपनस्यतु तिलामलकचूर्णेनगृहीस्नानंसमाचरेत् १७ विधवास्त्रीयतीनांचतुलसीमूलमृत्तिका सप्तमीद
र्शषष्ठीषुद्वितीयानवमीतथा १८ त्रयोदश्यांतुनस्नायात्धात्रीफलयुतैःसदा कार्तिकेहंकरिष्यामिप्रातःस्नानंजनार्दन १९ प्रीत्यर्थंतवदेवे
शप्रसीदपुरुषोत्तम इतिप्रतिज्ञामाधायजपन्वैद्वादशाक्षरं २० तीर्थादिदेवतादिभ्यःक्रमादर्घ्यंनिदापयेत् यावंतःकार्तिकेमासिवर्त्ततेपितृन
र्पणे २१ तिलास्तत्संख्ययाब्दानिपितरःस्वर्गवासिनः ततोजलाद्विनिःक्रम्यशुचिवस्त्रावृतोव्रती २२ प्रातःकालोदितंकृत्वापूजयेन्मधुसूदनं

राम· ३

स्वचक्रगदाशार्ङ्गधरंपीतांबरंहरिम् ३२ अतसीपुष्पसंकाशंराधयासहमाधवं शंखेतोयंसमाधायसपुष्पफलचंदनं ३४ दद्यादर्घंविधानेन
सलक्ष्मीकस्यवैहरिः एकेनजातीपुष्पेणजागरेणरमापतिः ३५ तुलसीदलखंडेनकार्त्तिकेमोक्षदोभवेत् मालतीमुनिपुष्पंचकमलंतुलसीमुने ३६
दीयतेकार्त्तिकेविष्णोर्दीपदानमहर्निशम् कार्त्तिकेनार्चितोयेनकमलैःकमलेक्षणः ३७ जन्मकोटिसहस्रंतुनतेषांकमलागृहे पत्रंपुष्पंफ
लंतोयंतुलसीगंधवासितं ३८ फलंलक्षगुणंप्रोक्तंकेशवस्यनिवेदनम् शंखोदकंहरेर्भक्तिर्निर्माल्यंपादयोर्जलं ३९ चंदनंशेषधूपंचब्रह्म
हत्यापहारकं गंगास्नानंगयाश्राद्धंगीतागोविंदकीर्तनं ३ गोपीचंदनपुंड्रंचदुर्लभंप्राणिनांकलौ नारदउवाच भगवन्देवदेवेशसर्वधर्मा
श्रुतामया ३१ शालग्रामशिलायास्तुमाहात्म्यंब्रूहिमेप्रभो ब्रह्मोवाच श्रूयतांमुनिशार्दूलप्रश्नोत्तरमिदंशुभं ३१ ईश्वरोयत्पुरोवाचकार्त्ति
केयमुमासुतं तदहंकथयिष्यामिश्रूयतांहृदयप्रिय ३२ शालग्रामशिलायांतुत्रैलोक्यंसचराचरं मयासहतथादेवैर्विष्णुस्तिष्ठतिसर्वदा ॥
३३ दृष्ट्वानमस्कृतायेनस्नापितापूजितातथा यज्ञकोटिसमंपुण्यंशाश्वतस्यप्रयच्छति ३४ कामसक्तोपियोनित्यंभक्तिभावविवर्जितः शा
लग्रामशिलाविप्रहत्याकोटिविनाशिनी ३५ स्मृतासंकीर्तिताध्यातापूजिताचनमस्कृता शालग्रामशिलांदृष्ट्वायांतिपापानिदेहिनः ३६
शालग्रामशिलाग्रेयैःसकृच्छ्राद्धंकृतंमुने वसंतिपितरस्तेषांविष्णुलोकेनसंशयः ३७ येपिबंतिनरानित्यंशालग्रामशिलाजलं पंचग
व्यसहस्रैस्तुप्राशितैःकिंप्रयोजनं ३८ प्रायश्चित्तेसमुत्पन्नेकिंदानैःकिमुपोषणैः चांद्रायणैःकिंतीर्थैश्चपीत्वापादोदकंशुचिः ३९ योददाति
शिलांविष्णोःशालग्रामशिलोद्भवां विप्रायविष्णुभक्तायतेनेष्टंक्रतुभिःशतैः ४० विधिहीनश्चयःकश्चित्क्रीडार्थंप्रकरोतिवै चक्रांकपूजांमा
मोतिसम्यक् शास्त्रोक्तिकंफलं ४१ गंडकीसरितांपुण्याचक्रतीर्थंचतत्रच शालग्रामाभिधंक्षेत्रंतत्रतेषांसमुद्भवः ४२ तस्यांहिरंदाशापे

शा०मा०
४

नमाधवो भक्तवत्सलः शालग्रामशिलाभावं प्राप्तश्चित्सुखविग्रहः ४३ तुलसीचाभवद्वृंदा शालग्रामेतियाप्रिया शौनकउवाच गंगायाः स।
रितोह्यन्यास्त्यक्त्वासौ सर्वगो हरिः ४४ गंडक्यामेव संभूतस्तत्रकारणमुच्यतां नारदउवाच आसीदतीतकल्पेवैमुनिर्वेदशिरामहान् ४५
गंगातीरेतपस्तीव्रं कुर्वन्भूतसुखावहः तदाश्रमं महत्पुण्यं रम्यंनानाद्रुमाकुलं ४६ तस्मात्तुभीतचित्तेन महेंद्रेणमुनीश्वर प्रेषितामंजुवाक्का
चिद्देवकन्यामनोरमा ४७ सातत्रकांत्यावनउच्चसंती निसर्गसौगंध्यजितप्रसूना कोमलत्वतुच्छीकृतपल्लवाग्रा चिक्रीडबालाकरकंदुकेन
४८ सवेदमूर्द्धास्ततपोनिरायं दृष्ट्वाऽबलानेत्रकटाक्षदृष्टिं गंतुंततोन्यत्रचकांक्षमाणः प्रीत्यामुनेपादयुगंदधौमिषात् ४९ तस्य शरीरमा।
चितदेहमेनं दृष्ट्वात्ववश्यं निजबाहुपाशैः तत्कंठपाशेविशतस्तदासौ बुबोधनात्मानमिमांतुमायां ५० अथावबुध्यचात्मानं शशापैनांमहा
तपाः वेदशिराउवाच त्वदंगशीतलतरं तरलंचभुजद्वयं ५१ शृंगारह्रदिनीभूत्वा विक्षिपंतीममोपरि कामकुंडेमज्जयंतीस्मकामाभवांबु
धौ ५२ यन्नदीवसमाकृष्य तन्नदीभवभामिनि एवंशप्तातुसादेवी मंजुवाक्खिन्नमानसा ५३ प्रत्युवाचमुनिंदीनाप्रसादयनतापरेपराधी
नास्मिनोब्रह्मन्प्रीतिचेष्टांप्रकुर्वती ५४ विनयावनताचापिनशापार्हाप्रसीदमे ततोवाचमुनिःशांतोनदीभूत्वाजनार्दनं ५५ स्वोदरेधास्य।
तीमंकृतकृत्यंजनंकुरु शालग्रामशिलारूपीत्वयिजातोजनार्दनः ५६ त्वद्यशोविस्तरंलोकेसुदादातानृणामिह तदेवकृत्यंसुभ्रुभोयेनवि।
ष्णोश्चसंगमः ५७ शापोपितेऽयंवरतोमयादत्तोधिकोमतः नारदउवाच सैवैषामंजुवाग्देवीगंडकीसरितांवरा ५८ यस्यांविष्णुःशिलारूपीहरी
शापादभूदह शैलीदारुमयीलौहीलेप्यालेख्याचसैकती ५९ मनोमयीमणिमयीप्रतिमाष्टविधास्मृता शालग्रामशिलायांतुसाक्षाद्विष्णो
स्तुपूजनं ६० नित्यंसन्निहितस्तत्रशालग्रामेजगत्प्रभुः नारदउवाच एवंमयापुरापृष्टोब्रह्मालोकपितामहः ६१ हरेराराधनंमह्यमेव।

राम०
४

प्राहप्रहर्षितः शौनकउवाच कस्मिन्भवेभवद्बृंदातुलसीभवतोच्यते ६२ कथंवासाद्धरेःशापंब्रूहिकौतूहलंहिमे नारदउवाच शृणुब्रह्मन्नव-
हितःकथयामिसुविस्तरं ६३ पुराशक्रःशिवंद्रष्टुमगात्कैलासपर्वतं सर्वदेवैःपरिवृतश्चाप्सरोगणसेवितः ६४ यावद्गतःशिवपुरंतावत्त-
त्रसुदृष्टवान् पुरुषंभीमकर्माणंदंष्ट्रानयनभीषणं ६५ सपृष्टस्तेनकस्त्वंभोक्कगतोजगदीश्वरः एवंपुनःपुनःपृष्टःसयदानोचिवान्मुने
६६ ततःक्रुद्धोवज्रपाणिर्वज्रेणाभ्यहनद्दृढं तेनास्यकंठेनीलत्वमगाद्वज्रंचभस्मतां ६७ ततोरुद्रःप्रजज्वालतेजसाप्रदहन्निव दृष्ट्वाबृहस्प-
तिस्तूर्णंकृतांजलिपुटोभवत् ६८ दंडवद्भूमौकृत्वास्तोत्रंप्रचक्रमे गुरुरुवाच नमोदेवाधिदेवायत्र्यंबकायकपर्दिने ६९ त्रिपुरघ्नायश-
र्वायनमोंधकनिषूदने विरूपायातिरूपायबहुरूपायशंभवे ७० यज्ञविध्वंसकर्त्रेचयज्ञानांफलदायिने कालान्तकायकालायकालभो-
गिधरायच ७१ नमोब्रह्मशिरोहंत्रेब्रह्मण्यायनमोनमः नारदउवाच स्तुतःशंभुर्बृहतरंधिषणेनजगादह ७२ संहरन्नयनज्वालांत्रि-
लोकीदहनक्षमां वरंवरयभोब्रह्मन्प्रीतःस्तुत्यानयातव ७३ इंद्रस्यजीवदानेनजीवेतित्वंप्रथांब्रज गुरुरुवाच यदितुष्टोसिदेवत्वंपाहीं-
द्रंशरणागतं ७४ अग्निरेषशमंयातुभालनेत्रसमुद्भवः ईश्वरउवाच पुनःप्रवेशमायातिभालनेत्रेकथंशिखी ७५ एनंन्यक्ष्याम्यहंदूरेयथेंद्रं
नैवपीडयेत् नारदउवाच इत्युक्त्वातंकरेधृत्वाप्राक्षिपल्लवणांभसि ७६ सोपितत्सिंधुसंज्ञायाःसागरस्यचसंगमे तावत्सबालरूपत्वमगा-
त्तत्ररुरोदच ७७ रुदतस्तस्यशब्देनप्राकंपद्धरणीमुहुः स्वर्गश्चसत्यलोकश्चतत्स्वनाद्बधिरीकृतः ७८ श्रुत्वाब्रह्माययौतत्रकिमेतदितिविस्मितः
तावत्समुद्रोत्संगेतंब्रह्मातत्रददर्शह ७९ दृष्ट्वाब्रह्माणमायांतंसमुद्रोपिकृतांजलिः प्रणम्यशिरसाबालंतस्योत्संगेन्यवेशयेत् ८० ततोब्रह्माब्र-
वीद्वाकंकस्यायंशिशुरद्भुतः निशम्यचततोधातुर्वाक्यंसागरोब्रवीत् ८१ समुद्रउवाच भोब्रह्मन्सिंधुसंज्ञायांजातोयंममपुत्रकः जातक

मोदिमंस्कारान्कुरुष्वास्यजगद्गुरो ८२ नारदउवाच एवंवदतिपाथोधौसबालोसागरात्मजः ब्रह्माणमग्रहीत्कूर्चेविधुन्वंतंमुहुर्मुहुः ८३ धुन्व-
तस्तस्यकूर्चात्तुनेत्राभ्यामगमज्जलं कथंचिन्मुक्तकूर्चस्तुब्रह्माप्रोवाचसागरं ८४ ब्रह्मोवाच नेत्राभ्यांविधृतंयस्मादनेनैवजलंमम त-
स्माज्जलंधर इतिख्यातोनाम्नाभवत्वसौ ८५ अधुनैवैषतरुणः सर्वशास्त्रार्थपारगः अवध्यः सर्वभूतानांविनारुद्रंभविष्यति ८६ यत्रए-
षसमुद्भूतस्तत्रैवानींगमिष्यति नारदउवाच इत्युक्त्वाशुक्रमाहूयराज्येतंचाभ्यषेचयत् ८७ आमंत्र्यसरितांनाथंब्रह्मांतर्द्धानमन्वगात् ॥
अथतद्दर्शनोत्फुल्लनयनः सागरस्तथा ८८ कालनेमिसुतांवृंदांतज्जायार्थमयाचत ८९ तेकालनेमिप्रमुखास्ततो सुरास्तेसुतांप्र-
हृष्टः महर्षिताः सचापितांप्राप्यसुहृद्दारान्वशी शशासगांशुक्रसहायवान्बली ९०॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येद्वितीयोऽध्या-
यः २ नारदउवाच येदेवैर्निर्जिताः पूर्वंदैत्याः पातालसंस्थिताः तेहिभूमंडलंयाताः निर्भयास्तमुपागताः १ कदाचिच्छिन्नशिरसंदृ-
ष्ट्वाराहुंसदैत्यराट् पप्रच्छभार्गवंब्रह्मन्केनेदंविहितंप्रभो २ भार्गवस्तस्यशिरसश्छेदंराहोः शशंसह अमृतार्थंसमुद्रस्यमथनंदेवका-
रितं ३ रत्नापहरणंचैवदैत्यानांचपराभवं सश्रुत्वाक्रोधरक्ताक्षः स्वपितुर्मथनंतदा ४ दूतंसंप्रेषयामासघस्मरंशक्रसन्निधौ दूतस्त्रि-
विष्टपंगत्वासुधर्मांप्राप्यसत्वरं ५ गर्वादखर्वमौलिश्चदेवेंद्रंवाक्यमब्रवीत् घस्मरउवाच जलंधरोब्धितनयः सर्वदैत्यजनेश्वरः ६ दूतोहं
प्रेषितस्तेनसयदाहशृणुष्वतत् कस्मात्त्वयाममपितामथितः सागरोद्रिणा ७ नीतानिसर्वरत्नानितानिसर्वंप्रयच्छनः इतिदूतवचःश्रुत्वाविस्म-
यितः स्त्रिदशाधिपः ८ उवाचघस्मरंक्षुद्रंभयरोषसमन्वितः इंद्रउवाच शृणुदूतमयापूर्वंमथितः सागरोयथा ९ मद्द्विषोमद्भयात्त्रस्ता-
स्वकुक्षिस्थास्ततः कृताः अन्येपिमद्द्विषस्तेनरक्षितादितिजास्तथा १० तस्मात्तद्रत्नजातंतुमयाप्यपहृतंकिल शंखोप्येवंपुरादेवान-

द्विष्टत्सागरात्मजः ११ ममानुजेननिहतःप्रविष्टःसागरोदरं तद्गच्छकथयस्वाम्यंसर्वंमथनकारणं १२ नारदउवाच इत्थंविसर्जितो
दूतस्तेनेंद्रेणागमद्ध्रुवं तदिदंवचनंसर्वंदैत्यायाकथयत्तदा १३ तंनिशम्यतदादैत्योरोषात्प्रस्फुरिताधरः उद्योगमकरोत्तूर्णं सर्वदेवजिगीष
या १४ तदोद्योगेसुरेंद्रस्यदिग्भ्यःपातालतस्तथा दितिजाःप्रत्यपद्यंतकोटिशःकोटिशस्तदा १५ अथशुंभनिशुंभाद्यैर्दैत्याधिपतिकोटि
भिः गत्वात्रिविष्टपंदैत्योनंदनाधिष्ठितोभवत् १६ निर्ययुस्तममरावत्यादेवायुद्धायदंशिताःपुरमावृत्यतिष्ठंतंदृष्ट्वादैत्यबलंमहत् १७
ततःसमभवद्युद्धंदेवदानवसेनयोः मुसलैःपरिघैर्बाणैर्गदापरशुशक्तिभिः १८ तेऽन्योन्यंसमधावंतयुयुधुश्चपरस्परम् क्षणेनाभवत्ता
सैनेरुधिरौघपरिप्लुते १९ पातितैःपात्यमानैश्चगजाश्वरथपत्तिभिः व्यराजत्तरणेभूमिःसंध्याभ्रपटलैरिव २० तत्रयुद्धेमृतान्दैत्यान्भा
र्गवस्तूदतिष्ठत विद्ययामृतजीविन्यामंत्रितैस्तोयबिंदुभिः २१ देवानपितथायुद्धेतत्राजीवयदंगिराः दिव्यौषधीःसमानीयद्रोणाद्रेःसपु
नःपुनः २२ दृष्ट्वादेवान्हतान्युद्धेपुनरेवसमुत्थितान् जलंधरःक्रोधवशोभार्गवंवाक्यमब्रवीत् २३ जलंधरउवाच मयादेवाहतायुद्धे
उत्तिष्ठंतिकथंपुनः तवसंजीवनीविद्यानैवान्यत्रेतिविश्रुतम् २४ शुक्रउवाच दिव्यौषधीःसमानीयद्रोणाद्रेरंगिराःसुरान् जीवयत्येष
वैशीघ्रंद्रोणाद्रिंत्वमुपाहर २५ नारदउवाच इत्युक्तःसतुदैत्येंद्रोनीत्वाद्रोणाचलंतदा प्राक्षिपत्सागरेतूर्णंपुनरागान्महाहवम् २६ अ
थदेवान्हतान्दृष्ट्वाद्रोणाद्रिसमगमद्गुरुः तावत्तत्रगिरींद्रंतंनददर्शसुरार्चितः २७ ज्ञात्वादैत्येहृतंद्रोणंधिषणोभयविह्वलः आगत्य
दूराद्व्याजहृभ्यासाकुलितविग्रहः २८ पलायध्वंततोदैत्योनायंजेतुंयतःक्षमः रुद्रांशसंभवोह्येषस्मरध्वंशक्रचेष्टितं २९ श्रुत्वातद्वचनंदे
वाभयविह्वलितास्तथा दैत्येनवध्यमानास्तेपलायंतदिशोदश ३० देवान्विद्रावितान्दृष्ट्वादैत्योसागरनंदनः शंखभेरीजयरवैःप्रवि

वेशामरावतीम् ३१ प्रविष्टे नगरीं दैत्ये देवाः शक्रपुरोगमाः सुवर्णाद्रिगुहां प्राप्तान्यवसन्दैत्यपीडिताः ततस्तु सर्वेष्वसुराधिकारेष्विंद्रादि
कानां तन्निवेशयन्तदा शुंभादिकान्दैत्यवरान् पृथक्पृथक् स्वयंसुवर्णाद्रिगुहामगात्पुनः ३३ नारदउवाच पुनर्दैत्यं सभायां तं दृष्ट्वा देवाः
सवासवाः भयप्रकंपिताः सर्वे विष्णुं स्तोतुं प्रचक्रमुः ३४ देवा ऊचुः नमो मत्स्यकूर्मादिनानास्वरूपैः सदा भक्तकार्योद्यतायार्तिहंत्रे विधा
त्रादिसर्गस्थितिध्वंसकर्त्रे गदाशंखपद्मारिहस्ताय तेस्तु ३५ रमावल्लभायासुराणां निहंत्रे भुजंगारियानाय पीतांबराय मखादिक्रिया
णां च कर्त्रे विकर्त्रे शरण्याय तस्मै नतास्मो नतास्मः ३६ नमो दैत्यसंतापितामर्त्यदुःखाचलध्वंसदंभोलये विष्णवेति भुजंगेशतल्पासनाथा
र्कचंद्रद्विनेत्राय तस्मै नतास्मो नतास्मः ३७ नारदउवाच इति देवाः स्तुतिं यावत्कुर्वंति दनुजद्विषः तावत्सुराणामापत्तिर्विज्ञाता विष्णुना
तदा ३८ सहसोत्थाय दैत्यारिः कृपया खिन्नमानसः आरुह्य गरुडं वेगाल्लक्ष्मीं वचनमब्रवीत् ३९ विष्णुरुवाच जलंधरेण ते भ्रात्रा देवा
नां कदनं कृतं तेनाहूतो गमिष्यामि युद्धायातित्वरान्वितः ४० श्रीरुवाच अहं ते वल्लभा नाथ भक्ता च यदि सर्वदा तत्कथं ते मम भ्राता युद्धे
वध्यः कृपानिधे ४१ श्रीभगवानुवाच रुद्रांशसंभवत्वाच्च ब्रह्मणो वचनादपि प्रीत्या च तव नैवायं मम वध्यो जलंधरः ४२ इत्युक्त्वा गरु
डारूढः शंखचक्रगदासिभृत् विष्णुर्वेगाद्ययौ योद्धुं यत्र देवास्तुवंति ते ४३ अथारुणानुजात्युग्रपक्षवातप्रपीडिताः वात्याविवर्तिता दै
त्या बभ्रमुः खे यथा घनाः ४४ ततो जलंधरो दृष्ट्वा दैत्यान्वात्याप्रपीडितान् उद्वृत्य नयने क्रोधात्ततो विष्णुं समभ्यगात् ४५ ततः समभवद्यु
द्धं विष्णुदैत्येंद्रयोर्महत् आकाशं कुर्वतो बाणैस्तदा निरवकाशतां ४६ विष्णुर्दैत्यस्य बाणौघैर्ध्वजं छत्रं धनुर्हयान् चिच्छेद तं च हृदये बाणेनैकेन
ताडयत् ४७ ततो दैत्यः समुत्पत्य गदापाणिस्त्वरान्वितः आहत्य गरुडं मूर्ध्नि पातयामास भूतले ४८ विष्णुर्गदां स खड्गेन चिच्छेद प्रहसन्निव ताव

॥

स हृदये विष्णुं जघान दृढमुष्टिना ४९ ततस्तौ बाहुयुद्धेन युयुधाते महाबलौ बाहुभिर्मुष्टिभिश्चैव जानुभिर्नादयन्महीं ५० एवं स सुचिरं वि॥
ष्णुः कृत्वा युद्धं प्रतापवान् उवाच दैत्यराजं तं मेघगंभीरया गिरा ५१ विष्णुरुवाच वरं वरय दैत्येंद्र प्रीतोऽस्मि तव विक्रमात् अदेयमपि ते दा॥
स्यामि यत्ते मनसि वर्त्तते ५२ जलंधर उवाच यदि भावुक तुष्टोऽसि वरमेनं ददस्व मे मद्भगिन्या सह त्वं तु मद्गेहे सगणो वस ५३ नारद उवाच तथेत्यु॥
क्त्वा स भगवान्सर्वदेवगणैः सह जालंधरं नाम पुरमगमद्रमया सह ५४ जलंधरस्तु देवानामधिकारेषु दानवान् स्थापयित्वा सहर्षः सन्सु॥
रनागान्महीतलं ५५ देवगंधर्वसिद्धेषु यत्किंचिद्रत्नसंचितं तदात्मवशगं कृत्वा तिष्ठन्सागरनंदनः ५६ पाताल भुवने दैत्यं निशुंभं स महा
बली स्थापयित्वा स शेषादीनानयद्भूतलं बली ५७ देवगंधर्वसिद्धौघान्सर्वरक्षःसमानुषान् स्वपुरे नागरान्कृत्वा शशास भुवनत्रयं ५८ एवं जलं
धरः कृत्वा देवान्स्ववशवर्तिनः धर्मेण पालयामास प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ५९ न कश्चिद्व्याधितो नैव दुःखितो न कृशस्तथा न दीनो दृश्यते तस्मि॥
न्धर्माद्राज्यं प्रशासति ६० एवं महीं प्रशासति दानवेंद्रे धर्मेण सम्यक्कुयदृच्छयाहं कदाचिदागारमथ तस्य लक्ष्मीं विलोकितुं श्रीरमणं च सेवि
तुं ६१ संपूज्य तत्र विधिवद्दानवेंद्रोऽतिभक्तितः मां प्रहस्य तदा वाक्यं जगाद स मुनिसत्तमः ६२ कुत आगमनं ब्रह्मन्किंचिद्दृष्टं त्वया क्वचित्॥
यदर्थमिह चायातस्तदाज्ञापय मां मुने ६३ नारद उवाच गतः कैलास शिखरं दैत्येंद्राहं यदृच्छया तत्रोमया सहासीनं दृष्टवानस्मि शंकरं॥
६४ योजनायुत विस्तीर्णे कल्पद्रुम महावने कामधेनुशताकीर्णे चिंतामणिसुदीपिते ६५ तं दृष्ट्वा महदाश्चर्य्यं वितर्को मेऽभवत्तदा क्वापीदृ
शी भवेदृद्धिस्त्रैलोक्ये वा न वेत्ति च ६६ तावत्तवापि दैत्येंद्र समृद्धिः संस्मृता मया तद्विलोकनकामोऽहं त्वत्सान्निध्यमिहागतः ६७ त्वत्समृद्धिमि
मां पश्यन् स्त्रीरत्नरहितां ध्रुवं तर्कयामि शिवादन्यस्त्रिलोकां न समृद्धिमान् ६८ यस्या लावण्यजलधौ निमग्नश्चतुराननः स्वधैर्यमु॥

मुचेपूर्वंतयाकोन्योपमीयते ६९ वीतरागोपिहियस्यामदनारिःस्वलीलयाशिवः स्वच्छंदतंत्रोपितयात्मवशगःकृतः ७० अप्सरोगणकन्या
श्चायद्यपित्वद्गृहेस्थिताः तथापितानपार्दस्याःरूपेणसदृशोध्रुवं ७१ अतःस्त्रीरत्नसंभोक्तुःसमृद्धिस्तस्यसावरा तथातवनदैत्येंद्रसर्वरत्नाधि
पस्यच ७२ एवमुक्तानसामंत्र्यगतेमथिसदैत्यराट् तद्रूपश्रवणादासीदनंगज्वरपीडितः ७३॥ ॥इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्ये
ब्रह्मनारदसंवादेतृतीयोऽध्यायः ३॥ नारदउवाच अथसंप्रेषयामासससदूतंसिंहिकासुतं त्र्यंबकायतदाकिंचिद्विष्णुमायाविमोहितः १ कै
लासमगमद्राहुःकुर्वन्शुक्लेन्दुवर्चसं कार्ष्ण्येनकज्जलपक्षंदुर्वर्जसंस्वांगजेनतु २ निवेदितस्तदेशायनंदिनासप्रवेशितः त्र्यंबकभ्रूलतासं
ज्ञाप्रेरितोवाक्यमब्रवीत् ३ राहुरुवाच देवपन्नगसेव्यस्यत्रैलोक्याधिपतेःप्रभो भोक्तुश्चसर्वरत्नस्यआज्ञांशृणुवृषध्वज ४ स्मशान
वासिनोनित्यमस्थिमालावहस्यच दिगंबरस्यतेभार्याकथंहैमवतीशुभा ५ अहंरत्नाधिनाथोस्मिसाचस्त्रीरत्नसंज्ञिता तस्मात्समैवसायोग्या
नैवभिक्षाशिनस्तव ६ नारदउवाच वदत्येवंतदाराहौभ्रूमध्याच्छूलपाणिनः अभवत्पुरुषोरौद्रस्तीव्राशनिसमस्वनः ७ सिंहास्यःप्र
ललज्जिह्वःसज्वालनयनोमहान् ऊर्ध्वकेशःशुष्कतनुर्नृसिंहइवचापरः ८ सतंखादितुमारेभेदृष्ट्वा राहुर्भयार्दितः अधावदतिवेगेन
वहिःसचदधारतम् ९ धृत्वाखादितुमारब्धस्तावद्रुद्रेणवारितः नैवासौवध्यतामेतिदूतोयंपरवानिति १० ब्राह्मणंमांमहादेवखा
दितुंसमुपागतः महादेवोवचःश्रुत्वाब्राह्मणस्सतदाब्रवीत् मुंचेतिपुरुषःश्रुत्वाराहुंतस्याजवर्त्मरे राहुंत्यक्त्वासपुरुषोमहादेवंव्यजिज्ञप
त् १२ पुरुषउवाच क्षुधामांबाधतेस्वामिन्क्षुत्क्षामश्चास्मिसर्वथा किंभक्ष्यममदेवेशतदाज्ञापयमांप्रभो १३ ईश्वरउवाच संभक्ष
यात्मनःशीघ्रंमांसंत्वंहस्तपादयोः नारदउवाच सशिवेनैवमाज्ञप्तश्चखादपुरुषःस्वकं १४ हस्तपादोद्भवंमांसंशिरःशेषोभवत्तदा दृष्ट्वा

गिरींचशैवंतंसुप्रसन्नस्तदाशिवः १५ पुरुषंभीमकर्माणंतमुवाचसविस्मयः ईश्वरउवाच त्वंकीर्तिमुखसंज्ञोहिभवमेद्वारगःसदा॥
१६ त्वदर्चांयेनकुर्वंतिनैवतेमत्प्रियंकराः नारदउवाच तदाप्रभृतिदेवस्यद्वारिकीर्तिमुखःस्थितः १७ नार्चयंतीहयेपूर्वंतेषामर्चावृथाभ
वेत् राहुर्विमुक्तोयस्तेनसोपतद्बर्बरस्थले १८ अथसर्ववरोभूत्वोभूमौचैवप्रथांगतः ततःसराहुःपुनरेवजातमात्मानमस्मिन्नितिमन्य
मानः १९ समेत्यसर्वंकथयांबभूवजलंधरायेशविचेष्टितंतत् जलंधरस्तुतच्छ्रुत्वाकोपाकुलितलोचनः २० निर्जगामासुरैन्यानांको
टिभिःपरिवारितः गतस्तस्याग्रतःशुक्रोराहुस्तत्पृष्ठतोभवत् २१ मुकुटश्चापतद्भूमौवेगात्प्रस्खलितेंद्रियः दैत्यसैन्याद्गतैस्तत्रविमा
नानांशतैस्तथा २२ अराजततनभःपूर्णंप्रावृषीवबलाहकैः तस्योद्योगंतदादृष्ट्वादेवाःशक्रपुरोगमाः २३ अलक्षिताःसमाजग्मुःशूलिनंते
विजिज्ञपुः देवाऊचुः नजानासिकथंस्वामिन्देवापत्तिमिमांप्रभो २४ तदस्मद्दुःखनाशार्थायजहिसागरनंदनम् नारदउवाच इतिदेववचःश्रु
त्वाप्रहस्यवृषभध्वजः २५ महाविष्णुंसमाहूयवचनंचेदमब्रवीत् ईश्वरउवाच जलंधरःकथंविष्णोनहतःसंगरेत्वया २६ तद्गृहंचैवया
तोसित्यक्त्वावैकुंठमात्मनः श्रीभगवानुवाच तवांशसंभवत्वाच्चभ्रातृत्वाच्चतथाश्रियः २७ नमयानिहतःसंख्येत्वमेवजहिदानवम् ई
श्वरउवाच नायमेभिर्महातेजाःशस्त्रास्त्रैर्वाध्यतेमया २८ देवैःसहस्वतेजोंशंशस्त्रार्थंदीयतांमम नारदउवाच अथविष्णुमुखादे
वाःस्वतेजांसिददुस्तदा २९ तान्येकत्वंगतानीशोदृष्ट्वास्वंचासृजन्महः तेनाकरोन्महादेवोमहाशस्त्रमनुत्तमं ३० चक्रंसुदर्शनंनामज्वा
लामालातिभीषणं तेजःशेषेणचततदावज्रंचकृतवान्हरः ३१ तावज्जलंधरोदृष्टःकैलासतलभूमिषु हस्त्यश्वरथपत्तीनांकोटिभिःपरि
वारितः ३२ तंदृष्ट्वालक्षिताःसर्वेजग्मुर्देवायथागतं अवतेरुर्गणाःसर्वेकैलासाद्युद्धदुर्मदाः ३३ ततःसमभवद्युद्धंकैलासोपत्यका

का भुवि प्रथमाधिपदैत्यानां घोरशस्त्रास्त्रसंकुलं ३४ भेरीमृदंगशंखाद्यैर्निर्घोषैर्वीरहर्षणैः गजाश्वरथशब्दैश्च नादिताभूर्व्यकंप
त ३५ प्रक्षिप्तैमरबाणौघमुसलप्रासतोमरैः व्यराजत नभः पूर्णं सुक्ताभिरिव संवृतं ३६ निहतै रथनागाश्वनरैर्भूमिर्व्यराजत वज्रा
हताचलशिरःशकलैरिव संवृता ३७ प्रमथाहतदैत्यौघैर्दैत्याहतगणैस्तथा वसासृक्मांसपंकाद्यैर्गौरगम्याभवत्तदा ३८ प्रमथाहतदै
त्यौघान्भार्गवः समजीवयत् युद्धे पुनःपुनश्चैव मृतसंजीवनीबलात् ३९ तान्दृष्ट्वा व्याकुलीभूतागणाः सर्वे भयार्दिताः शशंसुर्देवदेवायतत्स
र्वमुन्नचेष्टितं ४० अथरुद्रमुखात्कृत्याबभूवातीवभीषणा तालजंघोदरीवक्त्रास्तनपीडितभूरुहा ४१ सायुद्धभूमिमासाद्य भक्षयंती महासु
रान् भार्गवंस्वभगे कृत्वाजगामांतर्हिताभवत् ४२ विधृतं भार्गवं दृष्ट्वा दैत्यसेनागणास्तदा प्रम्लानवदनाहर्षान्निर्जघ्नुर्युद्धदुर्मदाः ४३ आ
श्वाभज्यत दैत्यानां सेनागणभयार्दिता वायुवेगहतायद्वत्प्रकीर्णा तृणसंहतिः भग्नां गणभयात्सेनां दृष्ट्वामर्षयुताययुः ४४ निशुंभशुंभसेना
न्यौ कालनेमिश्च वीर्यवान् त्रयस्ते वारयामासुर्गणसेनां महाबलाः ४५ मुंचंतः शरवर्षाणि प्रावृषीव बलाहकाः तत्र दैत्यशरौघास्ते शल
भा इवताःप्रजाः ४६ रुरुधुः खं दिशः सर्वा गणसेनामकंपयन् गणाः शरशतैर्भिन्ना रुधिरासारवर्षिणः ४७ वसंते किंशुकाभासा न प्रज्ञायत
किंचन पतिता पात्यमानाश्च छिन्नभिन्नास्तदागणाः ४८ त्यक्त्वा संग्रामभूमिं तु ते सर्वे विमुखाभवन् ४९ ततः प्रभग्नं स्वबलं विलोक्य गजास्य
नंदीश्वरकार्तिकेयाः त्वरान्विता दैत्यवरानसह्यान्निवारयामासुरमर्षणास्ते ५० ते गणाधिपतीन्दृष्ट्वा नंदीभमुखषण्मुखान् अमर्षाद् गम·
भ्यधावंत द्वंद्वयुद्धाय दानवाः ५१ नंदिनं कालनेमिस्तु शुंभो लंबोदरं तदा निशुंभः षण्मुखं वेगादभ्यधावंत दंशिताः ५२ निशुंभः कार्तिकेय। ८
स्य मयूरं पंचभिः शरैः हृदि विव्याध वेगेन मूर्छितः सपपात ह ५३ ततः शक्तिधरः शक्तिं यावज्जग्राह रोषितः तावन्निशुंभो वेगेन सशस्त्रान्

मपातयत् ५४ ततोनंदीश्वरोबाणैःकालनेमिमबध्यत सप्तभिश्चहयान्केतुंरथंसारथिमच्छिनत् ५५ कालनेमिस्तुसंक्रुद्धोधनुःचिच्छे
दनंदिनः तदानंदीश्वरस्तंतुत्रिशूलेनाहनहृदं ५६ सच्छिन्नहृदयोहताश्वोहतसारथिः अद्रेःशिखरमासुच्यशैलादिंसोप्यपातयत् ५७
अथशुंभोगणेशश्चरथमूषकवाहनौ युध्यमानौशरव्रातैःपरस्परमविध्यतां ५८ गणेशस्तुतदाशुंभंहृदिविव्याधपत्रिणा सारथिंचत्रि
भिर्बाणैःपातयामासभूतले ५९ ततोतिकोपःशुंभोपिबाणपंक्त्यागणाधिपं मूषकंचत्रिभिर्विध्यानानादजलदस्वनः ६० मूषकःशरभिन्नां
गश्चचालदृढवेदनः लंबोदरश्चपतितःपदातिरभवन्मुने ६१ ततोलंबोदरःशुंभंहत्वापरशुनाहृदि अपातयत्तदाभूमौमूषकंचारुहत्पुनः
६२ कालनेमिर्निशुंभश्चद्युभौलंबोदरंशरैः युगपज्जघ्नतुःक्रोधात्तोत्रेणेवमहाद्विपं ६३ तंपीड्यमानमालोक्यवीरभद्रोमहाबलः अनःकि
लकिलाशब्दैःसिंहनादैःसघर्घरैः विनादितोडमरुकैःपृथिवीसमकंपयत् ६६ ततोभूतान्यधावंतभक्षयंतिस्मदानवान् उत्पतंत्यापतंति
स्मननृतुश्चरणांगणे ६७ नंदीचकार्तिकेयश्चसमाश्वस्तौत्वरान्वितौ निजघ्नतुस्ततोदैत्यान्निरंतरशरव्रजैः ६८ छिन्नभिन्नाहतैर्दैत्यैःपतितै
र्भक्षितैस्तथा व्याकुलासाभवत्सेनाविषण्णवदनातदा ६९ प्रतिध्वस्तांतदासेनांदृष्ट्वासागरनंदनः रथिनापतिनाकेनसंग्रामेसगतो
बली ७० हस्त्यश्वरथसंचारैःशंखभेरीरवैस्तथा अभवत्सिंहनादश्चसेनयोरुभयोस्तदा ७१ जलंधरशरव्रातैर्नीहारपटलैरिव द्यावा
पृथिव्योराच्छन्नमंतरंसमपद्यत ७२ गणेशंपंचभिर्विध्वाशैलादिंनवभिःशरैः वीरभद्रंचविंशत्यानदत्सुमहास्वनः ७३ कार्तिकेयस्ततोदैत्यं
शक्त्याविव्याधसत्वरः जुघूर्णःशक्तिनिर्भिन्नःकिंचिद्व्याकुलमानसः ७४ ततःक्रोधपरीतास्यःकार्तिकेयंजलंधरः गदयाताडयामाससचभूमि

का॰मा॰
९

नलेपतत् ७५ तथैवनंदिनंवेगादपातयतभूतले ततोगणेश्वरः क्रुद्धोगदांपरशुनाछिनत् ७६ वीरभद्रस्त्रिभिर्वाणैःहृदिविव्याधदान
वम् सप्तभिश्चहयान्केतुंधनुःछत्रंचचिछिदे ७७ ततोनिकुंभोदैत्येंद्रः शक्तिमुद्यम्यदारुणां गणेशंपातयामासरथमन्यंसमारुहत् ७८
अभ्ययाद्दथवेगेनवीरभद्रंरुषान्वितः ततस्तौसूर्यसंकाशौयुयुधातेपरस्परं ७९ वीरभद्रस्ततस्तस्यहयान्वाणैरपातयत् धनुश्चचिच्छिदे
दैत्योजग्राहपरिघंतदा ८० सवीरभद्रंत्वरयाभिगम्यजघानदैत्यःपरिघेनमूर्ध्नि सचापिवीरप्रतिभिन्नमूर्धापपातभूमौरुधिरंसमुद्गि
रन् ८१ ॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥ नारदउवाच पतितंवीरभद्रंतुदृष्ट्वारुद्रगणा
भयात् आगच्छंतोरणंहित्वाक्रोशमानामहेश्वरं १ अथकोलाहलंश्रुत्वागणानांचंद्रशेखरः अभ्ययाद्वृषमारूढःसंग्रामंचहसन्निव २ रुद्र
मायांतमालोक्यसिंहनादैर्गणाःपुनः निवृत्तास्संगरेदैत्यान्निजघ्नुः शरवृष्टिभिः ३ दैत्याश्चभीषणंदृष्ट्वारुद्रंसर्वेविदुद्रुवुः कार्तिकव्रतिनंदृष्ट्वा
पातकानीवतद्भयात् ४ जलंधरस्ततोदैत्यान्विद्रुतान्प्रेक्ष्यसंगरे क्रोधादधावच्चंडीशंमुंचन्वाणान्सहस्रशः ५ शुंभोनिशुंभोश्वमुखः
कालनेमिर्वलाहकः खड्गरोमाप्रचंडश्चघस्मरश्चशिवंययुः ६ वाणांधकारसंछन्नंदृष्ट्वातत्रशिवःप्रभुः तद्वाणजालमाछिद्यस्ववाणैरा
कृष्णोनभः ७ दैत्यान्वाणवितत्याभिःपीडितानकरोत्तदा प्रचंडंवाणजालौघैरपातयतभूतले ८ खड्गरोम्णःशिरःकोपात्तयापरशुनाच्छि
नत् वलाहकस्यचशिरःखट्वांगेनाकरोद्द्विधा ९ वध्वाचघस्मरंदैत्यंपाशेनाभ्यहनद्भुवि वृषभेणाहताकेचित्केचिद्वाणैर्निपातिताः १०
नशेकुरसुराःस्थातुंगजाःसिंहार्दितायथा ततःकोपपरीतात्माकोपाद्रुद्रंजलंधरः ११ आह्वयामाससमरेतीव्राशनिसमस्वनः जलंधरउवा
च युध्यस्वाद्यमयासार्द्धंकिमेभिर्निहितैस्तव १२ यच्चकिंचिद्वलंतेस्तितद्दर्शयजटाधर नारदउवाच इत्युक्त्वावाणसप्तत्याजघानवृषभध्व

राम
९

नंदिमुरेश्वा

जं १३ तान्याप्तानशितैर्वाणैश्चिच्छेदसहसन्निव ततोहयान्ध्वजंछत्रंधनुश्चिच्छेदसप्तभिः १४ सच्छिन्नधन्वाविरथोगदामुद्यम्यवेग
वान् अभ्यधावच्छिवंतावद्गदांबाणैर्द्विधाकरोत् १५ तथापिमुष्टिमुद्यम्यययौरुद्रजिघांसया तावद्देवेनवाणौघैः क्रोशमात्रमपाकृतः
१६ ततोजलंधरोदैत्योमत्वारुद्रंबलाधिकं ससर्जमायांगांधर्वीमद्भुतांरुद्रमोहिनीं १७ ततोजगुश्चननृतुर्गंधर्वाप्सरसांगणाः तालवे
णुमृदंगाश्चवाद्यंतिस्मचापरे १८ तंदृष्ट्वामहदाश्चर्यंरुद्रोनादविमोहितः पतितान्यपिशस्त्राणिकरेभ्योनचवेत्तिसः १९ एकाग्रीभूतमालो
कारुद्रंदैत्योजलंधरः कामार्तःसजगामाशुयत्रगौरीस्थिताभवत् २० युद्धेशुंभनिशुंभाख्यौस्थापयित्वामहाबलौ दशदोर्दंडपंचास्यस्त्रिने
त्रश्चजटाधरः २१ महावृषभमारूढःसबभूवजलंधरः अथरुद्रंसमालोक्यआयांतंभववल्लभा २२ अभ्याययौसखीमध्यात्तद्दर्शनपथे
भवत् यावद्ददर्शचार्वंगींपार्वतींदनुजेश्वरः २३ तावत्सवीर्यंमुमुचेजडांगश्चततोभवत् अथज्ञात्वाततोगौरीदानवंभयविह्वला जगामांत
र्हितावेगात्सातदोत्तरमानसं तामदृष्ट्वाततोदैत्यःक्षणाद्विद्युल्लतामिव २५ जवेनागात्पुनर्योद्धुंयत्रदेवोवृषध्वजः पार्वत्यपिमहाविष्णुंस
स्मारमनसातदा २६ तावद्ददर्शतंदेवंसापिविष्णुंसमीपगं पार्वत्युवाच विष्णोजलंधरोदैत्यःकृतवान्परमाद्भुतं २७ तत्किंनविदितंतेऽ
स्तिचेष्टितंतस्यदुर्मतेः श्रीभगवानुवाच तेनैवदर्शितःपंथावयमप्यन्वियामहे नान्यथासभवेद्वध्यःपातिव्रत्यात्सुरक्षितं नारदउवा
च जगामसविष्णुरित्युक्त्वापुनर्जालंधरंपुरं २९ अथरुद्रश्चगंधर्वानुगतःसंगरेस्थितः अंतर्धानगतांमायांदृष्ट्वासबुबुधेतदा ३० ततःशि
वोविस्मितमानसःपुनर्जगामयुद्धायजलंधरंरुषा सचापिदैत्यःपुनरागतंशिवंदृष्ट्वाशरौघैःसमवाकिरद्रणे ३१ विष्णुर्जालंधरंगत्वातद्दै
त्यपुटभेदनं पातिव्रत्यस्यभंगायवृंदायांचाकरोन्मतिम् ३२ अथवृंदास्वकादेवीस्वप्नमध्येददर्शह भर्तारंमहिषारूढंतैलाभ्यक्तंदिगंबरं

का·मा ९०

३३ फलप्रसूनभूषाढ्यां क्रव्यादगणसेवितं दक्षिणाशांगतं मुंडं तमसाव्याहृतं तदा ३४ स्वपरं सागरे मग्नं सहसैवात्मनासह ततः प्रबुद्धा सा
बालानत्स्वप्नं च विचिन्वति ३५ ददर्शोदितमादित्यं सच्छिद्रं निष्प्रभं मुहुः तदनिष्टमिति ज्ञात्वा रुदती भयविह्वला ३६ कुत्रचिन्नालभच्छर्म गोप
राट्टालभूमिषु ततः सखीद्वययुता नगरोद्यानमागमत् ३७ तत्रापि सा गता बाला नालभत्कुत्रचित्सुखं वनाद्वनांतरं याता नैव वेदात्मनस्तनु
३८ ततः सा भ्रमती बाला ददर्शातीव भीषणौ राक्षसौ सिंहवदनौ दंष्ट्रानयनभास्वरौ ३९ तौ दृष्ट्वा विह्वलातीव पलायनपरा तदा ददर्श तापसं
शांतं सशिष्यं मौनमास्थितं ४० ततस्तत्कंठमासज्य निजां बाहुलतां तदा हुंकारेणैव तौ घोरौ चकार विमुखौ तदा ४१ तद्धुंकारभयत्रस्तौ द
द्रुतौ विमुखौ गतौ प्रणम्य दंडवद्भूमौ वृंदा वचनमब्रवीत् ४२ वृंदोवाच रक्षिताहं त्वया घोरात्भयादस्मात्कृपानिधे किंचिद्विज्ञप्तुमिच्छामि
कृपया तन्निशामय ४३ जलंधरो हि मे भर्ता रुद्रं योद्धुं गतः प्रभो स तत्रास्ते कथं युद्धे तन्मे कथय सुव्रत ४४ नारद उवाच मुनिस्तद्वाक्यमाक
र्ण्य कृपयोर्द्ध्वमवैक्षत तावत्कपी समायातौ तं प्रणम्याग्रतः स्थितौ शिरः कबंधहस्तौ तौ दृष्ट्वाब्धितनयस्य सा पपात मूर्छिता भूमौ भर्तृव्यस
नदुःखिता ४६ कमंडलुजलासिक्ता मुनिनाश्वासिता तदा भर्तृभाले स्वकं भालं कृत्वा रोदनाकरोदह ४७ वृंदोवाच यः पुरा सुखसंवादै
र्विनोदयसि मां विभो न कथं नवदस्याद्य वल्लभां मामनागसं ४८ येन देवाः सगंधर्वा निर्जिता विष्णुना सह स कथं तापसेन त्वं त्रैलोक्यवि
जयी हतः ४९ नारद उवाच इति विलप्य तदा वृंदा तं मुनिं वाक्यमब्रवीत् वृंदोवाच कृपानिधे मुनिश्रेष्ठ जीवयैनं मम प्रियं ५० त्वमेवास्य पु
नः शक्तो जीवनाय मतो मम नारद उवाच इति तद्वाक्यमाकर्ण्य प्रहस्य स मुनिरब्रवीत् ५१ नायं जीवयितुं शक्यो रुद्रेण निहतो युधि तथा
पि कृपया विष्टस्त्वं संजीवयाम्यहं नारद उवाच इत्युक्त्वांतर्दधे यावत्तावत्सागरनंदनः वृंदामालिंग्य तद्वक्त्रं चुचुंब प्रीतिमानसः ॥ ५२ ॥ ५

मा ५

राम १०

अथवृंदापिभर्तारं दृष्ट्वाहर्षितमानसा रेमेतद्वनमध्यस्थातद्युक्ताबहुवासरं ५४ कदाचित्सुरतस्यांते दृष्ट्वाविष्णुंतमेवहि निर्भर्त्स्यक्रोधसंयु-
क्तावृंदावचनमब्रवीत् ५५ वृंदोवाच मायाशतविदंधित्वामभजंतंप्रियंजनं येनतेनविनाध्वस्तंपातिव्रत्यंमहाव्रतं ५६ नूनंमेनिहतोभर्ताय-
त्तुभिर्नात्रसंशयः पातिव्रत्यबलादेवनवैधव्यममाभवत् ५७ तज्ज्ञातंमेतिमंदायाजीवितेनममाद्यकिं इत्युक्त्वावचनंवृंदाजीवनंत्यक्तुमु-
द्यता ५८ विष्णुरुवाच वस्तुतस्तेपतिरहंमायापतिश्चराचरं ममैवरूपंतत्त्वंगिमासिदस्तदिदंशृणु ५९ श्रियासहैकांप्राप्यैवममवक्षः-
स्थलेचतेश्रियासिमेत्वंसुश्रोणिनचवैधव्यमस्तिते ६० इतिवाक्यंनिशम्याथसाशशापरुषाहरिं त्वंशिलाभवगोविंदस्तुनःप्राहहरिस्थतां
६१ श्रीभगवानुवाच प्रयच्छत्वंवरंयन्मामशापःकोपनेमुधा त्वमपिस्थावराभूत्वामयिसंयोगमेष्यसि ६२ वृंदोवाच धिक्त्वेदंहरेः-
शीलंपरदाराभिगामिनः ज्ञातोसित्वंमयासम्यगपिप्रत्यक्षतापसः ६३ यौत्वयामाययाद्वास्थौस्वकीयौदर्शितौमम तावेवराक्षसौभूत्वा-
तवभार्यांहरिष्यतः ६४ त्वंचापिभार्यादुःखार्तोवनेकपिसहायवान् भ्रमधैर्यंकरश्चास्तुयस्तेशिष्यत्वमागतः ६५ इत्युक्त्वासातदावृंदाप्रावि-
शद्धव्यवाहनं विष्णुनावार्यमाणापितस्मिन्नासक्तमानसा ६६ ततोहरिस्तामनुसंस्मरन्मुहुर्वृंदांचिताभस्मरजोवगुंठितः तत्रैवतस्थौमुनि-
सिद्धसंघैःप्रबोध्यमानोपिययौनशांतिम् ६७॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेपंचमोध्यायः ५ नारदउवाच ततोज-
लंधरोदृष्ट्वारुद्रमद्भुतविक्रमम् चकारमाययागौरींत्र्यंबकंमोहयन्निव १ रथोपरिगतांदृष्ट्वारुदंतींपार्वतींशिवः निशुंभशुंभमुखैर्बध्यमा-
नांदैत्यैःसः २ गौरींतथाविधांदृष्ट्वाशिवोप्युद्विग्नमानसः अवाङ्मुखःस्थितस्तूष्णींविस्मृत्यस्वपराक्रमम् ततोजलंधरोवेगात्त्रिभिर्विव्याधसा-
यकैः आपुंखमग्नैस्तंरुद्रंशिरस्युरसिचोदरे ४ ततोज्ञात्वासतांमायांविष्णुनासंप्रबोधितः रौद्ररूपधरोजातोज्वालामालातिभीषणः ५ ता-

स्यातीवमहारौद्रंरूपंदृष्ट्वामहासुराः नशेकुःप्रमुखेस्थातुंभेजिरेचदिशोदश ६ ततःशापंददौदेवस्तयोःशुंभनिशुंभयोः ममयुद्धादपक्रांतौ
गौर्यावध्यौभविष्यतः ७ पुनर्जलंधरोवेगाद्ववर्षनिशितैःशरैः बाणान्धकारसंछन्नंयथाभूतंबलंमहत् ८ यावद्रुद्रस्तुचिच्छेदतत्स्वबाणग
णांस्त्वरात् तावत्सपरिघेणाशुजघानवृषभंबली ९ वृषस्तेनप्रहारेणपरावृत्तोरणांगणात् रुद्रेणाकृष्यमाणोपिनतस्थौरणभूमिषु १०
ततःपरमसंक्रुद्धोरुद्रोरौद्रवपुर्द्धरः चक्रंसुदर्शनंवेगाच्चिक्षेपादित्यवर्चसं ११ प्रदहद्रोदसीवेगात्तदासाद्यजलंधरं जहारतच्छिरःका
यान्महद्दायतलोचनं १२ रथात्कायःपपातोर्व्यांनादयन्वसुधातलं तस्यदेहोत्थितंज्योतिर्विवेशवदनेविभोः १३ अथब्रह्मादयोदेवा
हर्षादुत्फुल्ललोचनाः प्रणम्यशिरसारुद्रंशशंसुर्विष्णुचेष्टितं १४ देवाऊचुः महादेवत्वयादेवाःरक्षिताःशत्रुतोभयात् किंचिदन्यत्समुद्भू
तंतत्रकिंकरवामहे १५ वृंदालावण्यसंभ्रांतोविष्णुस्तिष्ठतिमोहितः रुद्रोवाच गच्छध्वंशरणंदेवाःविष्णोर्मोहापनुत्तये १६ शरण्यांमोहि
नींमायांसावःकार्यंकरिष्यति नारदउवाच इत्युक्त्वांतर्दधेदेवाः सुहद्भूतगणैर्हरः १७ देवाश्चतुष्टुवुर्मूलप्रकृतिंभक्तवत्सलां देवाऊचुः यदु
द्भवाःसत्वरजस्तमोगुणाःसर्गस्थितिध्वंसनिदानकारणाः यदिच्छयाविश्वमिदंभवाभवौतनोतिमूलप्रकृतिंनताःस्मतां १८ याहित्रयोविंशति
भेदसंज्ञिताजगत्यशेषेसमधिष्ठितापरा यद्रूपकर्माणिजडास्त्रयोपितेदेवान्विद्युःप्रकृतिंनताःस्मतां १९ यद्भक्तियुक्ताःपुरुषास्तुनित्यंदारि
द्र्यसंमोहपराभवादीन् नप्राप्नुवंत्येवहिभक्तवत्सलांसदैवमूलप्रकृतिंनताःस्मतां २० नारदउवाच स्तोत्रमेतत्त्रिसंध्यंयःपठेदेकाग्रमानः।
सः दारिद्र्यमोहदुःखानिनकदाचित्स्पृशंतितम् २१ इतिस्तुवंतस्तांदेवास्तेजोमंडलमास्थितं ददृशुर्गगनेतत्रज्वालाव्याप्तदिगंतरं २२ ॥
तन्मध्याद्भारतींसर्वेशुश्रुवुर्व्योमचारिणीं अहमेवत्रिधाभिन्नातिष्ठामित्रिविधैर्गुणैः २३ गौरीलक्ष्मीस्वराचेतिरजःसत्वतमोगुणैः तत्रा

गच्छततः कार्यंविधास्यंतेववःसुराः २४ नारदउवाच श्रृणवतामितितांवाचसंतर्द्धानमगान्महः देवानांविस्मयोत्फुल्लनेत्राणांतत्र हासुने
२५ ततःसर्वेपितेदेवाःश्रुत्वातद्वाक्यनोदिताः गौरीलक्ष्मीस्वराश्चैवप्रणेमुर्भक्तवत्सलाः २६ ततस्तास्तान्सुरान्दृष्ट्वाप्रणतान्भक्तवत्सलाःवीजा
निप्रददुस्तेभ्योवाक्यान्यूचुश्चभोद्विजाः २७ देवाऊचुः इमानितत्रवीजानिविष्णुर्यत्रावतिष्ठते निर्वपध्वंततःकार्यंभवतांसिद्धिमेष्यति २८
नारदउवाच ततःसुहृष्टाःसुरसिद्धसंघाप्रगृह्यवीजानिविचिक्षिपुश्च वृंदाचितावस्थितलेसयत्रविष्णुःसदातिष्ठतिसौख्ययुक्तः २९ क्षिप्ते
भ्यस्तत्रवीजेभ्योवानस्पत्यास्त्रयोऽभवन् धात्रीचमालतीचैवतुलसीचद्विजोत्तमाः धात्र्युद्भवास्मृताधात्रीमाभवामालतीस्मृता गौरीभवाच
तुलसीतमःसत्वरजोगुणाः ३१ स्त्रीरूपिण्योबभूबुस्ताःदृष्ट्वाविष्णुस्तदामुने उत्तस्थौसंभ्रमाद्वृंदारूपातिशयविभ्रमात् ३२ दृष्ट्वाचतेनता
रागात्कामासक्तेनचेतसा तंचापितुलसीधात्र्यौरागेणैवावलोकताम् ३३ यच्चलक्ष्म्याःपुरावीजंमाययैवसमर्पितं तस्मात्तदुद्भवानारी
तस्मिन्नीर्षायुताभवत् ३४ अतःसावर्बरीत्याख्यामवापातीवगर्हिता धात्रीतुलस्यौतद्रागात्तस्यप्रीतिप्रदेसदा ३५ ततोविस्मृतदुःखो
सौविष्णुस्ताभ्यांसहैवतु वैकुंठमगमद्धृष्टःसर्वदेवनमस्कृतः ३६ अथविष्णुश्चगंडक्यांशालग्रामाभिधोभवत् वृंदाचतुलसीभूत्वाशाल
ग्रामाभिधेहरौ ३७ पुनःसंयोगमापेदेहरेरत्यंतवल्लभा इत्येवंवल्लभाविष्णोःपूर्वजन्मन्यथाधुना ३८ प्रीयतेपूजितोह्यस्यादलैर्दैत्यव
लांतकः मंजरीभिःसपत्राभिर्मालाभिश्चापिकेशवः ३९ तुलस्याःकार्तिकेप्रीतोददातिपदमव्ययं श्यामापितुलसीविष्णोःप्रियागौरीवि
शेषतः ४० यद्गृहेतुलसीभातिरक्षाभिर्जलसेचनैः शुश्रूषितोहरिस्तेषुनात्रकार्याविचारणा ४१ ललाटेतिलकंयेषांतुलसीमूलमृत्ति
का अपिदुःकृतिनस्तेस्युःतान्दूतानस्पृशंतिहि ४२ नावज्ञाजातुकार्यास्याद्वृंदाभावान्मनीषिभिः यथाहिवासुदेवस्यवैकुंठेभोगविग्रहः

४३ शालग्रामशिलारूपमपरंभुविदृश्यते तथालक्ष्म्यैकमापन्नातुलसीभोगविग्रहः ४४ अपरंस्थावरंरूपंभुविलोकहितायवै स्पृष्टादृष्ट
रक्षितात्वमहापातकनाशिनी ४५ दर्शनंनर्मदायास्तुगंगास्नानंतथैवच तुलसीवनसंसर्गः सममेतत्त्रयंस्मृतं ४६ पुष्कराद्यानितीर्थानि
निगंगाद्याःसरितस्तथा वासुदेवादयोदेवावसंतितुलसीदले ४७ तुलसीमंजरीयुक्तोयस्तुप्राणान्विमुंचति यमोपिनेक्षितुंशक्तोयुक्तंपापश
तैरपि ४८ तुलसीकाष्ठजंयस्तुचंदनंधारयेन्नरः तद्देहंनस्पृशेत्पापंक्रियमाणमपीहयत् ४९ तुलसीविपिनच्छायायत्रयत्रभवेत्तुनेतत्रश्राद्धंप्र
कर्तव्यंपितृणांदत्तमक्षयं ५० तथैवधात्रीविज्ञेयाविष्णोरत्यंतवल्लभा धत्तेधात्रीफलंयस्तुसविज्ञेयोहरिःस्वयं ५१ धात्रीच्छायासुयःकुर्यात्
पिंडदानंमुनीश्वर मुक्तिंप्रयांतिपितरस्तस्ययेनिरयंगताः ५२ धात्रीछायांसमाश्रित्यकार्तिकेतुभुनक्तियः अन्नसंसर्गजंपापंआवर्षंतस्यनश्यति
५३ तथैवमालतीपुष्पैःपूजयेत्सनतंहरिम् ५४ इतिभृगुवरपृष्टोयत्त्वयाहंतुलस्यामधुमथनसुहृत्त्वंप्राकृतंजन्मचास्याः तदिदमखिलमुक्तं
त्वमियार्थंहरेश्चचरितमतुलचित्रंपापहृच्छ्रोतृवक्त्रोः ५५॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेषष्ठोऽध्यायः६ नारद
उवाच बोधनात्परदीपस्यवैसवानात्तुसेवनात् स्नानायतीर्थगमनान्नियमाद्विष्णुपूजनात् १ कार्तिकेफलमाप्नोतिराजसूयाश्वमेधयोःकार्ति
केमासियेनित्यंतुलासंस्थेदिवाकरे २ कुर्वंतिविष्णुतुष्ट्यैयेतेनराविष्णुमूर्तयः शौनकउवाच सर्वेपिकालावयवास्तस्यकालस्वरूपिणः ३मासाना
तुकथंविष्णोःकार्तिकःप्रवरःप्रियः एकादशीतिथीनांचतत्सर्वंकारणंवद ४ नारदउवाच साधुपृष्टंत्वयाविप्रविस्तरेणशृणुष्वभो शंखोना
मा‌भवत्पूर्वमसुरःसागरात्मजः ५ त्रिलोकीमथनेशक्तोमहाबलपराक्रमः जित्वालोकान्निराकृत्यस्वर्लोकात्समहासुरः ६ इन्द्रादिलोकपा
लानामधिकारांस्तथाहरत् तद्भयाद्दथनेदेवाःसुवर्णाद्रिगुहांगताः ७ अवसन्बहुवर्षाणिसावरोधाःसवासवाःसुवर्णाद्रिगुहादुर्गेसंस्थिता

८ तद्वास्थिनोवभूवुस्ततदादैत्योविचारयत् हृताधिकारास्त्रिदशामयायद्यपिनिर्जिताः ९ लक्ष्यन्तेवलयुक्तास्तेकरणीयंममात्रकिंआज्ञा
तंतुमयादेवावेदमंत्रवलान्विताः १० तान्हरिष्येततस्सर्वेवलहीनाभवन्तिहि इतिमत्वाततोदैत्योविष्णुमालक्ष्यनिद्रितं ११ सत्यलोकाज्जहा
राशुवेदानादिस्वयंभुवः नीतास्तुतेनतेवेदास्तद्भयात्तेनिराक्रमन् १२ तोयेभिविविशुर्यज्ञमंत्रवीर्यवलान्विताः तान्मार्गमाणःशंखोपिसमु
द्रान्तरगोभवत् १३ नददर्शततोदैत्यःक्वचिदेकत्रसंस्थितान् अथब्रह्मासुरैःसार्द्धंविष्णुंशरणमन्वगात् १४ पूजोपकरणान्गृह्यवैकुंठभवनंप्र
तःतत्रतस्यप्रवोधार्थंगीतवाद्यादिकाःक्रियाः १५ चक्रुर्देवागंधपुष्पधूपदीपान्मुहुर्मुहुः अथप्रबुद्धोभगवान्तद्भक्तिपरितोषितः १६ ददर्शतैस्तु
दैस्तत्रसहस्रार्कसमद्युतिः उपचारैःषोडशभिःसंपूज्यत्रिदशास्तदा १७ दंडवत्पतिताभूमौतानुवाचाथमाधवःविष्णुरुवाच वरदोहंसुरगा
णागीतवाद्यादिमंगलैः १८ मनोभिलषितान्कामान्सर्वानेवददामिवः ईर्षस्यशुक्लैकादश्यांयावदुद्बोधिनीभवेत् १९ निशातुर्यांशशेषेयेगीत
वाद्यादिमंगलान् कुर्वंतिनित्यंमनुजाभवद्भिर्यद्यथाकृतं २० तेमत्प्रियकरानित्यंमत्सान्निध्यंव्रजंतिते पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्भवद्भिर्यदुपाहृत
म् २१ तदद्भुतगुणायस्मादातंवःसुखकारणं वेदाःशंखहृताःसर्वेतिष्ठन्त्युदकसंस्थिताः २२ तामानयाम्यहंवेदान्हत्वासागरनंदनं अद्यप्रभृतिवे
दास्तुमंत्रवीजमखान्विताः २३ प्रत्यब्दंकार्त्तिकेमासिविश्रमंत्वप्सुसर्वदा अद्यप्रभृत्यहमपिभवामिजलमध्यगः २४ भवन्तोऽपिमयासार्द्धम
यांतुसमुनीश्वराःकालेस्मिन्नेवकुर्वंतिप्रातःस्नानंद्विजोत्तमाः २५ तेसर्वयज्ञावभृथैःसुस्नाताःस्युर्नसंशयः येकार्त्तिकव्रतंसम्यक्कुर्वंतिमनुजाः
सदा २६ तेदेहांतेत्वयाशक्रप्राप्यामद्भवनंसदा विघ्नेभ्योरक्षणंतेषांममकार्यंसदात्वया २७ देयात्वयाचवरुणपुत्रपौत्रादिसंततिः धनवृद्धिईः
नाध्यक्षत्वयाकार्यांममाज्ञया २८ ममरूपधराःसाक्षाज्जीवन्मुक्तास्तुतेयतः आजन्ममरणाद्येनकृतमेतद्व्रतोत्तमम् २९ यथोक्तविधिना॥

सम्यक्तेमान्याभवतामपि एकादश्यांयतस्त्वाहंभवद्भिःप्रतिबोधितः ३० अतश्चैवातिमन्यासाह्यतीवप्रीतिदामम ३१ व्रतद्वयंसम्यगिदंनरैः
कृतंसान्निध्यकृन्मेनतथान्यदस्ति दानानितीर्थानितपांसियज्ञाः स्वर्लोकदान्येवसदासुरोत्तमाः ३२ नारदउवाच इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुः
शफरीतुल्यरूपधृक् स्वात्यपानांजलौविंध्यवासिनःकश्यपस्यच ३३ सतंकमंडलौस्वस्यकृपयाक्षिप्तवान्मुनिः तावत्सनममौतत्रततःकूपे
न्यवेशयत् ३४ तत्रापिनममौतावत्कासारंप्रापयत्सतं एवंससागरेक्षिप्तस्तत्रसोऽप्यन्ववर्द्धत ३५ ततोऽवधीत्सतंशंखंविष्णुर्मत्स्यस्वरूपधृ
क् अथतंस्वकरेकृत्वाबदरीवनमागमत् ३६ तत्राहूयऋषीन्सर्वानिदमाज्ञापयद्विभुः विष्णुरुवाच जलांतरविशीर्णांस्तुयूयंवेदान्प्रमार्ज
थ ३७ आनयध्वंत्वरातश्चसरहस्याञ्जलांतरात् तावत्प्रयागेतिष्ठामिदेवतागणसंयुतः ३८ नारदउवाच ततस्तैःसर्वमुनिभिस्तपोबलसम
न्वितैःउद्धारिताःषडंगास्तेवेदायज्ञसमन्विताः ३९ तेषुयावन्मितंयेनलब्धंतावन्मितस्यहि ससएवऋषिर्जातस्तदाप्रभृतिशौनक ४० अथसर्वेपिसं
गम्यप्रयागंमुनयोययुः विष्णवेसविधात्रेतेलब्ध्वान्वेदान्न्यवेदयन् लब्ध्वावेदान्सयज्ञांस्तुब्रह्मालोकपितामहः अथजह्वाजिमेधेनदेवर्षिगण
संवृतः ४२ यज्ञांतेदेवगंधर्वासिद्धपन्नगगुह्यकाः निपत्यदंडवद्भूमौविज्ञप्तिंतत्रचक्रिरे ४३ देवाऊचुः देवदेवजगन्नाथविज्ञप्तिंशृणुनः
प्रभो हर्षकालोऽयमस्माकंतस्मात्त्वंवरदोभव ४४ स्थानेस्मिन्द्रुहिणोवेदान्नष्टान्प्रापपुनःस्वयं यज्ञभागान्वयंप्राप्तास्त्वत्प्रसादाद्रमापते
४५ स्थानमेतदतिश्रेष्ठंपृथिव्यांपुण्यवर्द्धनम् विष्णुरुवाच ममाप्येतन्मितंदेवायद्भवद्भिरुदाहृतं ४६ तीर्थराजेतिविख्यातंतीर्थमेतद्भ
विष्यति दानंतपोव्रतंहोमोजपःपूजादिकाःक्रियाः ४७ अनंतफलदाःसंतुमत्सान्निध्यकराःसदा कालोप्येषमहापुण्यःफलदोस्तुसदा
नृणाम् ४८ नारदउवाच एवंदेवान्देवदेवस्तदुक्त्वातत्रैवांतर्द्धानमगात्सवेधाः देवाःसर्वेऽप्यंशकैस्तत्रतिष्ठन्नंतर्द्धानंप्रापुरिंद्रादयस्ते ।

४९ इतिकार्त्तिकमासस्यमयोत्पत्तिः प्रकीर्त्तिता सेतिहासंचभोब्रह्मन्किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ५० शौनकउवाच नियमान्कार्त्तिकस्या
स्यतिथीनांकृत्यमत्रयत् सोद्यापनविधिंब्रूहियथावत्प्रणतस्यमे ५१ नारदउवाच कार्त्तिकव्रतिनांपुंसांनियमायेप्रकीर्त्तिताः तान्शृणुष्वम
हाप्राज्ञकथ्यमानान्समन्ततः ५२ सर्वामिषाणिमांसानिक्षौद्रंसौवीरकंतथा राजिकामादकंचापिनैवाद्यात्कार्त्तिकव्रती ५३ देववेदद्विजानां
चगुरुगोव्रतिनांतथा स्त्रीराजमहतांनिंदांवर्जयेत्कार्त्तिकव्रती ५४ द्विदलंतिलतैलंचतथान्नंशल्यदूषितम् भावदुष्टंशब्ददुष्टंवर्जयेत्का
र्त्तिकव्रती ५५ परान्नमामिषंचूर्णंफलेजंबीरमामिषम् धान्येमसूरिकाप्रोक्ताह्यन्नंपर्युषितंतथा ५६ गोच्छागीमहिषीभूतमन्यदुग्धा
दिचामिषं द्विजक्रीतारसाःसर्वेलवणंभूमिजंतथा ५७ ताम्रपात्रस्थितंगव्यंजलंपल्वलसंस्थितं आत्मार्थंपाचितंचान्नमामिषंतत्स्मृ
तंबुधैः ५८ ब्रह्मचर्यमधःस्वापंपत्रावल्यांतुभोजनं चतुर्थकालेभुंजीतकुर्यादेवंसदाव्रती ५९ नरकस्यचतुर्दश्यांतैलाभ्यंगंचकारयेत्
अन्यत्रकार्त्तिकस्नायीतैलाभ्यंगंनकारयेत् ६० पलांडुंलसुनंशृंगंछत्राकंगृंजनंतथा नालिकांमूलकंशिग्रुंवर्जयेत्कार्त्तिकव्रती ६१ अलावुं
चापिवृंताकंकूष्मांडंबृहतीफलं कलिंगंचकपित्थंचवर्जयेत्कार्त्तिकव्रती ६२ श्वभिर्दृष्टंचकाकैश्चसूतकान्नंचवर्जयेत् द्विपाचितंचदग्धा
न्नंनचाद्याद्वैष्णवव्रती ६३ एतानिवर्जयेन्नित्यंव्रतीसर्वव्रतेष्वपि कृच्छ्राद्यंचापिकुर्वीतस्वशक्त्याविष्णुतुष्टये ६४ क्रमात्कूष्मांडबृहती
छत्राकंमूलकंतथा श्रीफलंचकलिंगंचफलंधात्रीभवंतथा ६५ नारिकेरमलावुंचपटोलंबदरीफलम् चर्मवृंताकजंवल्लीशाकंतुलसि
जंतथा ६६ धात्रीफलंरवौवर्ज्यंसर्वमासेसदागृही शाकान्येतानिवर्ज्यानिक्रमात्प्रतिपदादिषु ६७ एभ्योऽन्यद्वर्जयेत्किंचिद्यद्विष्णुप्रीतयेनरैः
तत्पुनर्ब्राह्मणेदत्वाभक्षयेत्सर्वदैवहि ६८ कार्त्तिकेमासियोभक्त्यादद्याद्ब्राह्मणभोजनम् प्रत्यहंविष्णुतुष्ट्यर्थंसयातिभवनंहरेः ६९ कुरुक्षेत्रेविधाने

का॰मा॰ १४

नतुलापुरुषदानतः यत्फलंलभतेतच्चकार्तिकेवस्त्रदानतः ७१कार्तिकेमासियोमर्त्यःपादत्राणंद्विजन्मने दद्याद्दत्त्वान्वितंसस्तस्यमंनैवपश्यति ७१ यज्ञोपवीतंताम्बूलंसपूगंगंधचंदनं दत्त्वैतद्देवविद्धेषुपुरंदरपुरंव्रजेत् ७२ नारिकेरफलंचैवसरलंवस्त्रसंयुतम् सदक्षिणाद्योदद्यात्सशस्यसुतपौत्रवान् ७३ कर्मणामनसावाचायत्नाद्धर्मसमाचरेत् अस्त्वर्ग्यलोकविद्विष्टंधर्ममप्याचरेन्नतु ७४ पूर्वयैर्नकृतंसतीर्थेगमनंविमानसंतर्पितानहव्यंनैवहुतंहुताशनमुखेनाराधितःशंकरः दत्तंनैवहिरण्यवस्त्रमुदकंगावस्तिलामेदिनीदृश्यंतेः नकुचैलदीनवदनानित्यंनराःदुःखिताः ७५ नविप्रपादोदककर्दमानिनवेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि स्वाहास्वधाकारविवर्जितानिश्मशानतुल्यानिगृहाणितानि ७६ यस्यसंगृहिणीभार्याभूद्वीभवतिनारद श्मशानशानतुल्यंतगृहंनैवत्यजेत्कलिः ७७ यन्नवेदध्वनिक्रांतंयच्चगोभिरलंकृतं यन्नरैःपरिवृतंश्मशानसिवतद्गृहम् ७८ भार्याहीनाक्रियेश्मानिशास्त्रहीनाःसुतास्तथा विलीयंतेनसंदेहोघर्मेनस्तुहिनंयथा ७९ भार्याहीनेक्रियानास्तिभार्या परिणयेत्ततः सर्वस्वेनापिविप्रेंद्रकर्तव्योदारसंग्रहः ८० एवमेवहिमाघेचकुर्याच्चनियमान्व्रती भुक्तिमुक्तिप्रदानीह्यानिक्षेत्राणिभूतले ८१ वसंतिनानितद्देहेकार्तिकव्रतकारिणः कार्तिकव्रतिनःपुण्यंयथोक्तव्रतकारिणः ८२ नसमर्थोभवेद्वक्तुंब्रह्मापिचतुर्मुखः ८३॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेसप्तमोध्यायः ७ नारदउवाच अथशौनकवक्ष्यामितिथीनांकृत्यमुत्तमं कार्तिकेकृष्णपक्षेतुत्रयोदश्यांनिशामुखे १ यमदीपंवहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति मृत्युनापाशदंडाभ्यांकालश्यामलयासह २ त्रयोदश्यांदीपदानेसूर्यजःप्रियतामिति कार्तिकेमासिकृष्णेचचतुर्दश्यांविधूदये ३ ॥ अवश्यमेवकर्तव्यंस्नानंनरकभीरुभिः तैलेलक्ष्मीजलेगंगादीपमालाचदीपके ४ ततःस्नानंप्रकुर्वीतविधिनानेनयत्नतः अपामार्गमथोतुम्बीतृतीयंचक्रपुन्नकं ५

अ॰ ७

राम॰ १४

पक्षवा॥ ६॥

कल १

॥ सितालोष्टसमायुक्तः सकंटकदलान्वितः हरपापमपामार्गभ्राम्यमाणः पुनः पुनः ६ सप्तवारं समावर्त्य क्षिपेत्तान्यास्यदिग्दले स्ना
त्वा सवस्त्रः प्राद्याद्दीपं तन्मृत्युपुत्रयोः ७ शुनकौश्यावशावलौ भ्रातरौ यमसेवकौ तुष्टौ स्यातां चतुर्दश्यां दीपदानेन मृत्युजौ ८ ततः
प्रभाते विमले देवान्संतर्प्पयेत्पितॄन् मनुष्यांश्च तथा दिव्यान्नामगोत्रपुरस्सरान् ९ रात्रौ दीपाश्च दातव्या देवानामपि तुष्टये चतुर्द-
श्यां दीपदानं हरदुर्गार्थमेव च १० शस्त्रैर्हतानां च तथा पितॄणामक्षयं भवेत् ततो दर्शदिने प्राप्ते सुप्रहृष्टमनास्तथा ११ स्नात्वा देवान्म
नुष्यांश्च पितॄंश्चैवाभितर्प्पयेत् कुर्य्याच्च पार्वणश्राद्धं दधिक्षीरघृतादिभिः १२ भोज्यैर्नानाविधैर्विप्रांस्तोषयेन्निजशक्तितः भेरीमृदं
गपटहवादित्रैः सुमनोहरैः १३ तस्यां महोत्सवः कार्यो दीपावल्यां प्रयत्नतः रात्रौ दीपाः प्रदातव्या गृहे तीर्थे चतुष्पथे १४ आरामे च ग
वां गोष्ठे पितॄणां तृप्तिकारकाः रात्रौ जागरणं कुर्यात्पुराणश्रवणं तथा १५ द्यूतेन वा महेशाग्रे युवतीनां च लीलया श्रिया सार्द्धं जगद्योनिः
शेते विष्णुः सुखान्वितः १६ तस्यां रात्रौ जनैस्तस्मात्संप्रोक्ता सुखसुप्तिका तस्यां धातुमयैर्वर्णैरालिख्य वा सुखरात्रिकम् १७ ब्रह्मविष्णुशिवा
दीनां मूर्त्तीश्च विलिखेत्ततः सुप्रतिष्ठां कारयित्वा द्विजेन सखिभिः सह १८ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैर्मंत्रेणानेन भो द्विजाः सुखरात्रि गृहस्थाया।
देवता सुखदा मम १९ सुखरात्रि नमस्तुभ्यं जीवपुत्रे नमोस्तु ते शिवप्रिये गृहाण मां पूजां मे रक्ष बालकान् २० रूपं देहि जयं देहि पुत्रान्का
मान्सुखं धनम् इति संप्रार्थ्य तां देवीं विप्रान्संतोष्य यत्नतः २१ ततो नीराजनं कर्म कृत्वा लक्ष्मीं प्रपूजयेत् रमार्चनाद्भवान्याहि जितः पू
र्वं महेश्वरः २२ अतः स शंकरो नग्नः सर्वैश्वर्यसुखप्रदः अमावास्याचतुर्दश्योः प्रदोषे दीपदानतः २३ यमलोकान्धकारात्तु मुच्यंते कार्त्ति
के नराः लक्ष्मीर्दैत्यभयान्मुक्ता सुखं क्षीरार्णवोदरे २४ अतः सा विधिवत्कार्य्या मनुष्यैः सुखसुप्तिका दिवा न तत्र भोक्तव्यं विना।६

वालानुरानुजनान् २५ प्रदोषसमयेलक्ष्मींपूजयित्वायथाक्रमम् राजामहोत्सवंकुर्याद्दीपावल्यांविशेषतः २६ ततोऽर्द्धरात्रसमयेस्व
यंराजापुरंविशेत् अवलोकयितुंसम्यक्पद्भ्यामेवशनैःशनैः २७ अप्रवुद्धेहरौस्त्रीभिःपूर्वंलक्ष्मीःप्रवोध्यते यथापतिव्रतानारीब्रह्म
न्लोकेप्रवुध्यते २८ पूर्वंभर्तुस्ततोलक्ष्मींपूर्वमेवप्रवोधयेत् जयदेविजगन्मातर्विष्णुवक्षसिसंस्थिते २९ रमेनमोस्तुतेमेत्रसौभाग्यंदे
हिनिश्चलम् इतिस्तुत्वाभगवतींमहालक्ष्मींवरप्रदाम् ३० भर्त्रासहक्रीडनीयंदीपावल्यांयदृच्छया नदिनंयदिहर्षेणराजयेनैवप्रयातिचेत्
३१ तस्यसंवत्सरंयावज्जयोहर्षोभवेद्ध्रुवम् यामेचतुर्थेनारीभिःसूर्पडिंडिमवादनैः ३२ निःकाश्यतेप्रविष्टाभिरलक्ष्मीःस्वगृहाङ्गणात् अत्रा
प्युदाहृतागाथासत्यधर्मेणकेनचित् ३३ ब्राह्मणेनाथभजताहरंवैसत्यशर्मणा शौनकउवाच सत्यशर्माद्विजःकोवैकागाथाश्रीःकथंपुनः ३४
विवेशतस्यभवनेकथयस्वमहामते नारदउवाच शूरसेनेद्विजःकश्चित्सत्यशर्मासुधीर्वसन् ३५ धर्मार्थेचेष्टतेकर्मतृष्णाव्याकुलमानसःम
मवित्तंयदीहस्याद्धर्मंकुर्यांततःसुखी ३६ पुत्रास्त्रियोलंकृताःस्युर्गृहंकुर्यांमनोरमं एवंमनोरथाविष्णुःसर्वदेवोत्तमोत्तमं ३७ हरिंज्ञात्वा
धनार्थंसपूजयामासभक्तितः एवंचार्चयतोविष्णुंयदायातिधनंक्वचित् ३८ अंतरैवविनश्येत्तसंचयोनाभवत्ततःनिर्विण्णोऽतिविषण्ण
श्चधनार्थंसुमहोद्यमैः ३९ पप्रच्छकोविदंकंचित् ज्ञानविज्ञानसंयुतम् तेनोक्तोधनकामस्त्वंशिवमाराधयाधुना ४० सहरःकामिनः
कामंदत्तेपथ्यमिवामये निःकामैस्तुहरिःपूज्योभजनानंदनिर्वृतैः ४१ सर्वत्रज्ञातवैराग्यैरत्तन्यथानास्तिभोद्विजाइतिश्रुत्वासविप्रा
ग्ग्योयमुनानीरसंश्रयम् ४२ लिङ्गंशिवस्यसंपन्नेपूजयामासचान्वहम् वर्षेप्रसन्नोभगवान्रूपंवैब्राह्मणंदधत् ४३ लक्ष्म्याश्रयार्थंचोवा
चप्रहसन्सत्यशर्मणः गच्छयाचस्वराजानमिदमेववचोमम ४४ दीपावल्याःसमारंभेनागराःसर्वतोदिशम् स्वेस्वेगृहेप्रदीपांश्चमाकु

र्गुनिशिकेचन ४५ तथेत्युक्त्वाययाचेसराजानमिदमेवच राजातुच्छंसमाज्ञाययाचितंब्राह्मणोददौ ४६ तुष्टोविप्रोवरंलब्ध्वाजगामनि
जमंदिरम् अथायातानिशासातुतस्मिन्नहनिभूमिपम् ४७ तद्वचःश्रावयामाससत्यशर्मास्वयाचितम् तदैवराजास्वपुरेसर्वत्राघोषय
द्द्विजाः ४८ अद्यप्रदोषेदीपस्तुनप्रज्वाल्यश्चकेनचित् तेनाद्यस्वगृहंशोभिकृतमस्मैसत्यशर्मणा ४९ दीपमालाकृतारात्रौहर्षगीतादिकौ
तुकं सर्वेषांवेश्मनांलक्ष्मीरंधकारभयार्दिता ५० सर्वत्रानाश्रयालक्ष्मीरंधकारविशङ्किनी तद्वेश्मनिकृतंज्योतिःप्रकाशंप्रविवेशह ५१
हसेनलीलाकमलंगृहीत्वाकान्त्यामनोल्हादकराल्पहासा मनुष्यनारीसदृशाकृतिश्रीर्निषिध्यतेतेनगृहंविशन्ती ५२ वैकुंठेतेपतिभंद्रेप्रा
प्यसन्तोनकस्यचित् त्वंचातिचंचलालोकेसदोषोदस्यतीयुवां ५३ नेहस्थेयंत्वयायाहिवंचयान्याचनहिदः श्रीरुवाच सुतेक्षणेनवैवेदंग
हंचादान्ममाश्रयं ५४ निश्चलानेभविष्यामिप्रवेशंदेहिमेगृहे सत्यशर्मोवाच यदित्रैपुरुषवंशेतिष्ठेमेशपथंकुरु ५५ मदांधंमांचमाकुर्य्याः
स्तिष्ठगेहेनचान्यथा तथेत्युक्त्वाविशद्गेहंसत्यंवैसत्यशर्मणः समृद्धिसंपदामासीद्दारिद्र्यंदूरतोगतं धनेनतेनविप्रोपियज्ञदानतपःकृतीः ५७
चकारविष्णुपूजाश्चवृद्धोवैराग्यमापसः तस्मात्तस्यांनिशायांवैगृहेऽखंडप्रदीपकम् ५८ कार्यंचालंकृतंगेहंश्रीकामैर्गृहिभिर्द्विजाः सर्वाश्रमे
षुगार्हस्थ्यंधन्यंमन्येश्रियान्वितम् ५९ अत्राश्रित्यहकामादीन्दुर्जयान्जयतेपुमान् अन्येषामुपकारायत्रयाणांसाधनंपरम् ६० निष्का
मनान्तथामोक्षंसाधयेन्नात्रसंशयः व्ययेणधनहीनेनकथंसाध्यंभवेदिह ६१ धनात्धर्मान्वर्धयित्वासमुत्पाद्यसुतंनरैः धर्मएवाग्रतः
साध्योह्यन्यथातद्रयोगुणाः ६२ नमोलक्ष्म्यैमहादेव्यैजगन्मात्रेहरिप्रिये त्वांविनाशून्यतांयातिजगद्यत्नविवर्जितं ६३ नारदउवाच इत्येव
मुक्त्वाविप्राग्र्यस्त्यक्त्वागेहंविरक्तधीः प्रवव्राजपुरीमग्र्यांमथुरांप्राप्यभक्तिमान् ६४ तथात्रशुद्धचित्तोसौसमाराध्यसमाधिना हरिंशरणमा

तद्दंश्याघनिनोभवन् ६५ एतद्दीपोत्सवंब्रह्मन्वसिष्ठोऽपिजगादह लीलावत्यैनदाकृत्वामृतासद्गतिमायसा ६६ शौनकउवाच कासा
लीलावतीब्रह्मन्वसिष्ठः कथमुक्तवान् तत्सर्वंब्रूहिदेवर्षेरहस्यंममशृण्वतः ६७ नारदउवाच प्रतिष्ठानपुरेरम्येहस्त्यश्वरथसंकुले नृप
तिर्धर्मनाथोऽभूत्सर्वधर्मनिषेवकः ६८ तस्यराज्येद्विजवरनाम्नालीलावतीमुने वेश्याजनप्रियारम्यारूपौदार्यगुणान्विता ६९ सावसिष्ठा
श्रमंपुण्यंजगामादिष्टयोगतः वसिष्ठमृषिमासीनंप्रणम्यनतकंधरा ७० कृतांजलिपुटाभूत्वाप्राहेदंपुरतोवचः भयानदत्तंनकृतंनोपवासः
व्रतंकृतं ७१ भक्त्यानपूजितःशंभुर्नचलक्ष्मीपतिर्हरिः सांप्रतंतस्यपूजायैधर्मंकिंचिद्वदस्वमे ७२ येनदुःखाब्धिमग्नाहंनिस्तरामिभवार्णवात्
एवंतस्याःसुबहुशःश्रुत्वातुकरुणंवचः ७३ कारुण्यात्कथयामासतामृषिःकौमुदीव्रतम् इत्युक्त्वासमुनिर्धीमान्सुरस्ताच्चतिरोदधे ७४ सापिश्रु
त्वामुनेर्वाक्यंधर्मयुक्तंसुदान्विता लीलावतीचवारस्त्रीदीपमालांचकारह ७५ तस्याःप्रभावेनमनोहरासाभोगाननेकान्बुभुजेमुनीश
विष्णोःप्रभावात्समवापधामसुदुर्लभंस्यादिहयोगिनांच ७६ ॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेकौमुदी
कथनंनामाष्टमोऽध्यायः ८॥ नारदउवाच अतःपरंप्रवक्ष्यामिवलेर्दिनमहोत्सवम् गोवर्द्धनेहरेःपूजांगोमहिष्यादिपूजनं १ पुराकृ
तयुगस्यादौवैरोचनिर्महासुरः एकेनापरिपूर्णानिहयमेधशतानिच २ चकारविधिवच्छक्रपदग्राहीसदक्षिणा ततस्तूर्णंवाजिमेधःप्रा
रब्धःशतशोमुने ३ तेनसंभारमाहृत्यदिवमाहर्त्तुमिच्छता अत्रांतरेभयत्रस्तःशक्रःक्षीरोदधिंययौ ४ निजाधिकाररक्षार्थंबृहस्पतिपुरःस
रः श्रीवासुदेवंतुष्टावपुराणंपुरुषोत्तमं ५ अनादिनिधनंविष्णुमवाङ्मनसगोचरम् जयदेवजगन्नाथजयजन्मजरापह ६ जयकाम
दभक्तानांप्रभोविष्णोनमोस्तुते इतिस्तुतःप्रसन्नात्माशक्रेणमधुसूदनः ७ आविर्भूत्वाहर्षयंस्तंप्रोवाचसपुरंदरम् कच्चित्तेकुशलंशक्रदेव

राजवरस्त्वमे ८ केननेमर्दितोसानोयदर्थंत्वमिहागतः इतिश्रुत्वाहरेर्वाक्यंशक्रःपरपुरंजयः ९ बभाषेकमलाकांतंश्लक्ष्णांमधुरयागि
रास्वामिन्संप्रतिदैत्येंद्रबलिनामत्वरिग्रहे १० कृतोद्यमोवाजिमेधः प्रारब्धोऽस्तिमहीतले तस्मात्वंमत्पदंरक्षभक्तोऽस्मियदिकेशव ११
कर्मणामनसावाचामयियद्यस्तितेकृपा इतिश्रुत्वाजगन्नाथोमृदुवाक्यंबिडौजसः १२ निजगादमरुत्वंतंवैकुंठश्चशतक्रतुम् त्वं
यात्रचिंतानोकार्यागच्छशीघ्रंनिजंपुरम् १३ ततःप्रणम्यविश्वेशंययौशक्रोऽमरावतीम् प्रहृष्यन्निवहृष्टात्मावृहस्पतिपुरोगमः ॥
१४ तस्मिन्गतेद्विजवरवासुदेवोजगत्पतिः वामनंरूपमाश्रित्यगतस्तत्रबलेर्मखे १५ यावत्पूर्णाहुतिस्तत्रनदत्तासाद्विजैर्मुने तावत्
प्रार्थितवांस्तत्रबलिंपृथ्वीपदत्रयम् १६ ततःसोपिपरीक्षांचतस्यकृत्वायथाविधि पात्रंविज्ञायतस्मैतद्दत्तवान्दैत्यपुंगवः १७ क्रमयि
त्वात्रिभुवनंविष्णुःसार्द्धद्वयेनवै पदेनमुनिशार्दूलपुरस्तात्प्रार्थमागतः १८ प्रोवाचबलिराजानंसार्द्धपृथ्वीपदद्वयं प्राप्तंमयासुवंदेहि
मत्वंपादार्द्धसंमितां १९ ततस्तत्परोराजाबलिर्दैत्योऽत्रविष्णवे धरित्रीसंनिभंपृष्ठंददौवैरोचनिर्मुने २० पदमाक्रमतातेनविष्णुना
सगतोबलिः पातालंमुनिशार्दूलनिवसत्यद्यापिदैत्यराट् २१ तुष्टस्यर्थंकार्तिकेनस्यशुक्लायाप्रतिपत्तिथिः साविष्णुनात्रदत्ताहिकौमुदीसं
स्मृताबुधैः २२ कुशब्देनमहीज्ञेयामुदहर्षेततोद्वयम् धातुज्ञैर्निगमज्ञैश्चसैवेषाकौमुदीस्मृता २३ विष्णुरुवाच बलिराजप्र
सन्नोऽस्मितुष्ट्यर्थंतवसांप्रतम् लोकाःसर्वेकरिष्यंतिश्रेयसेकौमुदीव्रतम् २४ मानुषंप्राप्ययेलोकंनकरिष्यंतितेव्रतम् भवितासि
ततस्तेषांभोक्तापुण्यस्यकर्मणः २५ ततःप्रभृतिलोकेस्मिन्कीर्तिनाकौमुदीमुने सर्वोपद्रवराशिघ्नीसर्वशोकापहारिणी २६ सर्वसौख्यकरीपु
ण्यासर्वकल्याणकारिणी पुत्रपौत्रप्रदालोकेसंपूज्यासुखमीप्सुभिः २७ तस्याविधानंवक्ष्यामिशृणुष्वात्रसमाहितः प्राप्तेगोवर्द्धने

कृष्णंपूजयेच्चप्रयत्नतः २८ तत्रगोवर्द्धनःपूज्योमंत्रेणानेनशौनक गोवर्द्धनधराधारगोकुलत्राणकारक २९ विष्णुबाहुकृतोच्छ्रा
यगवांकोटिप्रदोभव गृहस्यमध्येशालायांविशालायांसुपीठके ३० वलिमालिख्यदैत्येंद्रंवर्णकैःपंचरंगकैः सर्वाभरणशोभाढ्यंविंध्या
वल्यासहासितम् ३१ पुत्रपौत्रसुहृद्भ्रातृमित्रस्वजनसंवृतं प्रहृष्टवदनंसौम्यपद्मासंक्तकुंडलम् ३२ पूजयेत्तंविधानेननरोविगत
कल्मषः चंदनागरुकस्तूरीकुंकुमैर्गंधिभिःक्रमात् ३३ कमलैःकुमुदैःपुष्पैःकल्हारैस्तुसुकोमलैः सुफलैर्धूपदीपैश्चनैवेद्यैर्गुडपूप
कैः ३४ अर्चयेद्वलिराजानंमंत्रेणाद्विजसत्तम वलिराजनमस्तुभ्यंविरोचनसुतप्रभो ३५ भविष्येंद्रसुराराते पूजेयंप्रतिगृह्यतां वलिमुद्दि
श्यदीयंतेयानिदानानिमानवैः ३६ नूनंतान्यक्षयान्याहुःशश्वद्धर्मविदोजनाः योयादृशेनभावेनतिष्ठत्यस्यांतुमानवः ३७ सतादृशंफलंविद्या
द्दित्याहपरमेश्वरः तस्मात्प्रहृष्टैःसुप्रष्टैश्चकर्तव्याकौमुदीनरैः ३८ गीतवादित्रघोषैश्चवलिमुद्दिश्ययत्नतः ततोवलेर्गृहद्वारेस्थाप्योगोम
यमूर्तिभृत् ३९ मुनेश्रीवालगोपालस्तथागोवर्द्धनोमहान् वलिराजस्यराज्येऽस्यद्वारपालोभवत्प्रभो ४० निजवाक्यपालनार्थंत्वंसगोवर्द्ध
नगोपते इतिसंस्थाप्यगोपालंभक्त्यासंपूजयेन्मुने ४१ गोपालमूर्तेविश्वेशशक्रोत्सवविवर्द्धन गोवर्द्धनकृतच्छत्रपूजांमेहरगोकुले ४२
ततःप्रहर्षितोराजाकुंडलैःकटकैःशुभैः ग्रामैर्वृषभदानैश्चसामंतोनृपतिर्वरैः ४३ संतोषयेत्पदातींश्चदानसत्कारभोजनैः मंचारूढस्ततः
पश्येत्पदातीन्सकलांश्चतान् ४४ राजपुत्रांश्चारणांश्चमल्लान्नटभटांस्तथा वृषभान्महिषांश्चैवयुध्यमानान्परैःसह गावोविशेषतःपूज्यामंत्रे
णानेनपूजयेत् नमोगोभ्यःश्रीमतीभ्यःसौरभेयीभ्यएवच ४६ नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ततोऽपराह्णसमयेपूर्वस्यांदिशि
शौनक ४७ मार्गपालींप्रबध्नीयात्तुंगस्तंभेचपादपे कुशकाशमयींदिव्यांकंटकैर्बहुभिर्मुने ४८ भूषयित्वागजानश्वान्गोवृषान्महिषांस्तथा॥

मार्गपालि नमस्तुभ्यं सर्वानंदप्रवर्द्धिके ४९ तलेनवसुखेनाश्वा गजा गावः प्रयांतु नः स्नात्वा नत्सर्वमेवेह पूजां दैत्यपतेर्बले ५० रात्रौ स
वैः पुनः सम्यक् सत्यं द्यूतं समाचरेत् कार्त्तिके मासि शुक्लायां द्वितीयायां मुनीश्वराः ५१ कर्त्तव्यं तद्विधानेन ह्यपमृत्युनिवारणं ब्राह्मे मु
हूर्ते चोत्थाय चिंतयेदात्मनो हितं ५२ कृतनित्यक्रियो हृष्टः कुंडलांगदभूषितः विधिविष्णुं च रुद्रं च संस्थाप्योदुंबरे शुभे ५३ पद्ममष्टद
लं कृत्वा पूजयेत्स्वस्थमानसः पंचोपचारैर्गंधाद्यैर्नारिकेरादिभिः फलैः ५४ सरस्वतीं च वरदां वीणापुस्तकधारिणीम् यजेच्छुक्लांवरधरां ह
सवाहनसंस्थिताम् ५५ ततो मृत्युविनाशार्थं सालंकारां पयस्विनीं विप्राय वेदविदुषे गां दद्याद्वत्ससंयुतां ५६ अपमृत्युविनाशार्थं सं
सारार्णवतारिकां विप्र तुभ्यमिमां रौद्रीं धेनुं संप्रददेह्यहम् ५७ इति वाक्यविचारेण दद्याद्धेनुं द्विजन्मने तदभावे चोदकुंभं सवस्त्रं सहिर
ण्यकम् ५८ तस्याप्यलाभे विप्रेंद्र विप्राय सदुपानहौ दद्यादूर्जेऽथ शुक्लायां द्वितीयायां विशेषतः ५८ ज्ञातिश्रेष्ठान्वयोवृद्धान्विप्रान्शक्त्याभिवाद
येत् नारिकेरादिदानेन तोषयेत्स्वजनानपि ६० ततः स्वोदरसंपन्ना भगिनी या भवेन्मुने तस्या गृहं समासाद्य श्रद्धायुक्तोऽभिवादयेत् ६१ भद्रे भ
गिनि सुभगे त्वदंघ्रिसरसीरुहे श्रेयसेऽद्य नमस्कर्तुमागतोऽस्मि तवालये ६२ इति श्रुत्वा भगिन्यापि भ्रातुर्विनयपूर्वकं मृदुवाक्यं ततश्चास्य सत्कारः
क्रियते महान् अद्य भ्रातर्मतो भ्रातस्त्वत्तो धन्यास्मि मानद भोक्तव्यं तेऽद्य मद्गेहे स्वायुषे कुलदीपक ६४ कार्त्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीयायां
सहोदर यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहेऽर्चितः ६५ अस्मिन्दिने यमेनापि नारकीयास्तु मोचिताः अपिबद्धाः कर्मपाशैः स्वेच्छया पर्यटं
तितैः ६६ तस्माद्भ्रातोऽद्य मद्गेहे भोजनं कुरु कार्त्तिके इति संप्रार्थ्यते भ्राता भगिन्या मंदिरे भृशं ६७ भोजनं यत्नतः कुर्यादायुषे यशसे श्रिये॥
यतो यमद्वितीयायां विश्रुतायां जगत्त्रये ६८ अस्यां निजगृहे विप्र भुज्यते न बुधैरपि अतः स्नेहेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यमेव हि ६९ शाम्बयमद्वितीया

यांवर्षेवर्षेमुनीश्वराः ततःप्रहर्षात्सुमतेभगिन्यैसुविधानतः ७० स्वर्णालंकारवस्त्रान्नदानसत्कारमादरात् प्रदद्यान्मुनिशार्दूलप्रश्रया
वनतःसुधीः ७१ आशिषंप्रतिगृण्हीयान्नमस्कृत्यसमापयेत् सर्वाभगिन्यःसंतोष्याज्येष्ठानुक्रमतस्ततः ७२ वस्त्रान्नदानसत्कारैर्निजवित्तानुमा
ततः अभावेस्वस्वसुर्भ्रातृर्नूनंसस्वपितुःस्वसुः ७३ मुनेहस्तान्नभुंजीतभोजनंपुष्टिवर्द्धनं एवंकुर्वन्नरोविद्वान्नयातियमयातनां ७४ अपमृ
त्युंनवाप्नोतिसत्यंसत्यंनचान्यथा येभगिन्यःसुवासिन्योवस्त्रदानादितोषिताः ७५ नतेषांवत्सरोयावत्कलहोनरिपोर्भयं व्रतस्यास्यप्रभावेन
भूताःप्रेताश्वराक्षसाः ७६ दूरादेवपलायंतेधर्मराजेनमस्कृते योदेवोमहिषारूढोदंडमुद्गरधारकः ७७ वेष्टितःकिंकरैर्दुष्टैस्तस्मैयाम्या
त्मनेनमः येवैयमद्वितीयायाव्रतंकुर्वंतिमानवाः ७८ सप्तजन्मकृतंपापंतेषांसंक्षीयतेध्रुवं अपुत्रोलभतेपुत्रंधनहीनोधनंलभेत् ७९
भार्याहीनोलभेज्जायांसुरूपांकुलसंभवां यस्यांतिथौयमुनयायमराजदेवः संभोजितःपितृपतिःप्रियसौहृदेन तस्यांभुनक्तिसुतिथौ
हिगृहेभगिन्याः प्राप्नोतिवित्तमतुलंसचदीर्घमायुः ८०॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेनवमोऽध्यायः ९ नार
दउवाच शृणुब्रह्मन्प्रवक्ष्यामिमाहात्म्यंपापनाशनं अक्षयायानवम्यास्तुयज्ञोक्तंचत्रिविष्टपे १ तदहंतेसमग्रंचकथयिष्येतपोधन का
र्तिकस्यचशुक्लस्यनवमीयातिथिर्भवेत् २ अक्षयासातुसंप्रोक्ताव्यासाद्यैर्मुनिपुंगवैः तस्यांयत्करणीयंस्यात्तच्छृणुष्वहरिप्रियं ३ ब्राह्मे
मुहूर्तेचोत्थायचिंतयेदात्मनोहितम् कृत्वानैमित्तिकंकर्मपूजयेदिष्टदेवताः ४ विष्णोःपूजांविधायाथतथापंचोपचारतः प्रदद्यात
न्नैवेद्यंपक्वान्नंसलवंगकम् ५ जीरकंनागरंकृष्णमरिचंदाडिमंतथा नारिकेरफलंचान्यंकूष्मांडंचिंचिणीयुतं ६ संकल्प्यदद्याच्छ्रीकृष्ण
प्रीतयेतत्रशौनक ततआनीयकूष्मांडंपंचरत्नयुतंद्विज ७ तद्धिरण्ययुतंकार्यंबहुद्रव्ययुतंमुने संकल्प्यदेयंविप्रायप्रीयतामित्यथो

ध्वजः ८ स्वशक्त्यातोषयेद्विप्रान्नमस्कारेणवापुनः सूर्यग्रहेकुरुक्षेत्रेतुलादानस्ययत्फलं ९ तत्फलंलभतेमर्त्यस्तस्यांकूष्मांडदान
तः शशिग्रहेतुरेवायांतथाब्रह्मांडदानतः तत्फलंलभतेमर्त्यःकूष्मांडस्यतुदानतः पृथिव्यांयानितीर्थानितेषांस्नानाच्चयत्फलं ११ दानेतु
यत्फलंप्रोक्तंकूष्मांडस्यतुदानतः यावंतिकुरुतेमर्त्यःपापानिमुनिसत्तम १२ यान्तितावन्तिदानेनकूष्मांडस्यविधानतः महापातकयु
क्तोऽपितथाचैवोपपातकैः १३ नरोविशुद्धतामेतियमलोकंनपश्यति कूष्मांडदानकर्तारःसर्वलोकान्व्रजंतिवै १४ स्वेच्छयापर्यटन्त
श्चनानाभोगरताद्विजशौनकउवाच भूलोकेकेनदत्तंहिवदमह्यंमुनीश्वर १५ दानंकूष्मांडकमयंपरंकौतूहलंहिमे नारदउवाच
अंतर्वेद्यांमहाग्रामोयामुनस्यगिरेरधः १६ तत्राभूद्ब्राह्मणोरामशर्मासौलोकविश्रुतः तेनात्यंतंधनंधान्यमर्जितंप्रचुरंकिल १७ पुण्य
कार्यपरोदातावार्द्धकंसमुपागतः तस्यपुत्रौतुसंजातौनाम्नाकृष्णधनंजयौ १८ तयोर्मूर्ध्निगृहंत्यक्त्वाजगामतपसेवनम् तपःक्लिष्टशरी
रोऽसौवासुदेवमनाःसदा १९ प्राप्तवान्वैष्णवंस्थानंयत्रगत्वानशोचति ततस्तस्यसुतौमत्तौश्रियातरुणतांगतौ २० वारस्त्रीरतिभ
संसक्तौमद्यपानरतौसदा नवाक्यंशृणुतोमातुर्वृद्धानांतत्रतावुभौ २१ परस्त्रीभ्यःप्रददतुःसहस्रंचशतंतथा एवंद्रव्यंक्षयंनीतंताभ्यां
क्षणसुखायवै २२ मल्लचारणशैलूषवेश्याद्यूतप्रियेषुवै अपात्रेतद्धनंदत्तमुप्तंबीजमिवोषरे २३ द्रव्यक्षयाद्दुःखितौचौरमार्गा
नुसारिणौ रात्रौतुकोषपालेनधृतौराज्ञाविवासितौ २४ वनंगतौतुवास्तव्यमधर्मेनिरतौद्विज मांसाहारौतुसंजातौसिंहान्मृत्युमुपाग
तौ २५ एकस्मिन्दिवसेब्रह्मन्मृतौयमपुरंगतौ यमदूतोब्रवीद्वाक्यंधर्मराजंवदस्वनः २६ इहानीतौपापरतौकाशास्तिःक्रियतेविभो॥
किंकरस्यवचःश्रुत्वातदावैवस्वतोयमः २७ चित्रगुप्तंलेखमानंनराणांचशुभाशुभं रोषतक्रोधताम्राक्षएतौकुत्रक्षिपाम्यहं २८ चि

का॰मा॰ १९

त्रगुप्तोऽब्रवीद्वाक्यं किंकरान्शूलधारिणः एकश्च नीयतां स्वर्गे यत्र भोगाश्च शाश्वताः २९ अपरः क्षिप्यतां दूता नरके यातनाकुले चित्रगुप्तव
चः श्रुत्वा तदा दूतः प्रियंवदः ३० गृहीत्वा धनंजयं तुष्टः स्वर्गमार्गमुपागतः ते दूताः पापकर्माणं गृहीत्वा कलशर्मकं ३१ नरके पातयन्क्रुद्धा
भुं स्वकर्मकृतं द्विज धनंजयो व्रजन्मार्गे पश्यन्वै चित्रमद्भुतं ३२ अप्सरसस्तदागत्य अर्चयंत्यो महामुने पारिजातकृतां मालां शिरसि
प्राक्षिपन्मुदा ३३ इति दृष्ट्वा तदाश्चर्यं स्वर्गमार्गस्य शौनक पृष्टवान्यमदूतं स तदा सकरुणं वचः ३४ धनंजय उवाच एका माता पिता चै
कस्ताभ्यां जातौ सहोदरौ पापमेव कृतं ताभ्यां न वा तौ पुण्यकर्मणः ३५ एकस्मिन्दिवसे दूत मृतौ यमपुरीं गतौ कथं स नरके क्षिप्तो मम ज्येष्ठः
प्रियंवदः ३६ मम भावी कथं नाक एतन्मे छिंधि संशयं यमदूत उवाच पिता माता स्वसा भ्राता पितृव्यश्च धनंजय ३७ अदृष्टकर्मजास्तज्ञा
जन्मकर्मोपभुक्तये यथैकस्मिन्पादपे तु शकुनीनां समागमः ३८ पुत्रभ्रातृपितॄणां च तथा भवति संगमः तस्मान्न चिंता कर्तव्या व्रजमार्गेसु
रस्य वै ३९ पुण्यवांस्त्वं सुकृतिनां लोकं गंतासि मोऽस्तु ते धनंजय उवाच केन पुण्येन मां दूत नयसे त्वं त्रिविष्टपं ४० पापिष्ठो मत्परो ना
न्यो भविष्यति धरातले तस्य तद्वचनं श्रुत्वा यमदूतोऽब्रवीद्वचः ४१ यमदूत उवाच पाठकस्य प्रसंगेन गतस्त्वं यमुनां किल वाससी च गु
रोर्गृह्य कुशाग्रसमिधस्तथा ४२ आचार्यस्याज्ञया स्नानमूर्जे प्रातः कृतं त्वहं निमज्जनद्वयात्तत्र संजातं ते महत्फलं ४३ एकेन मज्जनेनाशु
पापान्मुक्तोऽसि जन्मनः मज्जनेन द्वितीयेन त्वमक्षयं स्वर्गमाप्नुहि ४४ नरके च तव भ्राता सहतां यमयातनां इति श्रुत्वा वचस्तस्य भ्रातृगौरवय
न्त्रितः ४५ धनंजय उवाच देवदूतं प्रणम्याहं मैत्रीं सप्तपदीं स्मरन् निर्गमं नरकाद्दूत भ्रातुर्मे जायते कथं ४६ यथाहं भ्रातृसंगेन स्वर्गया
मि प्रियंवद न भ्राता हि समो बंधुर्न भ्राता हि समं सखा ४७ न भ्राता हि समं मित्रं मातृजातं विशेषतः स्वर्गच्छामि विना तेन तत्र मे कार्यनिर्वृतिः

जा॰ १०

राम॰ १९

४८ यथाभ्राता हि संयोगस्तमुपायं वदस्व मे इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवदूतस्ततोऽब्रवीत् ४९ देवदूत उवाच पूर्वजन्मकृतं पुण्यं तद्ददस्व
धनंजय दानं नवम्यां कूष्मांड सूर्जे शुक्ले तिथौ द्विज ५० सहिरण्यं त्वया दत्तं सरत्नं च सवस्त्रकं देहि पुण्यं च तज्ज्ञात्रे दुःप्राप्यं स्वर्गिणाम
पि ५१ इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवदूतस्य सादरं ददौ कूष्मांडदानस्य पुण्यं भ्रात्रे धनंजयः ५२ पुण्यदानेन कृच्छ्रोऽपि नरकान्निर्गतस्तदा भ्राता
सह द्विजवरः प्राप्तवान्वैष्णवं पदं ५३ भोगोपभोगसंपन्नौ यमदूतविवर्जितौ अद्यापि तौ द्विजवरौ पुण्यशीलसुशीलकौ ५४ कृतभक्तौ भवेतां
वैकुण्ठाराधनमीयतुः नवम्यां कृष्णमुद्दिश्य शुक्लपक्षे विचक्षणौ ५५ कार्तिके मासि कूष्मांडं सहिरण्यं सरत्नकं कूष्मांडकस्य दानेन तार्य
ते कोटिपूरुषं ५६ एतत्ते कथितं विप्र कार्तिके नवमीव्रतं कूष्मांडदानमाहात्म्यं यच्छ्रुतं यमदूतकैः ५७ प्रबोधिन्यास्तु माहात्म्यं पापघ्नं पुण्यवर्द्धनं
भुक्तिदं सुबुद्धीनां शृणुष्व मुनिसत्तम ५८ तावद्गर्जंति विप्रेंद्र गंगाभागीरथी क्षितौ यावन्नायाति पापघ्नी कार्तिके हरिबोधिनी ५९ अश्वमे
धसहस्राणि वाजपेयशतानि च इत्यान्यैकोपवासेन प्रबोधिन्यां भवंति हि ६० पूर्वजन्मसहस्रेषु यत्पापं समुपार्जितं जागरे प्रबोधिन्यां द
ह्यते तूलराशिवत् ६१ विधिदिष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना तु यः तत्फलं न समाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तत् ६२ विधिहीनं तु यो विप्र करोति सुकृतं
नरः मेरुतुल्यं फलं तस्य लभते नात्र संशयः ६३ इति संचिंत्य संचिंत्य शश्वन्नरकभीरुभिः कर्तव्यो वैष्णवैर्भक्त्या जागरो हरिवासरे ६४ एकादश्यास्तु
रीयांशो द्वादश्याः प्रथमस्तथा हरिवासर इत्येतन्मानमुक्तं महर्षिभिः ६५ तस्या विधानं वक्ष्यामि यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा ऊर्जे दशम्यां संप
स्य भूमिशायी भवेन्नरः ६६ आचांतः सुप्रसन्नात्मा हविष्यान्नं सुसंस्कृतं रात्रौ तु पश्चिमे यामे समुत्थाय यथाविधि ६७ शौचादिकं च कृत्वास
उपविष्टः प्रसन्नधीः स्पृष्ट्वांगानि तथा द्विष्ट्वा चिरं ध्यायेज्जनार्दनं ६८ अतसीपुष्पसंकाशं कमलाक्षं चतुर्भुजं शंखचक्रगदाशार्ङ्गपीतवस्त्रं कि

का॰मा॰
२०

रीदिनं ६९ प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वलक्षणलक्षितं भानूदयेवाविह्लतोगृह्णीयान्नियमंततः ७० एकादश्यांनिराहारंस्थित्वाचैवापरेहनि
भोक्ष्येहंपुंडरीकाक्षशरणंमेभवाच्युत ७१ एवमुक्त्वाततःसम्यङ्नित्यकंकर्मधर्मधीः समापयेद्विधानेनविष्णुंसंपूजयेन्मुने ७२ प्रसुप्तंबो
धयेद्रात्रौनृत्यगीतादिवाद्यकैः वासुदेवकथाभिश्चश्रद्धाभक्तिसमन्वितः ७३ ब्राह्मणाःपूजनीयाश्चवैष्णवाद्याश्चमूर्तयः मंत्रेणानेनगोविंद
मभयंबोधयेद्बुधं ७४ महेंद्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वंदितपादपद्म बुध्यस्वदेवेशनिवासमत्रकुरुष्वभावेनसुखेनदेव ७५ इ
यंचद्वादशीदेवप्रबोधार्थंविनिर्मिता त्वयैवसर्वलोकानांहितार्थंशेषशायिना ७६ उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविंदत्यजनिद्रांजगत्पते त्वयानोत्थी
यमानेनउत्थितंभुवनत्रयं ७७ समुत्थितेततोविष्णौक्रियासर्वाप्रवर्तते उत्थितेदेवदेवेशेजागरेणानयेन्निशां ७८ तस्यांरात्र्यांव्यतीता
यांद्वादश्यामरुणोदये आरोग्यतैलस्नवेनमधुनास्नापयेद्धरिं ७९ ततोदध्नास्नपयेत्पानीरेणाचततःपरं ततस्तुविधिवत्स्नात्वाभोजयित्वा
द्विजोत्तमान् ८० अन्नप्रस्थततोदद्यात्स्वशक्त्यात्किंचिदेवहि ततस्तुकलशादेयायथाप्राप्ताःस्वलंकृताः ८१ जातीपल्लवसंयुक्ताःसफलाश्च
सकांचनाः चातुर्मास्यव्रतानांचकृत्वात्वच्छिद्रवाचनं ८२ चातुर्मास्येकार्त्तिकेचनियमोयस्ययःकृतः कथयित्वाद्विजेभ्यस्तंदद्याद्दत्वासद
क्षिणं ८३ दत्वाविसर्जयेद्विप्रंततोभुंजीतचस्वयं व्रतावसानेमंत्रश्चपठनीयोहिशौनक ८४ इदंव्रतंमयादेवकृतंप्रीत्यैतवप्रभो न्यूनं
संपूर्णतांयातुत्वत्प्रसादाद्रमापते ८५ जागरस्यहिमाहात्म्यंगीतवादित्रनर्तनात् हरेःप्रीतिकरंरात्रौवक्तुंनैवात्रशक्यते ८६ यत्प्रभावा
च्चंद्रकांतिःकृष्णसंगमवापह शौनकउवाच काचंद्रकांतिःकुत्रासीत्कथंजागरणंकृतं ८७ वदविस्तरतःश्रोतुंत्वन्मुखादुत्सुकावयं ना
रदउवाच पूर्वमन्वंतरेचासीत्पांचालेषुमनोरमं ८८ हरेरायतनंराज्ञाकृतंप्राचीनवर्हिषा तत्रोत्सवाःप्रतिदिनंपूजाविष्णोर्महाधनाः ८९ अभवं

जा॰
१०

राम
२०

स्तत्रदानंचनृत्यगीतादिमंगलं यथाप्रतिष्ठितासाचप्रतिमावैमनोहरा ९० यस्याहरिःसन्निधत्तेकोटिकंदर्पसुंदरः तत्रासीन्नृत्यनिपुणा
वेश्यादेवांगनोपमा ९१ चंद्रकांतिरितिख्यातासर्वलोकविमोहिनी यदातस्याःसमारंभोनृत्यस्यहरिसन्निधौ ९२ विशेषतःसमायांतिज
नाःशून्यंभवेत्पुरं कदाचित्कार्तिकेमासिप्रबोधिन्यांप्रजागरे ९३ ननर्तसविशेषंसापश्यंतीप्रतिमांहरेः तत्रकृष्णस्यसान्निध्याद्रूपशृंगारमोहि
ता ९४ कृष्णप्रीत्याद्रवच्चित्ताचित्तेचैतदचिंतयत् अपिनारायणःसाक्षादयंनाद्भुतरूपवान् ९५ मयासहैवंनृत्येनकथंसंभाव्यतेत्विदं इ
त्थंमनोरथंबालाकुर्वतीनृत्यमुत्सुका ९६ प्रीत्याचसर्वांतांरात्रिमेवंनृत्यैरिवाहूयत् ततःप्रातश्चतत्पुण्यंजागरस्याक्षयंह्यभूत् ९७ तस्मि
न्मनोरथंकाम्यंयच्चकाराथनृत्यती ततःसाकतिभिर्वर्षैस्तत्रन्यस्त्वाकलेवरं ९८ चित्तंहित्वाखिलंस्वर्गंगत्वादेवांगनाभवत् तत्रापिगी
तनिपुणानृत्याभिनयकोविदा ९९ रेमेरम्येविमानाग्रेरूपयौवनशालिनी एकदास्फाटिकेकुड्येरूपंस्वंददृशेंऽगना १०० चिंतयामासमे
रूपंसंयोग्यंनैवकर्हिचित् इत्युदीरितमात्रेतुपूर्वजन्ममनोरथं १०१ सस्मारसातुतन्वंगीविष्णुनासहनर्तनं नपतिंकामयामासब्रह्मचर्ये
स्थिराभवत् १०२ नामेवमूर्तिंध्यायंतीचंद्रकांतिर्वरांगना कृष्णगाथांप्रगायंतीरोमांचोद्भेदलक्षणा १०३ एतदंतरमेवासौभूमिर्भारप्र
पीडिता भूमेर्भारावतारार्थमवतीर्णोजगत्प्रभुः १०४ कृष्णक्रीडार्थमादिष्टाब्रह्मणासुरयोषितः राघवस्यावतारस्यएकभार्याव्रतंमहत् ॥
१०५ आसीत्तदत्रतत्प्रीत्यैसंभवंतुसुरस्त्रियः कैशोरेगोपकन्यास्तायौवनेराजकन्यकाः १०६ भूत्वादेवांगनासर्वाजनयंतुमुदंहरेः इत्याज्ञ
प्ताचंद्रकांतिर्वव्रेपूर्वमनोरथं १०७ वहुष्वन्यासुकांतासुदिव्यमोहनरूपधृक् मयासहप्रीतिमांश्चनृत्यतांभगवान्हरिः १०८ तथेत्युक्त्वावतारा
र्थंब्रह्मणाश्वसमादिशत् वृषनाभःसखाह्यासीच्छ्रीभानुरितिविश्रुतः १०९ चंद्रकांतिस्ततःपुण्यागोपःकोपिव्रजेस्थितः तस्यकन्यावरारोहा

प्रभावत्याख्ययाभवत् ११० यार्चंद्रकांतिरित्यासीदित्येतत्कथितंमया सुबोधिनीजागरपुण्यवैभवात्समन्नर्ईशो विधिवाक्यसत्यकृत् १११
चकाररासोत्सवनर्तनंतयावृंदावने॰न्याभिरपीहमाधवः व्रजेप्रियत्वमाविष्णोराधिकागोपिकासुच ११२ कार्तिकेपूजनीयाचश्रीदामोदर
संयुताद्विजंदामोदरंकृत्वातत्पत्नींराधिकांतथा ११३ कार्तिकेपूजनीयौतौसालंकारैश्चभोजनैः वृंदावनाधिपत्यंचदत्तंकृष्णेनतुष्यता ११४
त्वत्कुंडेकार्तिकेष्टम्यांस्नातायाद्देकादशीतिथौ इत्येवकथितंसर्वयत्पृष्टो॰हमिहत्वया ११५ ॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मना
रदसंवादेदशमो॰ध्यायः १० ॥ नारदउवाच अतःपरंप्रवक्ष्यामिसुनयोभीष्मपंचकं यथावर्षसहस्रंतुसमभ्यर्च्यजनार्दनम् १ पुराप्राप्तंव्रतमिदं॰
सर्वयज्ञफलप्रदं एकादश्यांतुगृण्हीयाद्व्रतंपंचदिनात्मकं २ व्रतीस्नात्वाविधानेनमध्यान्हेतुयथापुनः गृह्णीयाच्चकुशैःस्नानं देवानांचैवतर्पणं ३
धौतवासाश्चमौनेनहरिमर्चेज्जितेंद्रियः भूमिशायीतथाखंडदीपान्पंचस्वहःस्वपि ४ नमस्तेदेवदेवेतिजपेदष्टोत्तरंशतं पूजांतेचार्घमावे॰
द्यजुहुयात्तिलसंयुतं ५ घृतपायससंमंत्रेणासुविधानकृतेनच पूजाविधौविशेषश्चदिनेष्वेवचपंचसु ६ प्रथमेदिवसेपद्मैर्हरेःपादौप्रपूज
येत् द्वितीयेबिल्वपत्रैश्चजानुनीचतृतीयके ७ आनाभिजानुतःपत्रैस्तुलस्याःपूजयेद्धरिं बाणबिल्वजवैश्चैवततःस्कंधौप्रपूजयेत् ८ जातीपु
ष्पादिभिर्गंधैर्मालतीकुसुमैःशिरः एकादश्यामथाभ्यर्च्यमंत्रवद्गोमयंपिबेत् ९ द्वादश्यांचगवांमूत्रंत्रयोदश्यांतथापयः चतुर्दश्यांघृतंप्रा॰
श्यंपौर्णमास्यांतथादधि १० पंचस्वपिदिनेष्वेवविधिवत्स्नानमाचरेत् पंचमेदिवसेविप्रान्सादरंभोजयेद्व्रती ११ पायसेनापिपक्वान्नेकृत्वातद
पिपंचधा नंदायांकांचनंदत्वाद्वादश्यांव्रतमुत्तमं १२ गोदानंचत्रयोदश्यांरिक्तायांघृतपायसं सितासिततिलांश्चैवपूर्णायांतुद्विजोत्तम १३ द
त्वावेदविदेस्वर्णसहितान्हरितोषकृत् गात्राभ्यंगंशिरो॰भ्यंगंमधुमांसंचमैथुनं १४ तांबूलान्नतवादादिदंतधावनंवर्जयेत् षष्ठे॰ह्यदिवसेछि

द्वंवाचयित्वाथ्यबंधुभिः १५ विप्रशेषान्नभोजीस्याद्भीष्माहःसुचपंचसु दद्यादर्घ्यंविधानेनमंत्रेणानेनशौनक १६ सत्यव्रतायशुचये गां
गेयायमहात्मने भीष्मायचददाम्यर्घमाजन्मब्रह्मचारिणे १७ वसूनामवतारायशंतनोरात्मजायच अर्घंददामिभीष्मायसोमवंशोद्भवायच
१८ वैयाघ्रपदगोत्रायशांतनुप्रवरायच अनपत्यायभीष्मायतस्मैदद्याज्जलांजलिं १९ सर्वेणानेनमंत्रेणतर्पणंसार्ववर्णिकं द्वापरस्ययुग
स्यांतेप्रोक्तंकृष्णेनपृच्छते २० भीष्मायचकृतंतेनतन्नाम्नाप्रथितंभुवि शौनकउवाच कदाससङ्गतिस्तेनगांगेयस्यमहात्मनः २१ कृष्णेनसह
देवर्षेकदापृष्टश्चकेशवः नारदउवाच यदात्वगाद्दौत्यविधौकुरून्हरिर्विभुः पृथासूनुभिरीरितश्च २२ गृहंगतोविदुरस्यातिथेयंसशंकितःप्राप
महाप्रमोदं अहोअयंकारुणिकोवतेश्वरस्त्यक्त्वामहाराजगृहंमहोदयं २३ यदेषदासीतनयंकुलाधमंमामग्रहीदात्मतयाकृतार्चनं सज्जनः
जातिर्नचपंडितत्वंनवाधनित्वंनचशूरताच २४ सर्वेगुणाअस्यनतोपकारणंप्रेमैवकारुण्यनिधिःप्रवर्तते इत्यानुरागहृदयोविदुरस्त
दीयपादावनेजनकरोरपआचचाम २५ दध्रेशिरस्यथशिवोद्रुहिणादयश्चयद्धिङ्घ्रिनाप्यमलवेनसएकपत्यं उपविष्टंकृतातिथ्यंश्रुत्वाभीष्मोम
हामनाः २६ जगामहरिसान्निध्यंतद्दर्शनसमुत्सुकः भीष्ममागतमालोक्यप्रीत्यावैयदुनंदनः २७ समुत्थायाभिवाद्याथबाहुभ्यांपरिषस्वजे उपवि
श्यासनेस्वेस्वेकृष्णभीष्मौपरस्परं २८ पप्रच्छतुःशिवंप्रीतौकथयामासतुःकथाः भीष्मउवाच यद्भ्रूविजृंभपरिरंभसमाकुलासौविश्वंकरोतिवि
करोतिचहंतिमाया २९ ब्रह्मादयोयमिहवेदितुमीशतेनसोयंप्रयातिकुरुदौत्यकरोविचित्रे भगवन्निदंमहच्चित्रंचित्तेनःप्रतिवर्तते ३०
साम्येनवर्तमानोऽपिजीविनांयःसुहृत्सखा अप्यन्यैःसेव्यमानोयमेषांदौत्यकरःस्वयं ३१ बंधुस्त्वंचगुरुस्त्वंचसुहृत्त्वंशंकराश्रयं मंत्रित्वंका
र्यकारित्वंकरोषियदुनंदन ३२ तत्कथ्यतांकारणंभोकिमेभिर्वशगःकृतः श्रीकृष्णउवाच गंगाधरमहाभागनप्रष्टव्यमिदंत्वया ३३

का

भा: गोपनीयमिदंगुह्यंभक्तियोगेनवश्यकृत् भीष्मउवाच त्वदाराधनधर्मश्चकतिधासवतोदितः ३४ दंभहिंसादिदोषैश्चह्यधर्मःप्राणिनामुत जा

१२ धर्मेश्वावश्यकोलोके विघ्नबाहुल्यसंगतः ३५ नमतीत्यमभवेत्किंवानद्कुंत्वमिहार्हसि नारदउवाच तेनैवभीष्मेणतदायदाहरिःपृष्टस्तुलोकस्यहि ११

तायचाह ३६ संसारिणांजन्ममृत्यादिदुःखंविद्दंद्यासिंधुरमांविभक्तिः श्रीकृष्णउवाच अवंतीसंभवाःपंचपूर्वकल्पेद्विजोत्तमाः ३७ कविःसु

विर्देढोदांतोहंसोनामतथैवहि वेदविद्यासुनिपुणारूपयौवनशालिनः ३८ गंधर्वविद्यामाधीत्यपंचैवातिमनोहराः सांगीतकंपाठयं

तिकंठैःकिंनरगीतयः ३९ एकदाचसुवीरस्यराज्ञोमधुपुरींविभोः श्रुत्वासंगीतनिनदंसमायातादिद्दक्षवः ४० स्नात्वातीर्थेतथोपोष्यस्थित्वा

दिनचतुष्टयं राज्ञएवांभोग्यपत्नीनाम्नाकादंबिनीवरा ४१ संगीतविद्यानिपुणारागकंठस्तुकिन्नरी स्त्रियएवहितांबालांनर्तयंतिनृपाग्रतः४२

द्रष्टुंनप्राप्यतेतस्यानृत्यमन्यैःकथंचन यतस्तच्छ्रूयतेवाद्यंनृत्यंनालंसुगीतकं ४३ तत्रगत्वासुविविशूराज्ञोदर्शनकांक्षिणःश्रुत्वासम्यग्ध्वा

निंविप्राःपप्रच्छुःकंचनांतरं ४४ विप्राऊचुः अहोवनात्रसान्निध्येराज्ञोनास्यास्तिकोविदःसंगीतज्ञायतोनृत्यवाद्यस्यापितथाद्दत्ता ४५ द्विवि

तस्यंतरंतात्तकर्तव्यंनचविद्यते तंत्रीद्वयंतुशिथिलंकिंनरीवस्ततेपरं ४६ तालंचपार्श्विनादत्तमित्याहुसंसभाशठं तच्छ्रुत्वाराजसा

न्निध्यंगत्वाराज्ञेन्यवेदयत् ४७ तच्छ्रुत्वापंचतेविप्राःसमाहूतागृहांतरे प्रविष्टास्तत्रयत्रासीनाम्नाकादंबिनीस्थिता ४८ राज्ञश्चाशि

ष्यआवेद्यविविशुस्तत्रचासने तेषांचविज्ञायविशेषविज्ञनांविशेषतः सारभताथनर्तनम् ४९ तद्गीतलास्याभिनयैर्मनोहरैःकृतास्त राम

द्दैकाग्रधियःसभासदः इत्येवमालोक्यतदीयमद्भुतंरूपं गुणांस्तेगुणिनोविमोहिताः ५० साचापितेषांगुणविज्ञतांपरंरूपंमनोहारिचजानतां २२

तिउत्थितेराज्ञितेचापिकृष्णाज्ञाज्ञोगृहाद्बहिः ५१ गताःसापिसलज्जाकादंबिनीविरहातुराराजभीत्यागृहांतस्थावभूवविमनाभृशं ५२ततो

इत्यादिवचनैरात्मसात्तान्मनःप्रियान् एकैकोवीरहोविद्याःसर्वशोमेप्रयच्छतु ५३ नगरस्यापरेभागेयमुनायास्तटंमहत् अनंततीर्थवि
ख्यातंतत्रदेवालयोरहः ५४ नगराद्दूरतोरम्यंनिर्जनंवनवेष्टितं तत्रगच्छेद्भवत्स्वेकोथास्येहंछलवेषधृक् ५ वीणांरागस्तन्नृत्यस्यदर्श
यिष्यामिकौतुकं भवंतोऽपिक्रमेणैवदर्शयंतुस्वकंगुणं ५६ सहैवगमनेराज्ञोज्ञाताःस्युस्तद्धिहेकलः भवताकोपिगच्छेतेत्युक्तंदूत्या
तदीप्सितं ५७ एवमुक्त्वातुसादूतीगताराजगृहंपुनः तेकौतुकसमाविष्टास्तत्संयोगायसत्वराः ५८ तेषांविवदतांतत्रसमायातःप्रियःसखा॥
वेदवेदांगवित्कश्चित्कृतातिथ्यश्चतैःपुनः ५९ ज्ञात्वासंविदमारोग्यंपप्रच्छस्तेकुतूहलात् विप्राऊचुः सखेराज्ञोभोग्यपत्नीसमासक्तास्ति
नोगुणैः ६० भवदग्रेचनोगोप्यमस्तितत्वन्नतोवद इतितेषांवचःश्रुत्वासखातेषांमहाभिषक् ६१ उवाचवचनंतथ्यंहितंपथ्यंसुहृ
त्तया विप्रापरस्त्रियंप्राप्यमात्तबुद्ध्याभजंतिये ६२ तेसम्यक्कथितादेवैःस्वर्गवासंवसंतिनि येस्वकीयांपरित्यज्यस्त्रियंदेवाग्निसाक्षिकीं ६३
भजंतिकामुकाःप्रीत्यातेयांतिनरकंकिल राज्ञएषाभोग्यपत्नीविशेषाज्ज्ञानकोविदाः ६४ नतामर्हथभोविप्रागंतुंकामितयाबुधाःस्त्रियो
भवद्भिःसंत्यक्ताःकुलीनास्तरुणीःशुभाः ६५ पितरस्त्वसिमायांतियत्सुतैर्जातमात्रकैः नताःकथंचनत्याज्याःप्रेत्ययानत्यजंतिहि ६६हि
तंभार्य्यादरिद्रेऽपिविपत्स्वपिहितंसदा ज्ञानवान्यस्त्यजेत्तांहियास्वीमरणस्यतु ६७ धिग्धिगित्येवयांलोकावदंतिपुरुषाधमान्जी
वंतोऽपिमृतास्तेस्युर्येपरस्त्रीरतानराः ६८ मानुष्यंप्राप्यदुष्प्राप्यंयेत्यजंतिनराःस्त्रियं चिंतामणिंकरेप्राप्तंत्यक्त्वाकाचंसमालभेत्॥
६९ इत्येवमुक्त्वाविप्रांस्तेयदातद्वाक्यमुत्तमं नचक्रुश्चतदासोपिजगामचययेच्छकं ७० कविप्रभृतयस्तेऽथकामाशक्तेंद्रियव्रजाः
॥ कादंबिन्यानृत्यगीतेसंस्मरंतःस्थितास्तदा ॥ ७१ ॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादेपंचभीष्मेएकाद

शोऽध्यायः ११ ॥ ब्रह्मउवाच तस्मिन्कालेतुगांगेयमुनिरेकोमहानभूत् ऋतधामेतिनामास्यवेद वेदांगपारगः १ मथुरामाश्रितोदूरंव
नेनिष्ठत्यहर्निशं नैष्ठिकोब्रह्मचारीचमदाराधनतत्परः २ भिक्षार्थमपिनायातिपुरंदुःसंगशंकितः भीष्मपंचदिनेष्वेषुतस्मिन्देवालये।
शुभे ३ ममपूजांप्रकुर्वाणोव्रतमेकंचकारसः तेषुपंचसुविप्रेषुकविर्नामजगामह ४ एकादश्यांरहस्तस्यानृत्यरागदिदृक्षया आदौ
गत्वामुनेःपार्श्वेकविर्दृष्ट्वाविधिंततः ५ पूजयामासविधिनामांतेनैवसमाहितः ततःक्षणेनाथयानारामाकादंविनीतदा ६ मुनिंनत्वा
चपूजादिदृष्ट्वापूजांसमग्रहीत् मत्प्रीतियुक्तचित्तेनसविशेषंजगौतदा ७ ऋतधाम्नस्तुतेवाणींमधुराक्षरसंमितां तस्यसंगतिमासाद्यमह
तोऽपितयोस्तदा ८ मनःशुद्धिरभूत्कामोमङ्क्षुनयात्तुनयेनतः रात्रौजागरणेनृत्यंकृत्वाकादंविनीकविः ९ वीक्ष्याथगायतोऽग्रेमेद्रुतचित्तोज
हर्षसः गोमयाचरणंतेनदृष्ट्वाचमुनिनाकृतं १० कविनापिकृतंपश्चात्प्रातःसंज्ञानपालनं कविरागात्यनगरंस्वंधनंभूषणानिच ११
द्वादश्यामददात्सर्वंविरतोभक्तिहृद्वये द्वितीयेदिवसेप्रागाच्छुचिस्तस्यादिदृक्षया १२ द्वादश्यांप्रातरेवासावासीनंददृशेमुनिं तेनापि
पूजितोऽहंवैशुचिनामुनिसंगमः १३ तथैवगीतनृत्यादिभक्तिरस्याप्यजायत गोमूत्रंतेनपीतंस्वदृष्ट्वाचप्रसन्नंमुनिं १४ वचनादृततात
त्रददृशेतांमनोहरां सातस्यददृशेनृत्यंगीतंपश्चात्स्वयंतथा १५ चक्रेस्वकीयलावण्यंगांधर्वंशुचयेर्पयत् पूजनान्मेव्रताच्चापिमुनिसं
गतितःशुचिः १६ विरक्तइंद्रियार्थेभ्यःसर्वस्वमददात्प्रभुःइदंचोवाचवचनंमङ्क्षुनामनसाप्रिया १७ अहोमोहस्यमाहात्म्यंविषयासक्तचेतः।
सां यत्सेवयामहानंदरसमग्नाविदंतिनः १८ संसारदुःखजंतापंनापेक्षंतेस्वशक्तितः तंहरिंहृदयस्थंचत्यक्त्वान्येमृगतृष्णिकां १९
धावंतेहिततःकिंतुमहद्दुःखकरंपरं तथापितादृशींवालांनृत्यगीतमनोहराम् २० दृष्ट्वापिनाभवत्क्षोभोमहानंदयुतोमुनेःतस्मात्तुस्तज्य

स्वंसर्वतोजगदीश्वरे २१ कुर्यात्प्रेमभवांभक्तिमेकएकजनस्त्विनौ एवमेवत्रयोदश्यांदृढोऽगात्तद्दिदृक्षया २२ मुनिनातत्रसंगात्यपूजा
यांदत्तचेतनः पयःपीत्वामुनेःशेषंरात्रौभक्तिपरायणः २३ तस्यानृत्यंचगीतंचदृष्ट्वारागविवर्जितः शुचेर्वचनमाकर्ण्यगतस्तीर्थांतरंप्र
ति २४ दत्वासर्वस्वदानंचममभक्तिपरायणः चतुर्दश्यांगतोदांतोमुनिसंगतितस्तदा २५ नृत्यगीतोत्सवंकृत्वाममपूजांविशेषतःमु
निशेषंघृतंप्राश्यशुद्धसत्वोऽभवत्क्षणात् २६ तस्यागुणांश्चरूपंचदृष्ट्वायापिविरक्तिमान् तथैवोत्थायदत्वाचदानंसर्वसमर्पणं २७ नि
ष्किंचनोभक्तियुतोगतस्तीर्थांतरंप्रति पौर्णमास्यांततोहंसोदृष्ट्वासीनंमहामुनिं २८ नत्वास्नात्वातटेनत्वाधात्रीछायांसमाश्रितःतेभ्यश्चा
भ्यधिकोभूत्वाततोऽगान्मुनिसन्निधौ २९ तथैवमुनिसंगत्वात्मत्पूजानर्तनंकृतं सचक्रेतांददर्शाथततयामोहितोह्यभूत् ३० दधिम
थ्याथमुनिनासहैवासीद्विरक्तधीः दत्वासर्वस्वमत्रैवगतस्तीर्थांतरंप्रति ३१ कादंविन्याःश्रुतंराज्ञागमनंविष्णुमंदिरे निगृहीतापुनर्देवं
तुंदेवालयंवलात् ३२ शुचिस्तुदद्यात्सकलंस्वमागात्पुनर्मुनेर्कृतधाम्नोविशुद्धःतस्मिन्वनेकृतवासस्तथैवमदीयमाराधनमाचकारसः ३३
क्रमेणपंचभिर्विप्रैःकृतमाराधनंमम मथुरायांचगांगेयतैरेवमुनिपुंगवैः ३४ मदीयःपूर्वकल्पेंऽशःकृतधामाभवत्पुनःनारायणइतिख्या
तोवदर्यांतपआस्थितः ३५ कविनामानरोजातोनारायणसहायवान् सएवपूर्वदानेनलेभसेंद्रपदंशुभं ३६ यंचानामथविप्राणांप्रियाकादं
विनीशुभा सुवर्णनाम्नासीद्गतपान्नृत्यादिपरितोषणात् ३७ धात्रीछायाकृतश्राद्धोहंसोजातोयुधिष्ठिरः पौर्णमास्यांविशेषेणजागराच्चमदं
शकः ३८ अर्जुनःकविरासीद्यःपूर्वंचापिसुहृन्मम दृढएवासमहावीर्योभीमसेनोव्यजायत ३९ सहदेवःशुचिर्दांतोनकुलोऽभून्महाभुजःपु
राचीर्णव्रताद्येषात्वभूत्कादंविनीप्रिया ४० व्रतेनास्मिवशीह्येषांदाताहंपदमव्ययं भीष्मपंचकमेतन्मेकरिष्यतिव्रतंशुभं ४१ मथुरायांतथा

त्रतस्यमुक्तिःकरेस्थिता नारदउवाच श्रुत्वैवंव्रतमाहात्म्यंभीष्मःपरमविस्मितः ४२ प्रत्यक्षंचचकारेदंततःख्यातंतदाख्यया तद्व्रतस्यैवमा
हात्म्यात्पतितःसंगरेयदा ४३ प्रादुरासीत्तदाकृष्णोवनमालीचतुर्भुजः प्रसादसुमुखःप्रीतस्तमुवाचसहृत्तमः ४४ यावद्वर्तामिदे
हंत्वंतावत्तिष्ठामितेपुरः एवंयःकार्तिकेस्नायात्कुर्याद्दीपादिकंतथा ४५ ससालोक्यमायातिश्रुत्वेनांपरमांकथां शक्तःकुर्यान्मुनिश्रे
ष्ठचातुर्मास्यव्रतंशुभं ४६ अशक्तःकार्तिकंकुर्यात्संचभीष्ममथापिवा सकुर्यात्कार्तिकीमेकांयस्त्वशक्ततमोमतः ४७ दुर्लभाकार्तिकीलोकेस
र्वधर्ममयीतिथिः कार्तिकींनगृहेकुर्यात्तीर्थेकुर्यात्प्रयत्नतः ४८ गंगायांमथुरायांवासूकरेपुष्करेऽपिवा स्नातोनियममास्थायगच्छेद्विष्णुपुरं।
नरः ४९ सुवर्णवस्त्रधेन्वन्नदानान्यत्रमनीषिभिः दत्तान्यक्षयतांयांतिविष्णोस्तुष्टिकराणिच ५० वैवाहिकंतुलस्याश्चकर्तव्यंकार्तिकीतिथौ
व्रतंत्रिरात्रमुद्दिश्यशुचिस्नातमानसः ५१ हरिंकृत्वाथसौवर्णंतुलस्यासहितंशुभं पूजयेद्विधिवद्भक्त्याव्रतीतत्रदिनत्रयं ५२ वस्त्राभरण
शोभ्यादिवैवाहिकमुपायनं तुलस्यासहितायाथविप्रायवैविनिवेदयेत् ५३ एवंयथोक्तविधिनाकुर्याद्वैवाहिकंविधिं तुलस्याःकार्तिके
मासिसर्वपापैःप्रमुच्यते ५४ कार्तिकस्नानसमाकाचित्तिथिरन्यास्तिकार्तिके अत्रैवोदाहरंतीमभितिहासंपुरातनं ५५ यस्यश्रवणमात्रेण
सर्वपापैःप्रमुच्यते पुरादेशेशूरसेनेशिवशर्माद्विजोभवत् ५६ सत्यवादीस्वधर्मेराधनार्जनपरायणः ब्रह्मविद्यापरोनित्यंपितृभक्तोऽति
थिप्रियः ५७ तीर्थाटनरतःशांतोविष्णुभक्तोविमत्सरः तीर्थयात्राप्रसंगेनजगामासाववंतिकां ५८ तत्रदृष्ट्वामहादेवंमहाकालाभिधंततः
ददर्शवेदविदुषांविप्राणांतत्रमंडलं ५९ शुश्रावतेभ्योमाहात्म्यंकार्तिकस्यतदाद्विजः विशेषात्पुष्करक्षेत्रेशौकरेमाथुरेपुरे ६० तच्छ्रुत्वा
श्रद्धयाविष्टःशिवशर्माद्विजोत्तमः मथुरामगमद्भक्त्यापूजयामासकेशवं ६१ सस्नौसकार्तिकस्तत्रद्वादशीमवरत्पुण्ये ततःसपुष्करेतीर्थे

गत्वा सस्नाय कार्तिकान् ६२ ततः सम्भूकरे क्षेत्रे श्रद्धया कार्त्तिकत्रयं अथाजगाम विप्रोसौ स्वगृहं प्रीतमानसः ६३ पुत्रपौत्रैः परिवृतो वि
चित्रा अवदत्कथाः ततः प्रभृति कार्त्तिक्यां कार्त्तिक्यां याति शूकरे ६४ कदाचित्कार्तिकीं कृत्वा शूकरे याद्वे शुभे गच्छन्नाहं पथि श्रान्तो वने पश्यन्ज
लाशयं ६५ क्षुत्क्षामकंठो विप्रोऽसौ श्रमसंतापमूर्छितः जलाशयं समासाद्य अवगाह्यातिसुंदरं ६६ पीत्वा तदुदकं शीतं पद्मगंधाधिवा
सितं ततोऽवतीर्य सलिलाद्विमलात्प्रीतमानसः ६७ तीरे न्यग्रोधमद्राक्षीच्छीतच्छायं मनोहरं महाविटपिनं हृद्यं पक्षिसंघातनादितं ६८ व
नस्यनस्य सर्वस्य केतुभूतमिव स्थितं तं महातरुमासाद्य निषसाद द्विजोत्तमः ६९ अथ प्रेतं ददर्शासौ क्षुत्तृषाव्याकुलेंद्रियम् ऊर्ध्वकेशं मलि
नं रूक्षं निर्मांसं भीमदर्शनं ७० स्नायुबद्धास्थिचरणं धावमानमितस्ततः अन्यैश्च बहुभिः प्रेतैः समंतात्परिवारितं ७१ तं दृष्ट्वा विकृतं घोरं वि
स्मितो भूत् द्विजोत्तमः प्रेतोऽपि दृष्ट्वा तां घोरामटवीमागतं द्विजं ७२ तदा हृष्टमना भूत्वा विप्रांतिकमुपागतं अब्रवीत्स तदा विप्रं प्रेतराजो
द्विजं वचः प्रेत उवाच प्रेतभावो मया त्यक्तः प्राप्तोस्मि परमं सुखं त्वद्दर्शनान्महाप्राज्ञ मत्तो धन्यतरोऽस्ति न ७४ कोयंन्यत्काहमेचेतः
शांतिं यातं सुदारुणं मामुद्धर द्विजश्रेष्ठ मग्नं वै दुःखसागरे ७५ शिवशर्मोवाच कस्त्वं रूपकरालास्यस्त्वं प्रेत दृश्यसे कथय।
स्वसमभीत्याय यात्वं चासि तत्वतः ७६ प्रेत उवाच कथयामि द्विजश्रेष्ठ सर्वमेवादितस्तव प्रेतत्वकारणं श्रुत्वा दयां कर्तुमर्हसि ७७॥
॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये ब्रह्मनारदसंवादे द्वादशोऽध्यायः १२॥ प्रेत उवाच वैदिशं नाम नगरं सर्वसंपत्समन्वितं
नानाजनसमाकीर्णं नानारत्नविभूषितं १ नानापण्यसमायुक्तं नानावृक्षसमाकुलं तत्राभवद्वीरसेनो राजा धर्मपरायणः २ पितृदेव।
द्विजातीनां पूजासु निरतः सदा तस्य राज्ञः पुरोधा आसीन्मेधातिथिरिति श्रुतः ३ तस्य पुत्रोऽहमभवन्नाम्नात्तु शुकनासिकः वास्ये पित्रा पाठि

का

म्मा·
अ॰ २५

तोऽहंसर्वविद्याःशुभावहाः ४ अथयौवनमासाद्यराजसन्मानगर्वितः दुष्टसंगन्निमासाद्यकुकर्मनिरतोऽभवं ५ पितृव्यभ्रातृबंधूनां
हृतंवैवहुधाधनं मयादत्तंचवेश्याभ्योदासीभ्यःपापकर्मणा ६ द्यूतक्रीडापरोनित्यंदेवब्राह्मणदूषकः सर्वदापापनिरतःसर्वधर्मव
हिःकृतः ७ तन्नास्तिपातकंविप्रयदकार्यमहंतदा ततोनिराकृतोराज्ञाविचार्यसपुरोधसा ८ गूढोवसमहंतत्रनगरेदुर्जनैःस
हद्यूतक्रीडारतश्चाहंरात्रौचौर्यपरायणः ९ एकदाहंगृहीतश्चनागरैश्चौर्यमाचरन् नीतोवध्यानतस्तैश्चराजद्वारंततोनृपः १० नि
स्सारयामासतदावधार्हमपिमांपुरात् ततोऽतिगहनेरण्येवसानोवनवासिभिः ११ दुष्टैःसहमयातत्रवहवःपथिकाहताःधनलो
भाभिभूतेनमहासाहसिकेनच १२ ततोवहुतिथेकालेमृतोऽहंनिर्जनेवने अग्नियोगश्चनप्राप्तश्चांडालस्पर्शदूषितः १३ यमदूतैर्म
हाघोरैःसन्नीतोयमसादनं मानुषाद्यमलोकस्यमध्येमार्गोभयावहः १४ योजनानांसहस्रंचहाहाकारःप्रवर्तते प्रथमंतत्रविप्रेंद्र
नीतोऽहंयमकिंकरैः १५ ततःपंचसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः कंटकैःसंकुलंस्थानमस्तितीक्ष्णाग्रभीषणैः १६ योजनानांस
हस्राणितिमिरेणप्रपूरितम् स्थानमन्यंतघोरंहिदशद्वादशपंचच १७ तदग्रेऽष्टसहस्राणिपंचविंशतिरस्तिहि महोदधिर्महारौ
द्रोदुष्टजंतुनिषेवितः १८ मलादिपूरितोविप्रनिर्जलोदुरतिक्रमः तदग्रेऽष्टसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः १९ सर्वतोजलसंकीर्णस्था
नमस्तिद्विजोत्तम षडशीतिःसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः २० एवंमहापथःप्रोक्तःसर्वदुःखसमाश्रयः क्रमेणतत्रतत्राहंदूतैर्नीतो
भयानकैः २१ यमदूताश्चमांप्राहुर्यातनांपापकर्मिणां दुष्टेनचक्षुषादृष्टापरदारानराधमैः २२ वज्रतुंडाःखगास्तेषांहरंत्येतेविलोचने
यैःशास्त्रमन्यथाप्रोक्तंयैरसद्वागुदाहृता २३ वेदवेदद्विजातीनांगुरुनिंदाचयैःकृता हरंतितेषांजिह्वांचजायमानांपुनःपुनः २४ मित्र

जा·
१२

राम·
२५

भेदस्तथापित्रापुत्रस्यस्वजनस्यच याज्योपाध्याययोर्मात्रासुतस्यसहवांधवैः २५ भार्यापत्योश्चयेकेचिद्भेदंचक्रुर्नराधमाः तइमेपश्य
तुद्यंतेकरपत्रेणपापिनः २६ परोपतापकायेचयेप्राणान्तिकतापकाः करंभवालुकासंस्थास्तइमेपापभोगिनः २७ भुंक्तेश्राद्धे
तुयोन्यस्यनरोन्येननिमंत्रितः दैवेचाप्यथवापित्र्येसद्विधाक्रियतेखगैः २८ मर्माणियस्तुसाधूनांवदन्वाग्भिर्निकृंतति तानेतेतुदस्
नास्तुस्वगास्तिष्ठंत्यवारिताः २९ यःकरोतिचपैशून्यमन्यवागन्यथागतिः पाटयंतेचद्विधादेहस्तस्यैन्त्यंनिशितैःशरैः ३० मातापित्रोर्गु
रूणांचयेवज्ञांचक्रुरुद्धताः तइमेपूयविण्मूत्रगर्तेमज्जंत्यधोमुखाः ३१ देवतातिथिभूतेष्वभुक्तंयैःक्षुधितेष्वच दुष्टान्नंपूयनिर्वितस्
चीवक्त्रास्तुसोऽश्नुते ३२ एकसार्थप्रयातायेनिःस्वमन्नार्थिनंनरं तमपास्यान्नमश्नंतितइमेश्लेष्मभोजिनः ३३ गौरग्निर्जननीविप्रो
गुरुःस्पृष्टःपदान्नृभिः बद्धांघ्रयस्तेनिगडैर्लोहैरग्निप्रतापितैः ३४ स्वपोषणपरोयस्तुपरित्यजतिमानवः पुत्रभृत्यकलत्रादिवंधुवर्ग
मकिंचनं ३५ दुर्भिक्षसंभ्रमेवापिसोऽप्येवंयमकिंकरैः उत्कृत्यचान्त्राणिमुखेस्वमांसान्यश्नुतेक्षुधा ३६ मर्त्यास्तेपितुविप्रप्रसुरापिगु
रुतल्पगाःअधश्चाधश्चदीप्ताग्नौदह्यमानाःसमंततः ३७ एवंसंदर्शयंस्तैस्तुनीतोहंयमकिंकरैः ततःशृंखलयाबद्ध्वातैर्नीतोहंयमक्षयं
३८ महापापीसमानीतइत्यहंतैर्निवेदितः अथवैवस्वतोदृष्ट्वामांतथाविधमादिशत् ३९ प्रेतएवचिरंतिष्ठत्वयंभूमौस्वपापतःप
श्चात्तेयोमहापापोनरकानेकविंशतिः ४० माविलंबंकुरुध्वंभोपापिनस्तस्यताडने श्रुत्वेदंनिर्गतादूतास्त्वरयाक्रोधसंयुताः ४१ब्रह्मदंड
कराघोरानानाशस्त्रास्त्रधारिणः ताडयंतश्चमांसर्वेजगदुर्निष्ठुरंवचः ४२ महापापदुराचारप्रेतोभूत्वाचिरंवस भूतलेतत्रदुःखानिब
हून्यनुभविष्यसि ४३ ततस्तेचक्रमेणैवनरकान्प्राप्स्यसेऽखिलान् कल्पमेकंमहादुःखंप्राप्स्यसेयमशासनात् ४४ इत्युक्त्वाप्ययुः १४

का
मा·मा
२६

सर्वेस्वहमेतादृशोभवं सर्वासांदुष्टजातीनांभाजनंद्विजसत्तम ४५ एतेकुकर्मसंचितास्तुल्यकर्मवशाममप्रेतभावंसमासाद्यदुःखान्यनु
भवंतिच ४६ दुःखार्णवस्यवैतस्यनांतंपश्यामिसुव्रत त्वद्दर्शनपथंप्राप्यममाशाजायतेद्विज ४७ गतेपिप्रेतभावेस्मिन्माविदुःखंमहा
न्मम· नरकेषुकृपासिंधोतथापिप्रार्थयाम्यहं ४८ अतिकातरवाक्यात्तुश्चाप्रेतयोनिंदयन्द्विजः गतेऽपिप्रेतभावेस्मिन्नान्नमस्तिद्विजोत्तम।
४९ त्वांविनान्नप्रपश्यामिदुःखस्यास्यविनाशकं इतिप्रेतवचःश्रुत्वासविप्रःकृपयान्वितः ५० उवाचप्रेतराजंतंधर्मज्ञःपरिसान्त्वयन् शि
वशर्मोवाच यथाविमोक्षसेप्रेतप्रेतभावात्सुदुःसहात् ५१ अग्रेचनारकंदुःखंयथानप्राप्स्यसेमहत् तथाहंप्रयतिष्येद्यत्यजशोकंसुदा
रुणं ५२ भाविनोनरकायस्यनाशयंतिहदस्यच दास्यामिकार्तिकंत्वेकंयथामोक्षमवाप्स्यसि ५३ पापान्मूर्त्तभवोमन्नात्वंनिसर्गान्निराह।
णात् प्रेतभावाद्विमोक्षायगृहाणैकंचकार्तिकं ५४ अन्यथानिष्कृतिःप्रेतनपश्यामितवाधुना इतिश्रुत्वातनंवाक्यंप्रेतोऽसौशिवशर्मणः ५५ वि
नयावनतोभूत्वाजगादद्विजसत्तमं प्रेतउवाच सर्वदाक्रूरचित्तस्यक्रूरकर्मरतस्यच ५६ संगमासाद्यसाधोस्तेममापिमतिरीदृशी पुण्या
भिलाषिणीजानासाधुदर्शनशोधिता ५७ तस्मात्वामद्ययाचेसर्वदाधर्मतत्परं एतेममापिसुहृदोमुच्येरन्नेकशोयथा ५८ तथात्वंदेवक
र्तव्यंनेषामन्योगतिप्रदः इतिश्रुत्वावचस्तस्यशिवशर्माद्विजोत्तमः ५९ उवाचवचनंतेषांप्रेतानामुपकारकं शिवशर्मोवाच सूकरैर्वैसवै।
स्तैर्यत्कृताकार्तिकीमया ६० सर्वेभ्यएवप्रेतेभ्यस्तांप्रदास्यामिनिश्चितं इत्युक्त्वासोद्विजवरःसर्वप्राणिहितेरतः ६१ स्नात्वाविष्णुंचवि।
ध्येशंजलमादायनिर्मलं यथाप्रतिश्रुतंप्रादाद्धर्ममेभ्यःपृथक्पृथक् ६२ शिवशर्मोपरितदापुष्पवर्षपपातह विद्याधरगणैर्युक्तमप्स
रोभिश्चकिन्नरैः ६३ देवदुंदुभयोनेदुस्तरक्षणमिवाभवन् प्रेतानिजतनूस्त्यक्त्वादिव्यकांतिधराद्वराः ६४ स्तूयमानाःसुरगणैरवापुःप।

जा·
१२

राम·
२६

रमांसुरं विमानानि विचित्राणि दिव्यतेजोमयानि च ६५ कामगानि महार्हाणि समारुह्य पृथक्पृथक् जग्मुर्दिवं सुवायुक्ताः स्तुवंति द्विज
सत्तमं ६६ शिवशर्मापि तद्दीपस्य माहात्म्यं परमाद्भुतं विस्मयाविष्टहृदयः क्षणं तत्रैव तस्थिवान् धर्मदानप्रभावेन दिव्यतेजोवपुर्द्धरः शुशु
भे स द्विजश्रेष्ठः प्रभाभिरिव भास्करः ६७ ततो दृष्ट्वा द्विजवरः कार्तिक्यामहदद्भुतं माहात्म्यं मुदितात्मा सो जगाम निजमंदिरं ६८ इति
ते कार्तिकी पुण्या मयोक्ता द्विजसत्तम अस्यां ये धर्मनिरतास्ते यांति परमां गतिं ७० ॥ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये त्रयोद
शोऽध्यायः १३॥ नारद उवाच दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः तत्रापि दुर्लभः कालः कार्तिको हरिवल्लभः १ दीपेनापि हि यत्रासौ प्रीय
ते हरिरीश्वरः तस्यापि स्वर्गतिं दत्ते योऽन्यदीपं प्रबोधयेत् २ किंपुनः श्रद्धया भक्त्या दीपं स्वयमिहार्पयेत् अत्रेतिहासं भो ब्रह्मन्परदीपप्र
बोधने ३ शृणु चित्रं प्रवक्ष्यामि तवाग्रेहं यथा मुने रैवतस्य मनोर्वंशे राजासीद्भद्रधीः सुधीः ४ तस्य पुत्रोऽतितेजस्वी सुदर्शन इति स्मृ।
तः विद्यावलातिनिपुणो रूपेणाप्रतिमो भुवि ५ भद्रबुद्धे राजधानी महेंद्रा नर्मदातटे तस्यां सपुत्रो निवसन्विषयान्बुभुजे बहून् ६ एकदा।
तत्सुतो वीरो विजितारिः सुदर्शनः मृगयारसिको धन्वी युवान्यैर्युवभिर्वृतः ७ स तदा राजमार्गेषु पुष्पैर्लाजाक्षतैस्तथा अभिवृष्टश्च आ
शीर्भिर्वृद्धैर्विप्रैः प्रयोजितैः ८ वृतो वागुरिकैरन्यैर्हरिदस्त्रयुतैस्तथा विगाह्य विपिनं भूरि गृह्णन्मृगपशूंस्तथा ९ गच्छन्नेवांतरं प्राप।
तत्रैकां चावसन्निशां प्रातरुत्थाय तत्तीरे रेमे पश्यन्वनस्थलीः १० तदैव सरितः पारे प्रमदारत्नमुत्तमं कुमारो ददृशे विप्र विस्मयावि।
ष्टचेतनः ११ गौडराजस्य कोप्यासीत्तत्सुता सा वरांगना सखीभिः सह क्रीडंती नर्मदातीरमागता १२ साद्योतयंती प्रभया वनस्थलीमाश्र।
यवतीं हि कुचपद्मकुड्मले करांबुजाताडितकंदुकेक्षणा परिप्लुतं लोचनखंजनद्वयं १३ सनूपुरं तत्पदवीपदद्वयं सशब्दमन्वक्कलती मरा।

स्रवत् विलोक्य पञ्चास्युगवेगमोहितः साचापितंसुंदरवीरमैक्षत १४ अन्योन्यदर्शनोद्भूतरागनिर्विद्धमानसौ लज्जालोलैर्लोचनैस्तौ न
दीमध्येनविप्लितौ १५ ततःसुदर्शनःश्रीमांस्तत्रैवस्थाप्यसैनिकान् एकएवसदश्वेनपरंपारंजगामह १६ कस्यांतरेलीयमानांतांलज्जया।
वीतलोचनां पप्रच्छतांततदोवाचस्वकुलंजनकंतथा १७ साचतंचकमेवीरंकुलविद्यावयोगुणैः आत्मानुरूपंरूपेणनारीणांहृदयंगमं १८
गांधर्वेणविवाहेनसंगतौतावुभावपि इतिरतिमनुभूयनार्मदेसौसुखतरघनवेतसीनिकुंजे १९ सपदिगृहमवाप्यराजपुत्रःपरममुदंमद
नालसाचलेभे अथासौभद्रधीराजापुत्रंराज्यधुरंधरं २० अभिषिच्यजगामाशुतपसेविषयानिगः मदनालसाचसादेवीपतिंकृत्स्नंविचिंत्यतं
२१ सुदर्शनंचिंतयंतीहरेराराधनंपरं चकारवैष्णवंधामसुवर्णमणिसंयुतं २२ तत्रतौदंपतीविष्णुंपूजयामासतुर्मुदा एकदादीपदानं
साददानाविष्णुमंदिरे २३ कार्तिकेपतिनाहूताशीघ्रंनागाततोनृपः क्रुद्धःसमागतांप्राहसेर्ष्यतांमदनालसां २४ सुदर्शनउवाच माम
नादृत्यकोयंतेदीपदानेमहाग्रहः पतिर्देवोहिनारीणामित्येवंप्रब्रवीषिमे २५ हसित्वोवाचतंदेवीमंजुवाक्येनसांत्वतो मदनालसोवा
च शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिविचित्रंचरितंमम २६ अस्तिगोदावरीतीरेहरेरायतनंशुभं अत्यद्भुतंमहापुण्यंनानामुनिनिषेवितं २७ तत्रा
हंमूषिकावात्संनिर्माल्योदकभागिनी वेदव्रतोमुनिःकश्चित्तत्रागत्याथकार्तिके २८ दीपंप्रज्वालयामासयावन्मासमखंडितं मूष्याल।
येक्षीणज्योतिर्वर्तिकांतैललोभतः २९ मयाधृतंततोज्योतिःप्रभूतंमेदहन्मुखं दग्धान्नताप्यशक्तास्मिभक्षणेक्षीणजीविता ३० मृतादे
वालयेतस्मिन्साक्षात्पश्यामिस्वप्नवत् मयाप्रबोधितोदीपोरात्रौजज्वालपूर्ववत् ३१ तस्यैवपुण्यस्यमयायद्दृष्टः प्रभावएषास्मियतस्त्व
दीया महिष्यनन्येदृशसौभगांमयाजानिस्मरत्वंचममास्ततस्मात् ३२ राजन्नस्यानुभूतोमेमहिमापरमाद्भुतः अतोमेदीपदानस्य।३

कार्त्तिकेपरमाग्रहः ३३ यदिश्रद्धापरोनित्यमखंडंकार्त्तिकेनरः दीपंदद्याद्धरेरग्रेतत्फलंकेनशक्यते ३४ तच्छ्रुत्वाविस्मयाविष्टोहृष्ट-
रोमासुदर्शनः कार्त्तिकेनियमांश्चक्रेचक्रायुधसमर्चने ३५ इतिहरिपरिचर्यांकार्त्तिकेतौविधायसमुचितहरिभक्तीदंपतीसंप्रतीतौ इ-
हहिसकलभोगान्प्राप्यसंत्यज्यदेहं कमलनयनलोकंजग्मतुर्दैवयानैः ३६ नारदउवाच अन्यैरपियथादत्तंतच्छृणुष्वाथशौनक दीपस्य
मोनाशकस्तुष्ट्यर्थंचक्रपाणिनः ३७ पाञ्चालदेशेविप्रर्षेराजाभून्सिंहविक्रमः नाम्नाचिंतामणिर्वीरोहरिवज्जनवल्लभः ३८ ॥
विष्णुभक्तिपरोधीमान्प्रजापालनतत्परः महामखकरःश्रीमान्दानदःसर्वदाजयी ३९ तस्यराष्ट्रेमहापापोनाम्नाहरिकरोह्यभूत्
दुराचारोद्यूतकारोदुष्टाशीसुदुरासदः ४० अधर्मविषयासक्तःशश्वद्वेश्यारतोद्विज पितृवित्तक्षयकरोवंशच्छेदकुठारकः ४१ अस-
त्संगप्रभावेणत्रयीविधिनिषेधकः युक्तोविटशतैःसोऽथमद्यपानरतोभवत् ४२ कदाचित्तेनदेवर्षेद्यूतेपितृधनंमहत् हारितंद्विजश्रे-
ष्ठेनततोदुःखीसदाभवत् ४३ सकदाचित्साधुसंगात्तीर्थयात्राप्रसंगतः अयोध्यामागतोब्रह्मन्महापातककञ्चुकः ४४ कार्त्तिकेमा-
सिभगवच्छ्रीमद्विष्णोर्हरेर्गृहे द्यूतव्याजेनतेनाशुदीपोदत्तोनिशामुखे ४५ तद्दीपदानमाहात्म्यादर्जितंप्रचुरंधनं लुब्धकेनततस्तेनदी-
पोदत्तःस्वभाग्यतः ४६ प्रत्यहंकार्त्तिकेमासिहरेरायतनेशुभे ततःससाधुसंसर्गात्कदाचिद्द्विजसत्तमः ४७ स्नानार्थंगोमतीतीरंस्वयंकार्त्तिके
समुपागतः स्नातः सत्संगतः कामात्तत्तीर्थेद्विजसत्तम ४८ पापराशिंविनाश्याशुनिःपापः समभूद्द्विजः देहांतेऽथपुनःस्वर्गंजगामहरिसं-
निधौ ४९ दिव्यंविमानमारुह्यदिव्यस्त्रीशतसंवृतः दृश्यतेऽद्यापिलोकेसद्द्विजोनक्षत्रमंडले ५० नाम्नाभिजिन्मुनिवरनक्षत्रकुलभूषणं वक्तुं
दीपस्यमाहात्म्यंनशक्यंहरिणास्वयं ५१ अभिजिन्नामनक्षत्रंमाहात्म्यंतस्यगीयते कार्त्तिकेयैःप्रबोधिन्यांकृतंकर्पूरदीपकं ५२ कुलेनेषांप्रसू-

नाथेनैभवंतिहरेःप्रियाः कार्त्तिकेशुक्लपक्षेतुएकादश्यांद्विजोत्तम ५३ वेश्ययाचैंदुमत्येहदीयोदत्तोहरेर्गृहे दीपंदत्वाप्रमत्तासासुस्वा
पविहसंगता ५४ तत्तस्मिन्नंतरेवत्सतैलपानार्थमातुरा आगतामुषिकातत्रनिजदैवप्रणोदिता ५५ तैलपानेप्रहष्टासाप्रजज्वालाथदी
पकः तेनपुण्येनमहतापरांगतिमवापसा ५६ लुब्धकोपिचतुर्दश्यांदीपंदत्वाशिवालये द्युतार्थंभक्तिहीनोपिशिवलोकंजगामसः ५७ गोपः
कश्चिदमावास्यांदीपंदत्वाथशार्ङ्गिणः मुहुर्जयजयेत्युक्त्वापरांगतिमवापसः ५८ तस्माद्दीपाःप्रदातव्याःदिवारात्रौचकार्तिके तुलसीपथ
गोष्ठेषुतीर्थेष्वायतनेषुच ५९ विदर्भदेशेराजाभूद्वीरसेनोमहायशाः तेनात्रकार्तिकेमासिदत्तश्चाकाशदीपकः ६० दामोदरायनभसितु॰
लायांलोलयासह दीपंतेहंप्रदास्यामिनमोनंतायवेधसे ६१ अनेनदीपंदत्वाचक्रतोत्सर्गविधिर्नृपः शरदांशतंसयावद्दिहभुक्त्वाभोगान्मनो
रमान् ६२ सपुत्रपौत्रस्वजनोवुभुजेसहभार्यया ततश्चांतेद्विजवरविमानंसुमनोहरं ६३ समारुह्यवरस्त्रीभिर्गीयमानःसभूपतिः विष्णुलो॰
कंविष्णुरूपोययौतद्दीपदानतः ६४ दास्यंतियेकार्तिकमासिमर्त्याव्योम्निप्रदीपंहरितुष्टयेत्र पश्यंतितेनैवकदाचिदेवयमंसदारौद्रमुखंद्वि
जोत्तमाः ६५॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्त्तिकमाहात्म्येचतुर्दशोऽध्यायः १४॥ नारदउवाच अतःपरंप्रवक्ष्यामिकार्तिकस्यविशेषतः
महिमानंशृणुध्वंभोमुनयोगदतोमम १ यत्रकुत्रापिदेशेहिकार्तिकेस्नानदानतः अग्निहोत्रसमंपुण्यंपूजायांचविशेषतः २ कुरु॰
क्षेत्रेकोटिगुणंगंगायामपितत्समं ततोऽधिकंपुष्करेस्याद्द्वारवत्यांचभार्गव ३ पुण्याःपुर्यश्चसप्तैवमुनयोमथुरादिकाः दामोदरोदेवदे
वस्तत्रावात्सीद्यतःकिल ४ मथुरायांततःसोर्जेवैकुंठप्रियवर्द्धिनी कार्त्तिकेमथुरायांवैपरमावधिरिष्यते ५ यथामाघेप्रयागःस्याद्वैशाखेजा
ह्नवीयथा कार्त्तिकेमथुरासेव्यातथोत्कर्षपरेणाहि ६ परप्रसंगमुद्दिश्यकार्त्तिकेहरिपूजनं माथुरैलभतेभक्तिंकिंपुनःश्रद्धयायुतः॥ ॥

७ अत्राप्युदाहृतःपूर्वैरितिहासोमहाद्भुतः धूम्रकेशोमहापापोयथालेभेपरांगतिं ८ कलिंदपर्वतेरम्येनाम्नादीर्घपुरंपुरं तत्रराज्ञा
तिधर्मात्मासुबाहुःसोमवंशजः ९ ब्रह्मण्योविष्णुभक्तश्चप्रजापालनतत्परः तस्यात्मजोधूम्रकेशोज्येष्ठःसुंदररूपवान् १० क्रीडन्सबाल
कैर्दुष्टैर्दुःसंगाद्दासदुर्मतिः द्यूतक्रीडारतोनित्यंतदर्थंतस्करायते ११ गूढःपिबतिमद्यंचयौवनेरूपवानभूत् मार्गयन्नागरीचौरीर्विटयू
थसमन्वितः १२ दूतिकाभिश्छलेनापिधनेनचबलेनच अगम्याब्राह्मणीश्चापिनात्यजत्काममोहितः १३ पितातस्यत्वाततकर्मताडनंशा
सनंतथा अकार्षीन्नचतस्याभूत्स्वभावंकर्तुमन्यथा १४ कदाचित्कंदुकक्रीडांकुर्वतस्तस्यकंदुकः प्रत्यागतोराजगृहंप्रागात्तंचनिनीष
या १५ स्वयंपश्चाद्गतोयत्रनवोढाराजभोगिनी तद्विमानानुसानस्वरूपयौवनमोहिता १६ दूरतःकंदुकंतस्मैदर्शयंतीपुनःपुनःस
क्रीडहासभावेनप्रोवाचमधुराक्षरं १७ अत्रागच्छगृहाणेमंकंदुकंदीपितंमया यद्यदिच्छसिदास्यामितत्सर्वंनृपनंदन १८ इत्येवमा
कर्ण्यचकर्णरोचनंवाक्यंचतस्यामधुरंमहाविटः अंधीकृतात्माबुबुधेनपातकंगृहंप्रविष्टोद्भुतमालिलिंगतां १९ तंज्ञात्वाचनृपतिस्त
स्यकर्मचात्यंतदारुणं देशान्निःसारयामासस्नेहाद्वध्यंचनावधीत् २० निःसारितोगृहाद्राज्ञाधूम्रकेशोनृपात्मजः वनंविवेशक्रीडार्तो
निर्जनंफलमूलभुक् २१ दस्युकर्मकरोनित्यंपथिकान्हन्तिलुंपति ततोऽगाद्राजभीत्यासोदूरेचगहनंवनं २२ शूरवानःसमुपायातो
दैवाद्वृंदावनंवने तत्रावात्सीद्दिवाभीत्यारात्रौमधुपुरींययौ २३ वासार्थंददृशेचित्रंवेश्यासद्मसुशोभनं वेश्यांचरूपसंपन्नांदृष्ट्वातस्यां
व्यसज्जत २४ चौर्येणधनमानीयतस्यैदत्वागृहेवसत् दिवावृंदावनेयातिराजकुल्यैरलक्षितः २५ सिंधुदेशोद्भवोविप्रोनाम्नासत्यव्रतः
सुधीः विरक्तइन्द्रियार्थेषुत्यक्त्वापुत्रगृहादिकं २६ वृंदावनेस्थितःकृष्णमाराधयद्दिवानिशं निःस्वःसत्यव्रतोविप्रोनिर्जनेऽव्यग्रम

का
की·मा·
२९

मानसः कार्तिकेपूजयामासप्रीत्यादामोदरंद्विजः तृतीयेन्हिसहस्रंतुतोमूलंवाफलमेवच २८ पूजयित्वाहरिंस्तौतिप्रीत्यादामोदराभिधं
सत्यव्रतउवाच नमामीश्वरंसच्चिदानंदरूपंलसत्कुंडलंगोकुलेभ्राजमानं यशोदाभ्ययोलूखलेवध्यमानंपरामृष्टमत्यन्तमुद्रुत्यगोप्या
२९ रुदंतंमुहुर्नेत्रयुग्मंमृजंतंकरांभोजयुग्मेनसातंकनेत्रं मुहुःश्वासकंपत्रिरेखांककंठस्थितग्रैवदामोदरंभक्तिबद्धं ३० वरंदेवमो।
क्षंनमोक्षावधिंवानचान्यंवृणेऽहंवरेशादपीह इदंतेपुनर्नाथगोपालबालसदामन्मनस्याविरास्तांकिमन्यैः ३१ नमोदेवदामोदरानंतवि
ष्णोप्रसीदप्रभोदुःखजालाब्धिमग्नं कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनंतवानुग्रहाणेशमामज्ञमध्याक्षिदृश्यं ३२ नारदउवाच सत्यव्रतद्विजस्तोत्रं।
श्रुत्वादामोदरोहरिः विद्युल्लीलाचमत्कारोहृदयेशनकैरभूत् ३३ अंतर्हितेऽथतद्रूपेविह्वलोविललापह इतस्ततोधावमानःपुनःपूजा
करोतिच ३४ तद्दैवततत्तः सोपिधूम्रकेशोनृपात्मजः लीनोददर्शतत्पूजांवैष्णवंचसकौतुकात् ३५ राज्ञावागत्यवेश्यायैहास्यप्रीतिरसप्रदं
उवाचतस्यवृत्तांतंसविस्तरमुदीक्षितं ३६ तथैवपूजामकरोत्स्मत्वाचप्रतिमांमुदा तथैवनामगृह्णन्ससहासोदुष्टचेतनः ३७ एवंबहुवि
धंहास्यंकृत्वाविप्रस्यवेश्यया रेमेरात्रौततःप्रातर्हतोराज्ञोधिकारिभिः ३८ तस्यापराधंसंचिंत्यहतस्तैःसयमालयं नीतोदूतैस्तदीयैसंदा।
दर्शपितृराट्स्वयं ३९ ज्ञात्वातस्यचतत्कर्मकार्तिकेहरिपूजनं मथुरायांपरीहासव्याजेनाखिलधर्मवित् ४० उत्थायचासनात्तूर्णमातिथ्यं
तस्यचाकरोत् अर्घादिनातंसंपूज्यस्वदूतांस्तानगर्हयत् ४१ यमदूतउवाच रेदूताभ्रष्टविज्ञानाधिगस्मच्छासनातिगाः यतोनिवारिताःकार्यो।
न्मुहुस्तद्वैप्रकुर्वते ४२ कतिधाशिक्षितंयद्वस्त्याज्योविष्णुपरायणः नाहंप्रभुस्तस्यदंडेयूयंदंडचिकीर्षवः ४३ नमोस्तुतस्मैसौम्यायभक्तवात्सल्य
शोभिने यःपुनःपुनरेवास्मदज्ञानंक्षमतेहरिः ४४ इत्येवमुक्त्वापुनरेवविस्मितःपप्रच्छसौम्याकृतिधूम्रकेशं व्रीडाभिभूतोधर्मराजोमहा

आ·
१५

एम·
२९

त्मासर्वेषुभूतेषुसमःप्रशान्ता ५५ अहोकष्टंधूम्रकेशत्वदुःखंमहत्कृतं मथुरामागतस्यापिकृतदंडस्यपार्थिवैः ५६ सुहृत्सापितवा
चार्येकृष्णपूजांप्रकुर्वतः वैकुंठपुरवासाययोग्यस्तवशासनं ५७ मथुरानयनंचापिनयुज्येतकथंचन धूम्रकेशउवाच सर्वंमेजन्म
पापेनयुक्तस्यैवंगतिर्विभो ५८ कथंवाशुद्धतामेद्यकथंवैकुंठयोग्यता महदाश्चर्यमुक्तंमेमहात्मनोऽनुग्रहःकृतः ५९ यस्यपुण्यस्यमाहा
त्म्यात्पापोहंयामिसद्गतिं तन्मेविस्तरतोब्रूहिकृपांकुरुममप्रभो ६०॥ ॥इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येपंचदशोऽध्यायः १५॥ यम
उवाच नमस्कृत्यारविंदाक्षंनारायणमनामयं धर्मंतेकथयिष्यामिधूम्रकेशशृणुष्वतत् १ सएवपरमोधर्मःश्रमएवातिनिश्चितं श्रव
णंकीर्तनंपूजासर्वकर्मार्पणंस्मृतिः २ परिचर्यानमस्कारःप्रेमस्वात्मसमर्पणं इत्येवंनवधाभक्तिःकृष्णेयैःप्रीतयेकृता ३ करणीयंकिमस्ता
स्तिपरंनिःसंशयंविदं तत्रापिकार्तिकंप्राप्यतत्रापिमथुरांपुरीं ४ कृष्णस्यातिप्रियंयुग्मंदेशकालविशेषतः तस्माच्चपात्मजश्रेयःपरंकिंचित्न
विद्यते ५ अनुभूतंत्वयैवात्रमहापापयुतात्मना परिहासापदेशेनकृष्णपूजाफलंत्विदं ६ यद्घोरनरकार्हस्यवैकुंठनयनंमहत् एकएवहिध
र्मोहिसर्वत्रसुखदःस्मृतः ७ तत्रापिद्विविधोधर्मःप्रवृत्तोऽथनिवृत्तकः अर्थानुरागिणःपुंसःप्रवृत्तोधर्मउच्यते ८ अर्थेऽनर्थदृशःपुंसःभक्तस्य
चहरौतथा निवृत्तःप्रोच्यतेसद्भिरधिकारिव्यवस्थया ९ दयासर्वेषुभूतेषुपरमाधर्मभूमिका तस्मात्तस्यानुयोधर्मःसधर्मःपरमःस्मृतः
१० ननरोनरकंयातिसर्वभूतदयापरः वापीकूपतडागादिप्रणेताद्रुमकारकः ११ पांथविश्रामहेत्वर्थंपूर्तमित्यभिधीयते अग्निहोत्रादिका
यागाःप्रोक्तायेसाधिताधनैः १२ क्रियंतेयदितेचेष्टमत्रयस्वर्गदावुभौ निष्कामश्चित्तशुद्ध्यर्थंज्ञानसाधनमिष्यते १३ दुर्भिक्षेऽन्नप्रदानंच
बालवृद्धातुरस्यच अनाथस्यासमर्थस्यपालनंपूर्तवत्स्मृतं १४ अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयःश्रांतःकोपिनरोभवेत् अपिचाङ्डमिपानीयंतोय

णां तन्महत्फलं १५ यस्मात्कृतास्स भग्नाशो याति तत्सुकृतं नयेत् एकादशीव्रतं सौम्यं यद्येकं सम्यगर्जितं १६ किं दानैः किं तपस्तीर्थैः सर्वदं भं विना कृतं दशम्यां संयमं कृत्वा परद्रोहनियतेन्द्रियः १७ क्रोधहिंसाविहीनश्च कृष्णकीर्त्यादिनं नयेत् रात्रौ जागरणं पूजा चतुर्थ्यामेषु भक्तितः १८ प्रातर्विधाय मिष्टान्नं भुंजीतैवं विधिः स्मृतः न लंघयेदिमं सर्वं सर्वधर्मशिरोमणिं १९ स्वर्गस्थाः किल गायंति देवा गाथां नरास्मृति धन्यान राभारतखंडवर्तिनो येषां शरीरं हरिभक्तिसाधनं २० क्षणं नराः कृष्णकथानुरागास्तस्याद्पद्मे हृदि दध्युरुत्सुकाः तराभयं यांति परं पदं हरेः कृत्वा च नो मूर्ध्नि पदं विचित्रं २१ यद्यस्ति किंचित्कृतयज्ञसंभवं तथोभयं वा सुकृतं च शेषं तेनास्तु नो मानुषजन्मभूः सोस्मृत्वा भजामो हरिपादपद्मं २२ नैवातिभोगातिशयस्तथात्र न वापि मन्येत हरिस्तथार्चनं यथाल्पमप्यूरु च मानुषे बहुदेहे कृतं दीनदयालुरीप्सते २३ नस्माद्दे मानुषं जन्म भारते प्राप्य मानवः देहं प्राप्य हरिं नैव भजेत्तासौ स्वघातकृत् २४ राजा हि कस्य विद्वत्वा सर्वस्वं चेत्प्रयच्छति परस्मै तस्य कास्तत्र नियंतास्यान्न भोगो यथा २५ अयं सर्वेश्वरः श्रीमानन्यथा कर्तुमीश्वरः अल्पमल्पं बहु मन्येत बहु तुच्छं च मन्यते २६ प्रेम्णा कृतं तुच्छमपि मेरुवद्विन्दते फलं आत्मारामोद्य भक्त्या चेत्कृतं मेरुस्वरूपं भवेत् २७ अतः प्रेम्णा च यत्नस्मात्तं भवेत्पूजनं हरेः इति धर्मो मया दिष्टः सर्वथा धर्ममाचरेत् २८ पुण्यापुण्ये हि पुरुषः पर्यायेण समश्नुते भुंजतश्च क्षयं याति पुण्यं पापमथापि च २९ न तु भोगादृते पुण्यं पापं वा कर्म मानवः परित्यजति भोगांश्च पुण्यापुण्ये निबोध मे ३० दुर्भिक्षादेव दुर्भिक्षं क्लेशात्क्लेशं भयाद्भयं मृतेभ्यः प्रमृता यांति दरिद्राः पापकारिणः ३१ उत्सवादुत्सवं यांति स्वर्गात्स्वर्गं सुखात्सुखं श्रद्दधानाश्च दांताश्च धनाढ्याः शुभकारिणः ३२ व्याघ्रकुंजरदुर्गाणि सर्पचौरभयानि च हस्तावापेन गच्छंति पापिनः किमतः परं ३३ सुगंधिमाल्यवस्त्रैश्च साधुवादाशनैस्तथा स्तूयमानाः सदा यांति पुण्याः सर्वत्र सुखैर्नराः ३४ अनेकशतसाहस्रजन्मसंचय

संचितं पुण्यापुण्यंनृणांनूनंसुखदुःखाकरोद्भवं ३५ यथाहिबीजंसर्वत्रपयांसिसमवेक्षते पुण्यापुण्यंतथाकालेदेहांतेकर्मकारणं ३६
स्वल्पपापंकृतंपुंसांदशाकालोपपादितं पादन्यासाहतंदुःखंकंटकोत्थंप्रयच्छति ३७ तत्प्रभूततरंस्थूलंशंकुकीलकसंभवंदुःखंयच्छ
तितद्वच्चशिरोरोगादिदुःखदं ३८ अपथ्याशनशीतोष्णश्रमतापादिकारणं तथान्यानप्यवेक्षितपापानिफलसंगमे ३९ एवंमहांतिपापा
निदीर्घरोगादिकंक्रमं तद्वच्छस्त्राग्निदुःखानिबंधनादिफलायवै ४० अल्पंपुण्यंशुभंगंधदेहलयासंप्रयच्छति स्पर्शम्वाप्यथवाशब्दंरा
संरूपमथापिवा ४१ चिरात्कृततरंतद्वन्महान्तमपिकालजं एवंचसुखदुःखानिपुण्यपापोद्भवानिच ४२ भुंजानोनेकसंसारसंभवानीह।
गच्छति जातिदेशविरुद्धानिज्ञानाज्ञानकृतानिच ४३ तिष्ठंतितत्रपृक्तानिलिंगमात्रांतरात्मनि कर्मणामनसावाचानकदाचिन्नकश्चिन्नरः ४४ अ
कुर्वन्यातकंकर्मपुण्यंवाप्यवतिष्ठते यद्यदाप्नोतिपुरुषःसुखंदुःखमथापिवा ४५ प्रभूतमथवास्वल्पंविक्रियाकारिचेतनः यावत्तावत्तात।
स्यपापंवापुण्यमेवच ॥ ४६ उपभोगात्क्षयंयातिभुज्यमानमिवाशनं पापिनोहिमहापापंयातनाभिरहर्निशं ४७ क्षपयंतिमहाघोरंन
रकांतरवर्तिनः तथैवबहुपुण्यानिस्वर्गलोकेमरैःसह ४८ गंधर्वसिद्धाप्सरसांगीताद्यैरुपभुंजते देवत्वेचमनुष्यत्वेतिर्यक्त्वेचशुभा।
शुभं ४९ पुण्यपापोद्भवंभुंक्तेसुखदुःखोपलक्षणं इत्येवंसर्वमाख्यातंतद्गच्छहरिसन्निधौ ५० इतिविदितसुधर्माराजपुत्रोयमोक्त्या
समधिगतविमानंराजपुत्रोधिरुह्यसकलकलुषमुक्तःकार्तिकेविष्णुपूजाजनितसुकृतपुंजान्निश्चलंविष्णुमाप ५१॥ इतिश्रीपद्मपुराणे।
कार्तिकमाहात्म्येषोडशोऽध्यायः १६ नारदउवाच अथान्यदपिविप्रेंद्रशृणुमेगदतःपुरा धर्मदत्तःस्वपुण्येनकलहामुद्धरद्यथा १ आसीत्स
ह्याद्रिविषयेकरवीरपुरेपुरा ब्राह्मणोधर्मवित्कश्चिद्धर्मदत्तेतिविश्रुतः २ विष्णुव्रतकरःशश्वद्विष्णुपूजारतःसदा द्वादशाक्षरविद्याजप।

निष्ठोतिथिप्रियः ३ कदाचित्कार्तिके मासि हरिजागरणाय सः रात्र्यां तुर्यांशशेषायां जगाम हरिमंदिरं ४ हरिपूजोपकरणान्यादाय व्रजता तदा तेन दृष्टा समायांती राक्षसी भीमनिःस्वना ५ वक्रदंष्ट्रा ललज्जिह्वा निमग्नारक्तलोचना दिगंबरा शुष्कमांसा लंबोष्ठी घर्घरस्वना ६ तां दृष्ट्वा भयवित्रस्तः कंपितावयवस्तदा पूजोपकरणैर्वेगात्तयोभिघ्नाहनद्रुषा ७ संस्मृत्य च हरेर्नाम तुलसीयुक्तवारिणा सोहनत्तां ततस्तस्याः सर्वमगात्क्षयं ८ अथ संस्मृत्य सा पूर्वजन्मकर्मविपाकजं स्वां दशां चाब्रवीद्विप्रं दंडवच्च प्रणम्य सा ९ पूर्वकर्मविपाकेन दशामेतां गतास्म्यहं तत्कथं तु पुनर्विप्र यास्याम्युत्तमगतिं शुभां १० तां दृष्ट्वा प्रणतामग्रे वदमानां स्वकर्म तत् अतीव विस्मितो विप्रस्तदा वचनमब्रवीत् ११ धर्मदत्त उवाच केन कर्मविपाकेन त्वं दशामीदृशीं गता कुतस्त्या कासि किंशीला तत्सर्वं कथयस्व मे १२ कलहोवाच सौराष्ट्रनगरे ब्रह्मन्भिक्षुनामाभवद्द्विजः तस्याहं गृहिणी पूर्वं कलहाख्यातिनिष्ठुरा १३ न कदाचिन्मया भर्तुर्वचसापि शुभं कृतं नार्पितं तस्य मिष्टान्नं भर्तुर्वचनशीलया १४ कलहप्रियया नित्यं स चोद्विग्नमना यदा परिणेतुं तदान्यां स मतिं चक्रे पतिर्मम १५ ततो गरं समादाय प्राणास्त्यक्ता मया द्विज अथ बद्ध्वा च नीयमानां विनिघ्नंतो यमानुगाः १६ यमश्च मां तदा दृष्ट्वा चित्रगुप्तमपृच्छत यम उवाच अनया किं कृतं कर्म चित्रगुप्त विलोकय १७ प्राप्नोत्वियं कर्मफलं शुभं वा यदि वाशुभं कलहोवाच चित्रगुप्तस्तदा वाक्यं भर्त्सयन्मामुवाच सः १८ अनया तु शुभं कर्म कृतं किंचिन्न विद्यते मिष्टान्नं भुज्यमानं यत्तद्भर्त्रे तदर्पितं १९ विष्टादा शूकरी योन्यां तस्मात्तिष्ठत्वियं हरे पाकभांडे सदा भुंक्ते गुप्तं वैषा यतस्ततः २० तस्माद्देषा विडाली स्यात्स्वजातापत्यभक्षिणी भर्तारं च यदुद्दिश्य ह्यात्मघातः कृतोनया २१ तस्मात्प्रेतशरीरेण तिष्ठत्वेषा विनिंदिता अतश्चैषा मरुद्देशं प्राप्य तां तावकैर्हरे २२ तत्र प्रेतशरीरेण चिरं तिष्ठत्वियं ततः ऊर्ध्वं योनित्रयं चैषा भुनक्ति शुभकारिणी २३ कलहोवाच साहं पंचशताब्दानि प्रेतदेहस्थिता किल ॥

सुतृड्भ्यां पीडितात्यर्थं दुःखिता स्वेन कर्मणा २४ ततः क्षुत्पीडिता विश्य शरीरं वणिजस्य वै आयाता दक्षिणां देशं कृष्णावेण्योस्तु संगमं २५
तत्तीरसंस्थिता यावत्तावत्तस्य शरीरतः शिवविष्णुगणैर्दूतमणाकृष्य बलादहं २६ तस्मादागम्यते विप्र दृष्टस्त्वं च मया प्रमोत्वद्धस्तात्तुल
सी वारिसंसर्गगतपापया २७ तत्कृपां कुरु विप्रेंद्र कथं मुक्तिं व्रजाम्यहं योनित्रयादग्रभाव्यादस्माच्च प्रेतदेहतः २८ नारद उवाच इत्थं
निशम्य कलहावचनं द्विजाग्र्यस्तत्कर्मपाकभवविस्मयदुःखयुक्तः कष्टं भविष्यति कृपाद्र्वचित्त इति ध्यात्वा चिरं स वचनं निजगाद दुः
खात् २९ धर्मदत्त उवाच विलयं यांति पापानि तीर्थदानव्रतादिभिः प्रेतदेहस्थितायास्ते तेषु नैवाधिकारिता ३० त्वद्रूपदर्शनादस्मात्खि
न्नं च मम मानसं नैव निर्वृतिमायांति त्वामनुस्मृत्य दुःखितां ३१ पातकं च न वा तस्य यद्योनित्रयपाकजं नैवास्य क्षीयते पुण्यैः प्रेतत्वं चानिग
र्हितं ३२ तस्मादाजन्मजनितं यन्मे स्यात्कार्तिकव्रतं तत्पुण्यस्यार्द्धभागेन सद्गतिं त्वमवाप्नुहि ३३ कार्तिकव्रतपुण्येन न साम्यं यांति सर्वदा य
ज्ञदानानि तीर्थानि व्रतानि च तथा ध्रुवं ३४ नारद उवाच इत्युक्त्वा धर्मदत्तोऽसौ यावत्तामभ्यषेचयत् तुलसीमिश्रतोयेन नाम्ना वै यद्द्वादशाक्ष
रं ३५ तावत्प्रेत्वाद्विनिर्मुक्ता ज्वलदग्निशिखोपमा दिव्यरूपधरा जाता लावण्येन यथेंदिरा ३६ ततः सा दंडवद्भूमौ प्रणनामाथ तं द्विजं उवाच
च तदा वाक्यं हर्षगद्गदभाषिणी ३७ कलहोवाच त्वत्प्रसादाद्द्विजश्रेष्ठ विमुक्ता निरयादहं पापाब्धौ मज्जमानायास्त्वं नौः सदृशोऽसि मे ध्रुवं ३८
नारद उवाच इत्थं सा वदती विप्रं ददृशे यानमंबरात् विमानं भास्वरं युक्तं विष्णुरूपधरैर्गणैः ३९ अथ सा तद्विमानाग्र्यं द्वास्थाभ्यां चावरोपिता
पुण्यशीलसुशीलाभ्यामप्सरोगणसेविता ४० ॥इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये कलहोपाख्याने सप्तदशोऽध्यायः १७ नारद उवाच त
द्विमानं तदा पश्यद्धर्मदत्तः सविस्मयः पपात दंडवद्भूमौ दृष्ट्वा तौ विष्णुरूपिणौ १ पुण्यशीलसुशीलौ च तमुत्थाप्य नतं द्विजं समभ्यनंदयतां तदा

का॰ मा॰ ३२

मूचतुर्द्धर्मसंहितं २ गणावूचतुः साधुसाधुद्विजश्रेष्ठ त्वंहि विष्णुरतःसदा दीनानुकंपी धर्मज्ञो विष्णुव्रतपरायणः ३ आवालत्वाद्ध्रुवंयेनयत्त्व
याकार्तिकव्रतं कृतंतस्यार्द्धदानेनपुण्यद्वैगुण्यमागतं ४ त्वत्पुण्यस्यार्द्धभागेनयदस्याःपूर्वसंचितं जन्मांतरशतोद्भूतंपापंतद्विलयंगतं ५ स्ना
नैरेवगतंपापंयदस्याःपूर्वकर्मणा हरिजागरणाद्यैश्चविमानमिदमास्थितं ६ वैकुंठंनीयतेसाधोनानाभोगसुतान्वियं दीपदानभवैःपुण्यै
स्तेजसंचपुरास्थिता ७ तुलसीपूजनाद्यैश्चकार्तिकव्रतकैःशुभैः विष्णुसान्निध्यगाजातात्वयादत्ताकृपालुना ८ त्वमप्यस्यभवस्यांतेभार्यो
भ्यांसहयास्यसि वैकुंठभवनंविष्णोःसान्निध्यंचसरूपतां ९ तेधन्याःकृतकृत्याश्चतेषांचसफलोभवः यैर्भक्त्याराधितोविष्णुःकिंनयच्छति
देहिनां १० औत्तानपादिर्येनासौध्रुवत्वेस्थापितःपुरा यन्नामस्मरणाद्देवदेहिनोयांतिसद्गतिं ११ ग्राहग्रस्तोनागेन्द्रोयन्नामस्मरणात्पुरा
विमुक्तःसंनिधिंप्राप्यजातोऽयंजयसंज्ञकः १२ अतस्त्वयार्चितोविष्णुःस्वसान्निध्यंप्रदास्यति वहून्यब्दसहस्राणिभार्याद्वयसुतस्सते १३
ततःपुण्येस्वयंयातेयदायास्यसिभूतले सूर्यवंशोद्भवोराजाविख्यातस्त्वंभविष्यसि १४ नाम्नादशरथस्तत्रभार्याद्वयसुतःपुनःतृतीययान
याच्चापियातेपुण्यार्द्धभागिनी तत्रापितवसान्निध्यंविष्णुर्दास्यतिभूतले आत्मानंतवपुत्रत्वेप्रकल्प्यामरकार्यकृत् १६ धन्योसिविप्रामय
तस्त्वयैवंव्रतंकृतंतुष्टिकरंजगद्गुरोः यदर्द्धभागात्सफलात्सुरारेःप्रणीयतेऽस्मासिरियंसलोकतां १७ नारदउवाच इत्येतद्वचनंश्रुत्वाधर्मद
त्तःसविस्मयःप्रणम्यदंडवद्भूमौवाक्यमेतदुवाचह १८ धर्मदत्तउवाच आराधयंतिसर्वेऽपिविष्णुंभक्तार्तिनाशनं यज्ञदानव्रतैस्तीर्थैस्तपो
भिश्चयथाविधि १९ विष्णुप्रीतिकरंतेषांकिंस्वित्सान्निध्यकारकं यत्कृत्वातानिचीर्णानिसर्वाण्यपिभवंतिहि २० गणावूचतुःसाधुपृष्टंत्वया
याविप्रशृणुष्वैकाग्रमानसः सेतिहासांकथामत्रकथ्यमानांपुराभवां २१ कांतीपुर्यांपुराचोलश्चक्रवर्तीबभूवह यस्याख्ययैवतेदेशाश्चोलाइति

जा॰ १८

राम॰ ३२

प्रथांगतः २२ यस्मिन्शासति भूचक्रं दरिद्रो वापि दुःखितः पापबुद्धिः सरुग्वापि नैव कश्चिदभून्नरः २३ यस्याप्यनंतयज्ञस्य ताम्रपर्णीतटा
बुभौ सुवर्णयूपैः शोभाढ्यावास्तां चैत्ररथोपमौ २४ स एकदाचिदगाद्राजा ह्यनंतशयनं द्विज यत्रासौ जगतां नाथो योगनिद्रां च सेवते २५ तत्र श्री
रमणं देवं संपूज्य विधिवन्नृपः मणिमुक्ताफलैर्दिव्यैः स्वर्णपुष्पैस्तथोत्तमैः २६ प्रणम्य दंडवद्यावदुपविष्टः स तत्र वै तावद्ब्राह्मणमायातमः
पश्यद्देवसंनिधौ २७ देवार्चनार्थमायांतं तुलस्युदकपाणिनं स्वपुरवासिनं तत्र विष्णुदासाह्वयं द्विजं २८ तत्राभ्येत्य स विप्रर्षिर्देवदेवमपूजयत्
विष्णुसूक्तेन संस्थाप्य तुलसीमंजरीदलैः २९ तुलसीपूजया तस्य रत्नपूजाघरीकृता आच्छादितां समालोक्य राजा क्रुद्धोऽब्रवीदिदं ३० चोल उवाच
माणिक्यस्वर्णपूजात्र शोभाढ्या या कृता मया विष्णुदास कथं सात्र आच्छन्ना तुलसीदलैः ३१ विष्णुभक्तिं न जानासि वराकोऽसि मतो मम यत्त्व
मामतिशोभाढ्यां पूजामाच्छादयस्यहो ३२ इति तद्वचनं श्रुत्वा स द्विजः क्रोधमूर्छितः राज्ञो गौरवमालंब्य जगाद वचनं तदा ३३ विष्णुदास उवाच॥
राजन्भक्तिं न जानासि गर्वितोऽसि नृपश्रिया कियद्विष्णुव्रतं पूर्वं त्वयाचीर्णं वदस्व तत् ३४ गणावूचतुः तद्ब्राह्मणवचः श्रुत्वा प्रहस्य स नृपोत्तमः।
विष्णुदासं तदा गर्वादुवाच वचनं द्विज ३५ राजोवाच इत्थं चेद्वदसे विप्र विष्णुभक्त्यातिगर्वितः भक्तिस्ते कियती विष्णौ दरिद्रस्याधनस्य च ३६
यज्ञदानादिकं नैव विष्णोस्तुष्टिकरं कृतं नापि देवालयं पूर्वं कृतं विप्र त्वया क्वचित् ३७ ईदृशस्यापि ते गर्वः एवं निष्ठितभक्तिजः तच्छृण्वंतु
वचो मेऽत्र सर्वेऽप्येते द्विजादयः ३८ साक्षात्कारमसौ विष्णुरस्मिन्वा देगमिष्यति पश्यंतु सर्वेऽपि ततो भक्तिं ज्ञास्यंति चावयोः ३९ गणावूचतुः इत्युक्त्वा
स नृपो गच्छन्निजराजगृहं प्रति आरभद्वैष्णवं सत्रं कृत्वाचार्यं च मुद्गलं ४० ऋषिसंघसमाजुष्टं बह्वन्नं बहुदक्षिणं यथाद्ब्रह्मकृतं पूर्वं यायावरेत्रेस
मृद्धिमत् ४१ विष्णुदासोऽपि तत्रैव तस्थौ देवालये व्रती पंचैतान्नियमान्कुर्वन्विष्णुतुष्टिकरान्सदा ४२ ऊर्जे मासव्रतं सम्यक्तुलसीवनपा।

का· मा· ८३

लनं एकादशीव्रतं जय्यं द्वादशास्मरविधया ४३ उपचारैः षोडशभिर्गीतनृत्यादिमंगलैः नित्यं विष्णोस्तथा पूजां व्रतान्येतानि सोकरोत् ४४ नि
त्यं स संस्मरन्विष्णुं गच्छन्तिष्ठन्स्वपन्नपि अकरोद्विष्णुतुष्ट्यर्थं सोद्यापनविधिं यथा ४५ एवं समाराधयतोः श्रियःपतिं तयोस्तु चोलेश्वरा
विष्णुदासयोः अगादनेहा वहुतद्व्रतस्थयोस्तन्निष्ठसर्वेंद्रियकर्मणोस्तदा ४६ ॥ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणे कार्त्तिकमाहात्म्ये राजाब्राह्मणविवा
दो नामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ गणा ऊचतुः कदाचिद्विष्णुदासोथ कृत्वा नित्यविधिं द्विजः पाककर्मा करोत्तावद्धरत्कोप्यलक्षितः १ तमदृष्ट्वा
ष्य सो पाकं पुनर्नैवाकरोत्तदा सायंकालार्चनं चैतत्परित्याज्यं कथं भवेत् २ यदि पाकं विधायैव भोक्तव्यं तु मया न तत् अनिवेद्य हरौ सर्वं वै
ष्णवैर्नैव भुज्यते ३ एवं विमर्षतस्तस्य व्यतीतानि दिनानि षट् उपोषितो हुं सम्यहं तिष्ठाम्यत्र व्रतस्थितः ४ तावद्ददर्श चांडालं पाकान्नहर
णे स्थितं क्षुत्क्षामं दीनवदनं अस्थिचर्मावशेषितं ५ तमालोक्य द्विजाग्र्योभूत्कृपया खिन्नमानसः विलोक्यान्नहरं विप्रस्तिष्ठतिष्ठेत्यधावत
६ कथमत्सि रूक्षं रूक्षं घृतमेतद्गृहाण भो इत्थं ब्रुवंतं विप्राग्र्यमायांतं स विलोक्य च ७ वेगाद्धावन्भीत्या मूर्छितश्च पपात सः संमूर्छि
तं तमेवासौ विष्णुदासोप्यलोकयत् ८ साक्षान्नारायणं देवं शंखचक्रगदाधरं पीतांबरं चतुर्बाहुं श्रीवत्सांकं किरीटिनं ९ अतसीपुष्पसंका
शं कौस्तुभोरस्थलं विभुं तं दृष्ट्वा सात्त्विकैर्भावैरावृतो द्विजसत्तमः १० स्तोतुं चापि नमस्कर्तुं तदानालं बभूव सः अथ शक्रादयो देवास्तदैवाभ्या
ययुश्चवै ११ गंधर्वाप्सरसस्तत्र जगुश्च ननृतुर्मुदा विमानशतसंकीर्णं देवर्षिगणसेवितं १२ गीतवादित्रनिर्घोषस्थानं तदभवत्तदा त
तो विष्णुः समालिंग्य स्वभक्तं सात्त्विकावृतं १३ सारूप्यमात्मनो दत्वा नयद्वैकुंठमंदिरं विमानवरसंस्थं तं विप्राग्र्यं विष्णुसन्निधिं १४ दीक्षितः
श्चोलनृपतिर्विष्णुदासं ददर्श सः वैकुंठभवनं यांतं विष्णुदासं विलोक्य सः १५ स्वगुरुं मुद्गलं वेगादिदं वचनमब्रवीत् यत्स्पर्धया मया चैतद्यज्ञद

जा· १९

राम· ३३

रिकंकृतं १६ सविष्णुरूपधृग्विप्रोययौवैकुंठमंदिरे दीक्षितेनमयासम्यक्सत्रेस्मिन्वैष्णवेसदा १७ हुतमग्नौहुताविप्रादानाद्यैः पूर्णमानसः
नैवाद्यापिसमेदेवःप्रसन्नोजायतेध्रुवं १८ भक्त्यैवतस्यसंस्कारंददौप्रीतःस्वयंहरिः तस्माद्दानैश्चयज्ञैश्चनैवविष्णुःप्रसीदति १९ भक्तिरेव
परंतस्यनिदानंदर्शनेविभोः इत्युक्त्वाभागिनेयंस्वमभिषिच्यनृपासने २० आवाल्याद्दीक्षितोयज्ञेह्यपुत्रत्वमगाद्यतः तस्माद्यापितदेशे
सदाराज्यांशभागिनः २१ स्वस्त्रीयाएवजायंतेतत्कृतावधिवर्जने यज्ञवाटंततोभ्येत्यवह्निकुंडाग्रतःस्थितः २२ निरुच्चैर्व्याजहारासौविष्णुसं
बोधनंतदा विष्णोर्भक्तिंस्थिरांदेहिमनोवाक्कायकर्मणा २३ इत्युक्त्वासोऽपतद्वह्नौसर्वेषामेवपश्यतां मुद्गलस्तुतदाक्रोधाच्छिखामुत्पाट्यन्स्व
कां २४ ततस्त्वद्यापितद्गोत्रेमुद्गलाविशिखाबभुः तावदाविरभूद्विष्णुःकुंडाग्नौभक्तिवत्सलः २५ तमालिंग्यविमानाग्र्यंसमारोह्यदच्युतःत
मालिंग्यात्मसारूप्यंदत्वावैकुंठमंदिरं २६ तेनैवसहदेवेशोजगामत्रिदशावृतः योविष्णुदासःसतुपुण्यशीलोयश्चोलभूपःससुशीलना
मा २७ आवांचतौतत्समरूपभाजौद्वास्थौकृतौतेनरमाप्रियेण धर्मदत्तउवाच जयश्चविजयश्चैवविष्णोर्द्वास्थौश्रुतौमया २८ किंतुताभ्यां
परंचीर्णंयस्मात्तद्रूपधारिणौ गणावूचतुः तृणविंदोस्तुकन्यायांदेवहूत्यांपुराद्विज २९ कर्दमस्यतुतौसृष्टौपुत्रौद्वौसंबभूवतुः ज्येष्ठोजा
यःकनिष्ठोभूद्विजयश्चेतिनामतः ३० तस्यामेवाभवत्पश्चात्कपिलोयोगधर्मवित् जयश्चविजयश्चैवविष्णुभक्तिरतौसदा ३१ तौनिष्ठितेंद्रि
यग्रामौधर्मशीलौबभूवतुः तौनामाष्टाक्षरपरौविष्णुव्रतकरावुभौ ३२ साक्षात्कारंददौविष्णुस्तयोर्नित्यार्चनेसदा मरुत्तेनकदाचित्तावाहूतौयज्ञक
र्मणि ३३ जग्मतुर्यज्ञकुशलौदेवर्षिगणसंयुतौ जयस्तत्राभवद्ब्रह्मायाजकोविजयोऽभवत् ३४ ततोयज्ञविधिंकार्त्स्न्यंपरिपूर्णंचचक्रतुःम
रुत्तोऽवभृथस्नान स्ताभ्यांवित्तंददौबहु ३५ तत्समादायतौवित्तंजग्मतुःस्वाश्रमंप्रति जयायचपृथग्विष्णोस्तुष्ट्यर्थंप्रददौनृपः ३६ तद्धनंचा

विभज्येतौ परस्पर्द्धौ तेपरस्परं जयोऽब्रवीत्समोभागः क्रियतामितितं तत्रसः ३७ विजयश्चाब्रवीन्मैतद्यद्यल्पं येन तत्स्य ततन् ततोजयोऽशपत्क्रोधा
द्धि जयंलुब्धमानसः ३८ गृहीत्वानदत्तस्येन तस्माद्ग्राहोभवोचित विजयस्तस्यतं शापं श्रुत्वासोप्यशपत्क्रुधा ३९ मदमत्तोऽशपस्त्वंमातंगत्वमा
तंगतां ब्रजततदाच स्वस्तु विल्लोईथ्वा नित्यार्चने विभुं ४० शापयोश्च निवृत्तिर्वै ययाचाते रमापतिं जय विजयावूचतुः भक्तावावां कथं देव ग्राहमातंगयो
निजौ ४१ भविष्यावः कृपासिंधो जन्मापो विनिवर्त्यतां श्रीभगवानुवाच मद्भक्तयोर्वचोऽसत्यं न कदाचिद्भविष्यति ४२ मयापिनान्यथाक
र्तुंशक्यतेन कदाचन प्रह्लादवचसास्तंभेप्याविर्भूतोस्यहं पुरा ४३ तस्माद्युवामिमौ शापावनुभूय स्वयं कृतौ लभेतां मत्पदं नित्यमित्युक्त्वां
तर्दधे हरिः ४४ गजावूचतुः तततौ ग्राहमातंगावभूतां गंडकीतटे जातिस्मरौ तु तद्यौन्यामपिविष्णुव्रते स्थितौ ४५ कदाचित्स गजः स्नातुं कार्ति
के गंडकीं गतः तावद्ग्राविरभूद्विष्णुः शंखचक्रगदाधरः ४६ ततः सोग्राहमातंगौ चक्रे सिष्वासमुद्धृतौ दत्वाचनिजसारूप्यं वैकुंठमनयद्विभुः
४७ तदाप्रभृतितत्स्थानं हरिक्षेत्रमितिस्मृतं चक्रसंघर्षणाद्यस्मिन्ग्रावाणोपिहिलांछिताः ४८ तावुभौ विष्णुतौ लोके जयश्च विजय
स्तथा नित्यं विष्णुप्रियौ द्वास्थौ पृष्टौ यौ हि त्वया द्विज ४९ अतस्त्वमपि धर्मज्ञ नित्यं विष्णुव्रते स्थितः त्यक्तमात्सर्यदंभोपि भवस्वसमद
र्शनः ५० तुलामकरमेषेषु प्रातःस्नायी सदाभव एकादशीव्रते निष्ठस्तुलसीवनपालकः ५१ ब्राह्मणांश्चगाश्चापि वैष्णवांश्चतथाभ
ज मसूरिकाश्चारनालं वृंताकानपिमास्पृश ५२ एवं त्वमपि देहांते तद्विष्णोः परमं पदं प्राप्नोषि धर्मदत्त त्वं तद्भक्तैर्वयथावयं ५३ तावच्च
कार्तिकादस्माद्विष्णुसंतुष्टिकारकान् नयज्ञान च दानानि न तीर्थान्यधिकानि वै ५४ धन्योऽसि विप्राग्र्य यतस्त्वयैतद्वृतं कृतं तुष्टिकरं जगद्गुरोः
परर्द्धभागात्तफला न्सुरारेः प्रणीयते ऽस्माभिरियंसलोकतां ५५ नारद उवाच इत्थं तौ धर्मदत्तं तमुक्त्वा विष्यविमानगौ तयाकलहा

पासाद्वैकुंठभवनंगतौ ५६ धर्मदत्तोप्यसौजातस्तत्रयस्तद्वनेस्थितः देहांतेतद्विभोःस्थानंभार्याभ्यामन्वितोऽभ्ययात् ५७ इतिहासमिमं
पुराभवंशृणुतेश्रावयतेचयः पुमान् हरिसंनिधिकारिणींगतिंलभतेऽसौकृपयाजगद्गुरोः ५८ ॥ ॥ इतिश्रीकार्तिकमाहात्म्येजयविजयोत्पत्ति
पुण्यशीलसुशीलोपाख्यानंनामैकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥ शौनकउवाच मुनेविचित्रमाख्यातंपुण्यंकार्तिकमासजं कृष्णावेण्योस्तदायस्याच्छि
ववविष्णुगणैःसह १ वणिक्शरीरात्कलहानिस्सृताकथितंत्वया प्रभावोऽयंतयोर्नद्योःकिंवाक्षेत्रस्यतस्यच २ तन्मेकथयधर्मज्ञविस्मयोऽत्र
महान्मम नारदउवाच कृष्णाकृष्णतनुःसाक्षाद्वेणीदेवोमहेश्वरः ३ तत्संगमप्रभावंतुनालंवक्तुंचतुर्मुखः तथापितत्समुत्पत्तिंकथयि
ष्यामितांशृणु ४ चाक्षुषस्यांतरेपूर्वंमनोर्देवःपितामहः सह्याद्रिशिखरेऽस्येयजनायोद्यतोऽभवत् ५ समान्नायज्ञसंभारान्यज्ञस्सर्वगणैर्वृ
तः युक्तोहरिहराभ्यांचतद्गिरेःशिखरंययौ ६ भृग्वाद्योमुनिगणामुहूर्तेब्रह्मदैवते तस्यदीक्षाविधानायसमाजंचक्रुरादृताः ७ अथज्येष्ठां
स्वरांपत्नीमाह्वयांचक्रुरीश्वरीं साशनैरागयौतावद्भृगुर्विष्णुमुवाचह ८ भृगुरुवाच विष्णोस्वरात्वयाहूतानायातानैवसत्वरं मुहूर्ताति
क्रमश्चैवकार्योदीक्षाविधिःकथं ९ विष्णुरुवाच मायातिचेत्स्वराशीघ्रंगायत्रीविधिसंयुता एषापिनभवेद्यस्यभार्याकिंपुण्यकर्मा
णि १० नारदउवाच एवमेवहिरुद्रोऽपिविष्णोर्वाक्यममन्यत तच्छ्रुत्वासभृगुर्बालांगायत्रींब्रह्मणस्तदा ११ निवेश्यदक्षिणेभागेदीक्षा
विधिमथाकरोत् यावद्दीक्षाविधिंतस्यविधेयंचक्रुर्मुनीश्वराः १२ तावदस्याययौतत्रस्वरायज्ञस्थलंनृप ततःसादीक्षितांदृष्ट्वागायत्रींब्रह्मणा
सह १३ सापत्न्येर्ष्याक्रोधपरास्वरावचनमब्रवीत् स्वरोवाच अपूज्यायत्रपूज्यंतेपूज्यानांचव्यतिक्रमः १४ त्रीणितत्रभविष्यंतिदुर्भिक्षंमरणंभयं
महासनेकनिष्ठेयंभवद्भिःसंनिवेशिता १५ तस्मात्सर्वेजडीभूतानदीरूपाभविष्यथ इयंचदक्षिणेभागेह्युपविश्यमहासने १६ तस्मादि

यस्मादस्यास्तनुरूपात्तु निम्नगा नारद उवाच ततस्तच्छापमाकर्ण्य गायत्री कंपिता स्वरां १७ समुत्थायाशपद्देवैर्वीक्ष्यमाणापि तां स्वरां गाय-
त्र्युवाच तव भर्ता यथा ब्रह्मा गमाप्येष तथा खलु १८ वृथा शपस्त्वं यस्मान्मां भवत्वमपि निम्नगा ततो हाहाकृताः सर्वे शिवविष्णुमुखाः सुराः
१९ प्रणम्य दंडवद्भूमौ स्वरां तत्र विजिज्ञपुः देवा ऊचुः देवि सर्वे वयं शप्ता ब्रह्मा चाद्यस्त्वयाऽधुना २० यदि सर्वे जडी भूता भविष्यामोऽत्र नि-
म्नगाः तदा लोकत्रयं ह्येतद्विनंक्ष्यति विनिश्चितं २१ अविवेकः कृतस्तस्माच्छापोऽयं विनिवर्त्यतां स्वरोवाच नार्चितो हि गणाध्यक्षो यज्ञादौ
वस्सुरोत्तमाः २२ तस्माद्ब्रह्मा च रुद्रश्च यूयं भवथ निम्नगाः आवामपि सपत्न्यौ च स्वांशेनैव च निम्नगे २३ भविष्यावोऽत्र भो देवाः पश्चिमाभिमु-
खीं वहे नारद उवाच इति तद्वचनं श्रुत्वा ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वराः २४ जडरूपा भवन्नद्यः स्वांशेनैव तदा मुने तत्र विष्णुरभूत्कृष्णा वेणी देवो महे-
श्वरः २५ ब्रह्मा ककुद्मती चापि पृथगेव बभूव ह देवाः स्वानपि तानंशाञ्जडान्कृत्वा विचिक्षिपुः २६ सह्याद्रिशिखरे यस्ताः पृथगासंस्तु निम्नगाः दे-
वांशैः पूर्ववाहिन्यो बभूवुः पश्चिमावहाः २७ तयान्यंशैः पृथक्कृत्वा शतशोऽथ सहस्रशः गायत्री च स्वरा वपश्चिमाभिमुखेन तदा २८ योगेनैवाभव-
न्नद्यौ सावित्रीति प्रथां गते ब्रह्मणा स्थापितौ तत्र यज्ञे हरिहरावुभौ २९ महाबलातिबलिनौ नाम्ना देवौ बभूवतुः तयोर्नद्योस्तु माहात्म्यं नाहं वक्तुं
क्षमो नृप ३० यत्र ब्रह्मादयो देवाः स्वांशैः स्थितिं तितत्रवै नद्युद्भवं पापहरं शुभं यः शृणोति यः श्रावयते च भक्त्या ३१ सा तस्य पुंसः सकलं फलं च तत्
दर्शनस्नानगमोद्भवं स्मृतं इति ते कथितं ब्रह्मन्कार्तिकव्रतजं फलं ३२ वनस्पतीनां तुलसी मासानां कार्तिकः प्रियः एकादशी तिथीनां च क्षेत्रा-
णां द्वारका तथा ३३ एतेषां सेवनं यस्तु करोति नियतेंद्रियः हरेर्वल्लभतां याति न तथा यजनादिभिः ३४ पापेभ्यो न भयं तेन कर्तव्यं निरयादपि पू-
र्वोक्तविधिना कार्यं कार्तिके व्रतमुत्तमं ३५ स एव परमो धर्मो यत्तत्तुष्यति केशवः यतो धर्माद्धरौ प्रीतिः स धर्मः श्रेयसां परः ३६ सूर्यं कृतार्थी

वतस्सर्वलोकेसत्रापदेशेनयदत्रतीर्थे चिरंस्थिताःकृष्णकथानुबद्धाः निरंतरंतंमुदयंतिधन्याः ३७ अन्याःकथाश्चित्रकथानुबद्धाः व्यर्था।
द्विजाःकृष्णयशोविवर्जिताः शृंगारवीरादिरसाश्रितास्तुनयत्रपापंनहिपुण्यमेव ३८ मावीहृयद्यप्यतिदुःखदुःखंकलौनृषु ध्वस्तसुखेषु।
शौनक नतद्भवेत्कृष्णकथामृतार्णवेनिमज्जतांकार्तिकमासिनिश्चितं ३९ कलौयुगेकीर्तनतोहिमाधवोभवेत्प्रसन्नोऽखिलदुःखहृत्स
तां तस्मिञ्जनःप्राप्यचजन्मभूमौनाम्नापिकृष्णस्यनखेदभाग्भवेत् ४० यःस्वशक्त्याव्रतंकिंचिन्नारभेत्कार्तिकेनरः तिर्यग्योनिमवाप्नोतिमंत
व्यःसहिराक्षसः ४१ कार्तिकेसुकृतंकिंचिद्विष्णुमुद्दिश्यमानवैः कृतंतदक्षयफलंभवेद्विष्णुप्रसादतः ४२ अतोव्रतवतास्थेयंवैष्णवेनैव
कार्तिकेअव्रतेनगतोयेषांकार्तिकोमर्त्यधर्मिणां ४३ इष्टापूर्तौवृथातेषांधर्मोभूदेवकीर्तितो व्रतोपवासनियमैःकार्तिकोयस्यगच्छति॥
४४ देवोवैमानिकोभूत्वासयातिपरमांगतिं संवत्सरकृतानांचवस्तुत्युक्तानांचकर्मणां ४५ व्रतानांनियमानांचसमाप्तिःकार्तिकेमता चातुर्मास्यव्र
तानांचकार्तिकेविहितस्यच ४६ एकादश्यांतुशुक्लायांकार्तिक्यामथवापिवा उद्यापनंहिकर्तव्यंकर्मणांपूर्णहेतवे ४७ शौनकउवाच अहोमा
हात्म्यमतुलंकार्तिकस्यत्वयेरितं चातुर्मास्यव्रतानांचप्राशस्त्यंचैवनारद ४८ उद्यापनविधिंब्रूहिव्रतपूर्तिवदस्वमे ४९॥ इतिश्रीपद्मपु
राणेकार्तिकमाहात्म्येकृष्णावेण्योरुत्पत्तिकथनंनामविंशोऽध्यायः २०॥ नारदउवाच अथोर्जव्रतिनःसम्यगुद्यापनविधिंमुने तंशृणुष्व।
समाख्यातंसविधानंसमासतः १ ऊर्जशुक्लचतुर्दश्यांकुर्यादुद्यापनंव्रती व्रतसंपूर्णतार्थायविष्णुप्रीत्यर्थमेवच २ तुलस्याउपरिष्टात्तु
कुर्यान्मंडपिकांशुभां त्रिंशहंडप्रमाणेश्चकुर्यादायामविस्तरं ३ सतोरणंचतुर्द्वारंपुष्पचामरशोभितं द्वारेषुद्वारपालांश्चपूजयेन्मृण्मयान्पृ
थक् ४ आवाहनासनेपाद्यमर्घमाचमनीयकं स्नानंवस्त्रमलंकारंचंदनंपुष्पपत्रिकां ५ धूपंदीपंचनैवेद्यंचंदनंचप्रदक्षिणां विसर्जनंत।

तः कुर्यादुपचारांस्तु षोडश ६ आभूषणानि देयानि पंच पात्राणि शक्तितः ब्राह्मणाय प्रदातव्यं गोहिरण्यं सवस्त्रकं ७ पुण्यशीलं सुशीलं च
जयं विजयमेव च तुलसीमूलदेशे च सर्वतोभद्रमेव च ८ चतुर्भिर्वर्णकैः सम्यक् शोभाढ्यं समलंकृतं तस्योपरिस्थाप्य कलशं पंचरत्नसमन्वितं ।
९ महाफलेन संयुक्तं कुंभं तत्र निधाय च सौवर्णपत्रके विष्णोश्चंदनप्रतिमां लिखेत् १० पूजयेत्तत्र देवेशं शंखचक्रगदाधरं पीतकौशेयव
सनं युक्तं जलधिकन्यया ११ इंद्रादिलोकपालांश्च मंडले पूजयेद्व्रती द्वादश्यां प्रतिबुद्धोऽसौ त्रयोदश्यां यतः सुरैः १२ दृष्टोऽर्चितश्चतुर्दश्यां तस्मा
त्पूज्यस्तथान्विह तस्यामुपवसेद्भक्त्या शांतः प्रयतमानसः १३ पूजयेद्देवदेवेशं सौवर्णं गुर्वनुज्ञया उपचारैः षोडशभिर्नानाभक्ष्यसम
न्वितैः १४ रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवाद्यादिमंगलैः गीतं कुर्वंति ये भक्त्या जागरे चक्रपाणिनः १५ जन्मांतरशतोद्भूतैस्ते मुक्ताः पापसंचयैः कुं
भान्यं च त्रिंशत् संख्यान्यन्नान्नेन समन्वितान् १६ तावंतो भोज्ययुतानेव ताम्रदीपसमन्वितान् सौवर्णं राजतं ताम्रं पात्रं कुर्याच्च शक्तितः १७ त्रिंशत्यं
च च पात्राणि नानाफलयुतानि च शय्यादिकं प्रकर्तव्यं विष्णुसंतुष्टिकारकं १८ नराणां जागरे विष्णोर्गीतं नृत्यं च कुर्वतां गोसहस्रं च दत्तानां
फलं समुदाहृतं १९ गीतनृत्यादिकं कुर्वन्दर्शयन्कौतुकानि च पुरतो वासुदेवस्य रात्रौ च हरिजागरे २० पठन्विष्णुचरित्राणि यो रक्षयति वैष्णवा
न् सुखेन कुरुते वाद्यं क्ष्वेडालापांश्च वादयेत् २१ भावैरेतैर्नरो यस्तु कुरुते हरिजागरं दिने दिने तस्य पुण्यं तीर्थकोटिसमं स्मृतं २२ ततस्तु पौर्णमा
स्यां च सपत्नीकान्द्विजोत्तमान् त्रिंशन्मितानथैकं वा स्वशक्त्या वा निमंत्रयेत् २३ वरान्दत्त्वा यतो विष्णुर्मत्स्यरूपी भवत्ततः तस्यां दत्तं हुतं जप्तं तदक्ष
यफलं स्मृतं २४ अतस्तान्भोजयेद्भक्त्या पायसान्नादिना द्विजान् अतो देवादितिद्वाभ्यां जुहुयात्तिलपायसं २५ प्रीत्यर्थं देवदेवस्य देवानां च पृथ
क् पृथक् दक्षिणां च यथाशक्ति प्रदद्यात्प्रणमेच्च तान् २६ पुनर्देवं समभ्यर्च्य देवांश्च तुलसीं तथा ततो गां कपिलां तत्र पूजयेद्विधिवद्व्रती ।

२७ गुरुंव्रतोपदेष्टारंवस्त्रालंकरणादिभिः सपत्नीकंसमभ्यर्च्यतांश्चविप्रान्क्षमापयेत् २८ युष्मत्प्रसादाद्देवेशःप्रसन्नोममसर्वदा व्रता
दस्माच्चयत्पापंसप्तजन्मकृतंमया २९ तत्सर्वंनाशमायातुस्थिरामेचास्तुसंततिः मनोरथाश्चसफलाःसंतुनित्यंममार्चनात् ३० देहांतेवैष्णवंस्था
नंप्राप्नुयामतिदुर्लभं इतिक्षमाप्यतान्विप्रान्प्रसादाच्चविसर्जयेत् ३१ नामर्चांगुरवेदद्यात्सवायुक्तांतथाव्रती ततःसुहृद्युतःस्वयंभुंजीत
भक्तिमान् ३२ कार्तिकेवाथतपसिविधिरेवंविधःस्मृतः एवंयःकुरुतेसम्यक्कार्तिकस्यव्रतंनरः ३३ विपापःसर्वकामाप्तोविष्णुसन्निधिगोभ
वेत् सर्वव्रतैःसर्वतीर्थैःसर्वदानैश्चयत्फलं तत्कोटिगुणितंज्ञेयंसम्यगस्यविधानतः तेधन्यास्तेमहापुण्यास्तेषांसर्वफलोदयः ३५ विष्णुभ
क्तिरतायेस्युःकार्तिकव्रतकारिणः संक्षेपेणमहाभागव्रतपूर्तिंशृणुष्वमे ३६ ततोहंसंप्रवक्ष्यामियच्चशुतंब्रह्मणोमुखात् कार्तिकंसकलंमा
संनक्तंभोजीभवेच्चयः ३७ षड्रसंभोजनंदद्याद्विप्रेभ्योव्रतपूर्तये तेनधर्मेण संस्वर्गमाप्नोतिक्लेशवर्जितः ३८ अन्नदानंतथास्नानंभूशयोर्
तिवर्जनं एकभक्ताशनंनृणामेतत्प्रोक्तंमहाव्रतं ३९ एतदंतेब्राह्मणानांभोजनंपायसाधिकं व्रासोन्वितंसुवर्णंचदक्षिणात्रप्रकीर्तिता ४०
तेनेंद्रलोकमाप्नोतिसर्वलोकसुखप्रदं एकभक्तेकेवलेतुब्राह्मणानांचभोजनं ४१ दत्वासमासौविप्रेंद्रधरेशोधार्मिकोभवेत् अयाचिते
त्वनड्वाहंसहिरण्यंप्रदापयेत् ४२ योगसिद्धिमवाप्नोतिसर्वकामप्रदायिनीं हविष्याशीततोदद्याद्घृतांतेगांपयस्विनीं ४३ तेनासौसम
वाप्नोतिब्रह्मलोकंसनातनं फलाहारेत्वन्नदानंविष्णुमुद्दिश्यकार्तिके ४४ तेनप्रीताद्धरेरेवजायतेऽत्यंतसिद्धिमान् पत्रभोजनकर्त्रा
हिब्राह्मणायप्रदापयेत् ४५ रौप्यंहिपात्रंभक्त्यातुसवस्त्रंदक्षिणान्वितं पितृलोकमवाप्याशुसुखमक्षयमश्नुते ४६ गुडत्यागेगुडं
दद्यान्मधुरेमधुरंतथा सदामुनिःसदायोगीमधुत्यागेमधुप्रदः ४७ फलानांनियमेतत्तत्फलदानंप्रशस्यते सर्वकामानवाप्नोतिसुत्त

रांयद्यदिच्छति ४८ कांस्यत्यागे कांस्यपात्रं सघृतं शर्करान्वितं अमांसाशी नरो दद्यान्मांसप्रायं च भोजनं ४९ सुवर्णवाससी शुक्ले अक्षयं स
र्गवांछया धात्रीस्नानेन रो दद्याद्दधिचाधिकमेव च ५० रूपवान्सुखसंपन्नस्तेनासौ जायते नरः तिलत्यागे घृतं देयं घृतत्यागे पयस्मृतं ५१
दधित्यागे सुवर्णं च पयसो रूप्यमेव च धान्यानां नियमे धान्यं दातव्यं भूतिमिच्छता ५२ दद्याद्भूमिशयी शय्यां सतूलां गेंदुकान्वितान् विमा
नेनार्कवर्णेन दिवि देवाग्रणीर्भवेत् ५३ मौने घंटां सतिलां चापि सहिरण्यान्प्रदापयेत् वागीशत्वमवाप्नोति नरो नास्त्यत्र संशयः ५४
ब्रह्मचर्येण यो भूमौ शयीत नियमेन तु दंपत्यो भोजनं कांस्यं शय्यां दद्यात्समाहितः ५५ सभोगां दक्षिणायुक्तां व्रतस्य परिपूर्तये विमानवरमारू
ढः सिद्धगंधर्वसेवितः ५६ कल्पं विहरति स्वर्गे त्वप्सरोगणसेवितः उपानहौ प्रदद्याद्वा उपानत्परिवर्जने ५७ दिव्यं विमानमारूढः स्वर्गे विहरते
चिरं लवणामिषयोस्त्यागे व्रतांते गोप्रदो भवेत् ५८ आदित्यलोकमाप्नोति सर्वभोगसमन्वितः नित्यं दीपप्रदो यस्तु भवेच्च विबुधालये ५९॥
दीपं तु सघृतं ताम्रं कांचनं वाससी शुभे प्रदद्याद्विष्णुभक्ताय वैकुंठं प्राप्नुयेन्नरः ६० वर्जयित्वा नरो विप्रः कार्तिके सकलं रसं दद्याद्रसयुतं ना
चारसपात्रेण संयुतं ६१ संपूज्य विप्रमिथुनं भोजयेदपरान्द्विजान् सयाति परमं स्थानं वैष्णवं पापनाशनं ६२ वैरूप्यं चापि दौर्गंध्यमिहना
प्नोति वै क्वचित् तांबूलं वर्जयेद्यस्तु चातुर्मास्येथ कार्तिके ६३ व्रतांते स तु सौवर्णं कारयित्वांबरान्वितं मुक्ताफलयुतं पत्रं ब्राह्मणाय निवेदये
त् ६४ नासौ प्राप्नोति दौर्भाग्यं रक्तकंठो भवेत्सदा आषाढादिचतुर्मासान्प्रातः स्नायी च कार्तिके ६५ विप्रेभ्यो भोजनं दत्वा कार्तिक्यां गोप्रदो
भवेत् ऋषिलोकमवाप्नोति सर्वधर्ममयं शुभं ६६ कार्तिके शुक्लपक्षस्य कृत्वा ह्येकादशीं नरः प्रातर्दत्वा शुभान्कुंभान्प्रयाति हरिमंदिरं ६७
वर्जयेद्यस्तु पुष्पादि भोगान्मासचतुष्टये दद्यात्सुवर्णपुष्पाणि द्विजाय सुसमाहितः ६८ प्रदद्यादथ कार्तिक्यां विष्णुर्मे प्रीयतामिति सर्वपाप

विनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ६९ अनुलेपनंमज्जनंचमंडनंचहरेर्गृहे यःकुर्यात्सव्रतान्तेतुधेनुंदद्यात्पयस्विनीं ७० सौभाग्यमतु-
लंप्राप्यदेवलोकेमहीयते मासोपवासेसंभोज्यब्राह्मणान्द्वादशव्रती ७१ धेनुंदद्याच्चविप्रायविष्णुर्मेप्रीयतामिति सर्वपापविनिर्मुक्तो
विष्णुलोकंसगच्छति ७२ पक्षांतेद्वादशींयस्तुकृत्वादेवादिपूजनं संपूज्यविप्रान्संदद्यात्कपिलांवस्त्रसंयुतां ७३ सकांचनींब्रह्म
लोकंसमाप्नोतिसुरार्चितं स्थालीपाकंपरित्यज्यचातुर्मास्येऽथकार्तिके ७४ दद्यात्स्थालींतुविप्रायताम्रींचैवसदक्षिणां सक्तुतंडुलसंपू
र्णांवस्त्रकांचनसंयुतां ७५ सकांचनींब्रह्मलोकंसमाप्नोतिनसंशयः एकांतरोपवासेचपात्राण्यष्टौप्रदापयेत् ७६ ताम्राणिस्वर्णयुक्तानिशर्करापू
रितानिचफलवस्त्रयुतान्येवविष्णुर्मेप्रीयतामिति ७७ वैकुंठेहरिसारूप्यमवाप्यसुखमेधते त्रिरात्रेमणिकांदद्याच्छत्रोपानत्समायुतां ७८ सवस्त्रांसहिर
ण्यांचरम्यांताम्रमयींदृढां अनड्वाहंतथापीनंधरित्रीकषणक्षमं ७९ रुद्रलोकमवाप्यासौकल्पकोटिसुखंवसेत् शाकाहारेघृतंदद्यात्पात्रंराजतमेव
च ८० सस्वर्गलोकमाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा एवंकृतंहिविप्रेंद्रव्रतंसंपूर्णतांव्रजेत् ८१ सर्वव्रतेषुसामान्यंस्वर्णदानंस्मृतंबुधैः यथोक्तदाना
भावेतुस्वर्णंसर्वत्रदापयेत् ८२ नदद्याद्दक्षिणांयस्तुव्रतंकृत्वासमापने नतत्फलंसमाप्नोतिप्रेत्यचेहचशौनक ८३ व्रतंवैकल्पमायातिप्र
त्काचोद्यापनंयतः यथोक्तकरणाशक्तौकुर्याद्वित्तानुसारतः ८४ सर्वेषामप्यलाभेतुवित्तशाठ्यविवर्जितः गत्वाविप्रगृहंतत्रविनयावनतः॥
स्थितः ८५ अच्छिद्रंप्रार्थयेद्भक्त्याकृत्वापादाभिवंदनं अच्छिद्रतास्त्वितिप्रोक्तेनेनसंपूर्णताभावेत् ८६ विप्रवाक्यंस्मृतंवेदव्रतोद्यापनकार
कं ८७ धरामराणांवचनेव्यवस्थितादिवौकसोऽङ्गःस्वशतैःसमेताः कोलंघयेच्चैववचोहितेषांश्रेयोऽभिकामोमनुजःसुविद्वान् ८८ इदंमयाध
मरहस्यमुक्तंवेदाश्रितंपापविमोचनार्थं फलप्रदंकेशवतुष्टिहेतोर्विकल्पहीनंमनसोऽभिलाषं ८९ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहात्म्येएक

का॰ मा॰ विंशोऽध्यायः २१ शौनकउवाच विस्मापनीयंतन्मेतद्यत्त्वयाकथितंमुने परदत्तेनपुण्येनकलहामुक्तिमागता १ एताःपूर्वंत्वयोक्तायेनेऽपिस्व
र्गंगतास्तथा इत्थंप्रभावोयोमासःकार्त्तिकोमोहरेःप्रियः २ स्वामिद्रोहादिपापानिस्नानपुण्यैर्गतानियत् दत्तंचेल्लभ्यतेपुण्यंयत्परेणकृतंविभो ३
अदत्तंकेनमार्गेणलभ्यतेवानवेतिच नारदउवाच अदत्तान्यपिपुण्यानिपापानिचनृणांनरैः ४ प्राप्यतेकर्मणायेनतद्यथावन्निशामय देशग्रा
मकुलानिस्युर्भागभाञ्जिकृतादिषु ५ कलौतुकेवलंकर्त्ताफलभुक्पापपुण्ययोः अकृतेऽपिहिसंसर्गेव्यवस्थेयमुदाहृता ६ संसर्गात्पुण्यपापा
नियथायांतिनिबोधय एकत्रशयनाद्यानादेकपात्रस्यभोजनात् ७ फलार्द्धंप्राप्नुयान्मर्त्योयथावत्पुण्यपापयोः अध्यापनाद्याजनाद्वाएकपं
क्त्याशनादपि ८ तुर्यांशंपुण्यपापानांपरोक्ष्यंलभतेनरः एकाशनादेकपात्रान्निश्वासत्यागसंगतः ९ षडंशफलभागीस्यान्नियतंपुण्यपाप
योःस्पर्शनाद्भाषणाद्वापिपरस्यस्तवनादपि १० दशांशंपुण्यपापानांनित्यंप्राप्नोतिमानवः दर्शनश्रवणाभ्यांचमनोध्यानात्तथैवच ११ परस्या
पुण्यपापानांशतांशंप्राप्नुयान्नरः परस्यनिंदांपैशुन्यंधिक्कारंचकरोतियः १२ तत्कृतंपातकंप्राप्यस्वपुण्यंप्रददातिहि कुर्वंतिपुण्यपापा
निसेवांयःकुरुतेपरः १३ पुत्रभृत्यकशिष्येभ्योयदन्यःकोपिचागतः तस्यसेवानुरूपंचेद्द्रव्यंकिंचिन्नदीयते १४ सोपितस्यानुरूपेणतत्पुण्य
फलभाग्भवेत् एकपंक्त्याशिनंयस्तुलंघयन्परिवेषयेत् १५ तस्यपुण्यषडंशंचलभेद्यस्तुविलंघितः स्नानसंध्यादिकंकुर्वन्यःस्पृशेद्वाप्र
भाषते १६ तत्पुण्यकर्मषडंशंदद्यात्तस्मैविनिश्चितं धर्मोद्देशेनयोद्रव्यंपुण्यकर्मकरोतियः १७ कर्मकृत्पापभागीचधनिनस्तद्भवंफलंन
ददातिऋणंयस्तुपरस्यम्रियतेनरः १८ धनीतत्पुण्यमादत्तेस्वधनस्यानुरूपतः बुद्धिदोऽप्यनुमंताचपरोपकरणप्रदः १९ बलदश्चापि
षडंशंप्राप्नुयात्पुण्यपापयोः प्रजाभ्यःपुण्यपापानांराजाषष्ठांशमुद्धरेत् २० शिष्याद्गुरुःस्त्रियोभर्त्तुःपितापुत्रात्तथैवच स्वपत्नेरपिपुण्यस्य

जा॰ २२

याम॰ २८

दर्द्दुमवाप्नुयात् २१ येनस्यात्तुधनाशश्च द्वर्त्तनेतुष्टिकारिणी परहस्तेन दानाद्यंकुर्वतःपुण्यकर्मणः २२ विनाभृतकपुत्राभ्यांकर्त्तापष्ठांश
मुद्धरेत् हर्त्तिदो हर्त्तिसंभोक्तुः पुण्यंषष्ठांशमुद्धरेत् २३ आत्मनोवापरस्यापियदिसेवांनकारयेत् इत्थंह्यदत्तान्यपिपुण्यपापान्यायांतिनित्यंपरसं
चितानि २४ शृणुष्वचास्मिन्नितिहासमग्र्यंपुराभवंपुण्यमतिप्रदंच पुरावंतिपुरीवासी विप्रआसीद्धनेश्वरः २५ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टःपापनिष्ठः
सुदुर्मतिः रसकंबलचर्माद्यैःसत्येत्वनृतभाषकः २६ स्तेयवेश्यासुरापानद्यूतसंसक्तमानसः देशाद्देशांतरंगच्छन्क्रयविक्रयकारणात् २७
माहिष्मतींपुरीमागात्कदाचित्सधनेश्वरः यस्यांचप्रगताभातिनर्मदापापनाशिनी २८ कार्तिकव्रतिनस्तत्रनानाग्रामगतान्नरान् सदृष्ट्वा
विक्रयंकुर्वन्मासमेकमुवासह २९ सनित्यंनर्मदातीरेभ्रमन्विक्रयकारणात् ददर्शब्राह्मणान्स्नानेजपदेवार्चनेस्थितान् ३० कांश्चित्पुराण
पठतःकांश्चित्तच्छ्रवणेरतान् नृत्यगायनवादित्रविष्णुस्तवनतत्परान् ३१ विष्णुमुद्रांकितान्कांश्चित्तुलसीमाल्यधारिणः ददर्शकौतुकाविष्टस्
त्रतत्रधनेश्वरः ३२ नित्यंपरिभ्रमंस्तत्रदर्शनस्पर्शभाषणात् वैष्णवानांतथाविष्णोर्नामश्रावादिसोलभत् ३३ एवंमासंस्थितःसोथकार्तिकोद्या
पनावधि क्रियमाणंददर्शासौप्रीत्यर्थंत्रिपुरद्विषः ३४ त्रिपुराणांकृतोदाहोयतस्तस्यांशिवेनतु अतस्तुक्रियतेतस्यांतिथौभक्तैर्महोत्सवः
३५ तत्रनृत्यादिकंपश्यन्बभ्रामसधनेश्वरः तावत्कृष्णाहिनादष्टोविह्वलःसपपातह ३६ जनास्तंपतितंवीक्ष्यपरिवव्रुःकृपान्विताः
तुलसीमिश्रितैस्तोयैस्तन्मुखंसिषिचुस्तदा ३७ अथदेहंपरित्यक्तंतंबध्वायमकिंकराः वध्यमानंकशाघातैर्निन्युःसंयमिनींरुषा ३८
चित्रगुप्तस्तुतंदृष्ट्वा निर्भर्त्स्यावेदयत्तदा यमायतत्रबालत्वात्कर्मयद्दुष्कृतंकृतं ३९ चित्रगुप्तउवाच नैवास्यदृश्यतेकिंचिदाबाल्यात्सुकृतं
क्वचित् दुष्कृतंशक्यतेवक्तुंनास्यवर्षशतैरपि ४० पापमूर्तिरयंदुष्टःकेवलंदृश्यतेविभो तस्मादाकल्पमयीदंनिरयेपरिपच्यतां ४१

नारदउवाच निशम्येत्थंवचः क्रोधाद्यमः प्राहस्वकिंकरान् दर्शयन्नात्मनोरूपंकालाग्निसदृशप्रभं ४२ पापिनामतिदुर्द्दर्श्यंदर्शयन्पापजं
फलं यमउवाच भोप्रेतपतयस्त्वेनंवध्यमानंस्वमुद्गरैः कुंभीपाकेक्षिपंत्वाशुदुष्टकल्मषदर्शनं ४४ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेकार्तिकमाहा॥
त्म्येधनेश्वरोपाख्यानेद्वाविंशोऽध्यायः २२ नारदउवाच ततोमुद्गरनिर्भिन्नमूर्द्धानंप्रेतपोनयत् कुंभीपाकेचिक्षिपुस्तेतैलक्वथनशब्दि
ते १ यावत्तंचिक्षिपुस्तत्रतावच्छीतलतांययौ कुंभीपाकोयथावह्निःप्रह्लादक्षेपनात्पुरा २ तद्दृष्ट्वामहदाश्चर्यंप्रेतपोविस्मयान्वितः वेगादा
गत्यततस्सर्वंयमायावेदयत्तदा ३ यमस्तुकौतुकंश्रुत्वाप्रेतपेननिवेदितं आः किमेतदितिप्रोक्त्वातत्स्मानाय्यविचारयत् ४ तावदभ्यागमंस्तत्र
त्वहमेवहिजोत्तमाः यमेनपूजितःसम्यक्तंदृष्ट्वावाक्यमब्रुवन् ५ नैवायंनिरयान्भोक्तुंक्षमःसवितृनंदन यस्माद्देनेऽस्यसंजातंकर्मयत्॥
न्निरयापहं ६ यःपुण्यकर्मणांकुर्याद्दर्शनस्पर्शभाषणं तत्षडंशमवाप्नोतिपुण्यस्यनियतंत्रुरः ७ असंख्यातेस्तुसंसर्गोक्तनवानेषयद्यम का
र्त्तिकव्रतिभिर्मासंतस्मात्पुण्यसमागमः ८ परिचर्याकरस्तेषांसंपूर्णव्रतपुण्यभाक् अथास्योर्जव्रतोद्भूतपुण्यसंख्यानविद्यते ९ कार्तिकव्रति
नांपुंसांपातकानिमहान्त्यपि मदहेदात्ममहत्सा विष्णुःसद्भक्तवत्सलः १० अनेचनामदैत्तोयेस्तुलसीमिश्रितेस्त्वयं वैष्णवैःस्नापितोविष्णो॥
र्नामसंश्राविताय्यतः ११ तस्मान्निहतपापोऽयंसद्गतिंप्राप्तुमर्हति वैष्णवानुग्रहीयस्मान्निरयेनैवपच्यते १२ आईस्पृष्ट्वैर्यथापापैर्नि
रयेभोगसंनिधिं प्राप्यतेसुकृतैस्तद्वत्स्वर्गस्तत्संनिधिस्तदा १३ तस्मादकामपुण्योहियस्सयोनिस्थितस्त्वयं विलोक्यनिरयान्सर्वान्पाप
भोगप्रदर्शकान् १४ इत्युक्त्वामथिगतवतिनत्रसोर्विमद्वाक्यश्रवणविबुद्धतत्सुकर्म तंविप्रपुनरनयत्स्वकिंकरेणतान्सर्वान्निरयगणान्प्रद
र्शनीयान् १५ ततोधनेश्वरंनीत्वानिरयांश्चैनपोऽब्रवीत् प्रदर्शयिष्यतान्सर्वान्यमाज्ञाकरस्तदा १६ यमउवाच पश्येमान्निरयान्घो॥

राध्यते स्वयमन्यान्भयान् ये स्तु पापकरा नित्यं पात्यंते यमकिंकरैः १७ तप्तवालुकनामायं निरयो घोरदर्शनः यस्मिन्नेते दग्धदेहाः पच्यंते पापका
रिणः १८ अतिथीन्वैश्वदेवान्ते सुस्नामानागतांश्च ये पूजयंति न ते ह्येते पच्यंते स्वेन कर्मणा १९ गुर्वग्निब्राह्मणानांश्च देवान्मूर्द्धाभिषिक्तका
न्‌ताडयंति पदा ये वै ते निर्दग्धांत्रयस्त्विमे २० षड्ढं दस्त्वेष निरयो नानापाकैः प्रपच्यते तथा चैवांधतामिस्रो हि तृतीयो निरयो महान् २१
पक्षः सूचीमुखैर्देहाभिद्यंते पापकर्मिणां कृमिभिर्घोररूचकैश्चतमोनर्कामभेर्द्विज २२ असावपि स्थितः षोढा श्वकाकमृगपक्षिभिः पर
मर्मभिदो मर्त्याः पच्यंते ये सुपापिनः २३ तृतीयः क्रकचो ह्येषु निरयो घोरदर्शनः यत्रेमे क्रकचैर्मर्त्याः पच्यंते पापकर्मिणः २४ असिपत्रवना
ख्येस्तु षट्प्रकारोप्ययं स्थितः परपुत्रादिभिर्ये वै वियोगं प्रापयंति हि २५ दुःखैरन्यैरपि परान्पच्यंते तद्वमे नराः असिपत्रैश्छेद्यमानाह कांदिश्या
पलायिताः २६ पच्यंते पापिनः पश्चक्रंदमानानन्यन्त स्ततः अर्गलाख्यो महाघोरश्चतुर्थो निरयो ह्ययं २७ पश्य नानाविधैः पाशैर्बध्यंते यमकिं
रैः मुद्गराद्यैर्वध्यमानाः क्रंदंते ते तु पापिनः २८ सज्जनान्ब्राह्मणाद्यांश्च निरुध्यंती ह ये नराः कारागृहाद्यैस्ते पापाः पात्यंते यमकिंकरैः २९ अ
सावपि ह्रि षड्ढेदो वधबंधादिभिः स्थितः कूटशाल्मलिनामानं निरयं पश्य पंचमं ३० यत्राङ्गारनिभायेन शाल्मल्यश्च स्थिता द्विज यत्रयोद्दा
दिपच्यंते यातनाभिरिमे नराः ३१ परदारपरद्रव्यपरद्रोहरताश्च ये रक्तप्रायमिमं पश्य षष्ठं निरयमद्भुतं ३२ अधोमुखा विपच्यंते यत्र पाप
कृतो नराः अभक्ष्यभक्षका निन्दापैशुन्याभिरताश्च ये ३३ पुनः पुनर्मज्जमानाः क्रंदंते भीषणारवान् षट्प्रकारोऽपि गंधोसावास्थानो ह्यसं
स्थितः ३४ कुंभीपाकः सप्तमोयं निरयो घोरदर्शनः षोढा तैलादिभिर्द्रव्यैर्दह्यते श्वर विलोकय ३५ महापातकिनो यत्र क्वथ्यंते यमकिंकरैः बहू
न्यब्दसहस्राणि सोन्मज्जननिमज्जनैः ३६ चत्वारिंशन्मिता ह्येतान्वधिकारान्सरौरवान् अकामान्यातकं पुष्पकंकामादाईसुराहतं ॥ ३७ ॥

र्द॰ का॰मा॰ ५०

आईस्पृष्कादिभिः पापैर्द्विप्रकारानवस्थितान् चतुराशीतिसंख्याकैः पृथग्भेदानवस्थितान् ३८ अप्रकीर्णमपांक्तेयं मलिनीकरणं तथा जातिभ्रं-
शकरं तद्वदुपपातकसंज्ञितं ३९ अतिपापमनालापं सप्तधा पातकं स्मृतं एभिः सप्तसु पच्यंते निरयेषु यथाक्रमं ४० कार्तिकव्रतिभिर्यस्मात्संसर्गी
ह्यभवत्तव तत्पुण्योपचयादेते निर्जिता निरयाः खलु ४१ नारद उवाच दर्शयित्वेति निरयांश्चैतपस्तमथाहरत् धनेश्वरं यमस्तं लोकं धनय।
क्षेति यः स्मृतः ४२ यत्ताक्ष्र्यसाकरोत्तीर्थमयोध्यायामगाद्द्विजः ४३ एवं प्रभावः खलु कार्तिकोयं भक्तिप्रदो मुक्तिप्रदश्च यस्मात् प्रयात्यनेना
कार्जितपातकायेब्रनरस्य सद्दर्शनमात्रपि मुक्तिं ४४ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये नरकदर्शनं त्रयोविंशोऽध्यायः २३ नारद उवा
च एतत्कार्तिकमाहात्म्यं कृष्णः सत्यायया ब्रवीत् तच्छृणुष्व मुनिश्रेष्ठ सर्वं कथयतो मम १ पारिजातस्यैकदाहं पुष्पमानीयनाकतः दा॰
कृष्णहस्तेहं रुक्मिण्यै स च दत्तवान् २ तच्छ्रुत्वा सत्यभामाथ बहुधा क्रोधमावहत् कृष्णेन सांत्विता सत्या जानत्वं संददामिते ३ इत्युक्त्वा
गरुडारूढः सत्यभामायुतो दिवं जगाम पारिजातस्य वृक्षमुत्पाट्यनीतवान् ४ श्रुत्वेंद्रो बहुधा युद्धमकरोच्च निराकृतः आनीय सत्यभामा
या अंगणे समरोपयत् ५ तं प्राप्य सत्यभामाथ पारिजातसमन्वितं कृष्णं दत्तवतीमह्यं मयाचपरिहासितः ६ गामेकां निःक्रयं दत्वा पुनस्तं
भाविनः प्रभुः गतः श्रीकृष्णमामंत्र्य गतेमयि भृगूद्वह ७ हर्षोत्फुल्लाननासत्या वासुदेवमथाब्रवीत् सत्यभामोवाच धन्यास्मि कृ
तकृत्यास्मि सफलं जीवितं च मे ८ मज्जन्मनि निदानं च धन्यौ तौ पितरौ मम यौ मां त्रैलोक्यसुभगां जनयामासतुर्ध्रुवं ९ षोडशस्त्रीस
हस्राणां वल्लभाहं यतस्तव यस्मान्मयादिपुरुषः कल्पवृक्षसमन्वितः १० यथोक्तविधिना सम्यङ्नारदाय समर्पितः यद्वार्तामपि जानं
ति भूमिसंस्थाजनास्तव ११ सोयं कल्पद्रुमो गेहे मम तिष्ठति सांप्रतं त्रैलोक्याधिपतेस्तेहं श्रीपतेरतिवल्लभा १२ अतोहं प्रष्टुमिच्छामि किंचि

जा॰ २३

राम॰ ४०

मम वृक्षस जन विप्राणां यत्र स्यात् पमाननं ३५ निषु संभावगं यत्र तत्र नित्यं वसाम्यहं नारद उवाच इति तद्वचनं श्रुत्वा विषसा वदनो भवत् ३६
उद्दालकः पुनर्विप्रो वाक्यं स्मृत्वा न ऊचिवान् सोगच्छद्यत्र तत्रापि पूजामालोक्य साब्रवीत् ॥ ३७ नयासीति ततः श्रीपि भ्रमन्स्वेरातुरो भवत्
उद्दालकस्ततो वाक्यं तामलक्ष्मीमुवाच ह ३९ उद्दालक उवाच तावदश्वत्थवृक्षेस्मिन् लक्ष्मीः स्थीयतां क्षणात् आवासस्थानमालोक्य यावदा॥
याम्यहं पुनः ३९ नारद उवाच इति तां तत्र संस्थाप्य जगामोद्दालकस्तदा प्रतीक्ष्यापि चिरं तत्र यदा तं न ददर्श सा ४० तदारुरोद करुणं सर्त्यागे
न दुःखिता तत्स्या रुदितं लक्ष्मीर्वैकुंठभवनेशृणोत् ४१ तदा विज्ञापयामास विष्णुमुद्विग्नमानसा लक्ष्मीरुवाच स्वामिन्मद्भगिनी ज्येष्ठा भर्तृत्यागेन दुः
खिता ४२ तामाश्वासयितुं याहि कृपालो यद्यहं प्रिया नारद उवाच लक्ष्म्या सह ततो विष्णुस्तत्रागच्छत्कृपान्वितः ४३ आश्वासयंस्तलक्ष्मीं तामिदं वचा॥
नमब्रवीत् विष्णुरुवाच अश्वत्थवृक्षमाश्रित्य सदा लक्ष्मीः स्थिरा भव ४४ ममांशसंभवो ह्येष आवासस्ते मया कृतः प्रत्यब्दं ये च पूजयिष्यंति त्वां ज्येष्ठां गृह
धर्मिणः ४५ तेषां श्रियं ... ते भगिनी निश्चला स्तु वै नारद उवाच इत्युक्त्वा भगवान्विष्णुस्तत्रैवांतरधीयत ४६ इति ते कथितं ब्रह्मन्माहा
त्म्यं कार्तिकस्य तु इति ... माहात्म्यं संपूर्णमेव प्रकीर्तितं ४७ यत्कथाश्रवणेनापि लभ्यते वांछितं फलं ४८ रोगापहं पातकनाशकारं सु
बुद्धिदं पुत्रधनादिसाधनं ... निदानं न हि कार्तिकव्रतात् विष्णुप्रियादन्यदिहास्ति भूतले ४९ इमां कथां यः शृणुते नरोत्तमो यः श्रावयेद्वापि विशु
द्धचेताः स तीर्थराजं बदरीवनं यद्गत्वा फलं तत्समवाप्नुयाच्च ५० कलिमलमपहृत्य प्राणिनो नंतदेव विवि धसकलभोगान्भूजयित्वानुभूय हरिपुरा
माः प्रीतिवास प्रभावाद्विहितमुदयिनं ते नोषयंते रमेशं ५१ विष्णुप्रियं सकलकल्मषनाशनं च सत्पुत्रपौत्रधनधान्यविवृद्धिकारि ऊर्जव्रतं स नियमं कु
र्वंति ... तीर्थपरिशीलनसेवया च ५२ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिकमाहात्म्ये षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ शुभं सं० १९ ३७ मी० कुआर शुक्ल १ मंगल॥

॥ इति जलंधरोपाख्यान कार्त्तिकमाहात्म्य समाप्तम् ॥

दुतावासों के गैर-आवश्यक कर्मचारियों को जल्द से जल्द दोनों देशों से बाहर निकलने की सलाह दी थी। इसके लिए

प्रधानमंत्री अब्दुल्ला अहमद बदवी ने कहा है कि भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव एशिया प्रशांत क्षेत्र के लिए भी

प्रधानमंत्री कार्यालय के बयान के मुताबिक गोह ने यह अपील रक्षा मंत्री जॉर्ज

से आपसी विवादों को बातों के जरिए सुलझाने की अपील की है।

भारत के साथ परदे के पीछे संपर्क का खंडन

इस्लामाबाद, 3 जून (एजेंसियां)

पाकिस्तान ने आज इस बात से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया कि वह कश्मीर में आतंकियों की घुसपैठ करा रहा है। साथ ही कहा कि भारत के साथ परदे के पीछे किसी तरह की कोई बातचीत या संपर्क नहीं है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अजीज अहमद खान ने कहा कि बड़े पैमाने पर भारतीय सैनिकों की तैनाती तथा नियंत्रण रेखा से सटे इलाकों में बिछी बारूदी सुरंगें और बाड़ लगाए जाने के बाद किसी घुसपैठ के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं बचती। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि कश्मीर में इतने बड़े पैमाने पर भारतीय सेना तैनात की गई है कि यदि उन्हें नियंत्रण रेखा के साथ खड़ा कर दिया जाए तो मेरे विचार से एलओसी के एकतरफ पूरी मानव श्रृंखला ही बन जाएगी, जो किसी भी तरह की गतिविधियां नहीं होने देगी।

उन्होंने कहा कि भारत के साथ परदे के पीछे यानी गोपनीय तरीके से कोई बातचीत अथवा संपर्क नहीं रखा जा रहा है। जो भी बातचीत होगी आधिकारिक और औपचारिक स्तर पर की जाएगी। हम कजाकिस्तान भी सकारात्मक रुख के साथ जा रहे हैं। बातचीत के पक्ष में अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच सैन्य अभियान महानिदेशक स्तर पर संपर्क कायम है।

खान ने कहा कि भारत ने अत्याधुनिक उपकरण लगा रखे हैं, पूरे इलाके में बारूदी सुरंग बिछा दी है, क्षेत्र में बाड़ लगा दी गई है। इसके बावजूद ये आरोप लगाए जा रहे हैं इन आरोपों की जांच करने तथा पुष्टि करने के लिए यही उचित समय है और हम इसके लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने कहा कि जहां तक सीमा पार से आतंकवाद के बेबुनियाद आरोपों का सवाल है, हमने उच्चस्तर पर अपना रुख स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी कोई गतिविधियां नहीं चल रही हैं। उन्होंने कहा कि यह तो एकदम अनुचित है कि भारत लगातार यह आरोप लगाता रहता है, लेकिन एलओसी से सटे इलाकों में अंतरराष्ट्रीय या संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षकों की तैनात करने के मुद्दे पर राजी नहीं होता।

आमना-सामना हुआ तो फिर क्या होगा

अलमाटी, 3 जून (प्र)

प्रधानमंत्री वाजपेयी और पाकिस्तानी राष्ट्रपति मुशर्रफ का आमना-सामना कैसा होगा, इसमें अब तक भारतीय मीडिया को ही दिलचस्पी थी। लेकिन अब सम्मेलन में भाग लेने आए नेताओं, उनके दलों और दूसरे देशों के मीडिया की भी इसमें रुचि बढ़ रही है। जनरल बार-बार मिलने की इच्छा जता रहे हैं तो वाजपेयी मुलाकात से बचने की हरसंभव कोशिश कर रहे हैं। काठमांडू में मुशर्रफ ने अचानक वाजपेयी से हाथ मिलाया तो सब हैरान रह गए थे। इस दफे भी ऐसा कुछ होगा या नहीं, इस पर खासे कयास लगाए जा रहे हैं। एक भारतीय अधिकारी ने कहा कि मुशर्रफ अचानक वाजपेयी से नमस्कार करते हैं तो कुछ न कुछ तो कहना और करना ही पड़ेगा।

भारत-पाक तनाव घटाने की कोशिशों में चीन भी जुटा

पेइचिंग, 3 जून (एजेंसियां)

चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन कल अलमाटी में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ से अलग-अलग मुलाकात करेंगे। इन मुलाकातों के दौरान

अपना नजरिया साफ कर दिया है। वह उम्मीद करता है कि दोनों देश संयम रखेंगे और दक्षिण एशिया में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए आपसी विवादों को बातचीत के जरिए सुलझाएंगे।

जवाबी गोलाबारी में पाक के छह सैनिक मारे गए

जम्मू, 3 जून (एजेंसियां)

नियंत्रण रेखा (एलओसी) और अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे इलाकों में पाकिस्तानी सेना की गोलाबारी जारी है। पुंछ जिले के मेंधर सेक्टर में आज सुबह भारतीय तोपखाने की जवाबी गोलाबारी

कार्रवाई के चलते पाकिस्तानियों ने हमला और तेज कर दिया। दोनों तरफ से अगले दो घंटे तक गोलाबारी जारी रही, जिसमें छह पाकिस्तानी सैनिक मारे गए तथा कई बंकर तबाह हो गए।

उधर, कल रात डास, कारगिल तथा

सचिव से कहते हुए निकल गए कि मैंने इस्तीफा दे दिया है, बाकी जना जी से पूछ लीजिए।' ज्यादा कुछ पूछने पर उन्होंने सीधा-सा जवाब दिया- 'दो दिन से आप लोग सब कुछ पढ़ रहे हैं, देख रहे हैं और सुन रहे हैं, अब और क्या पूछना चाहते हैं?'

पार्टी सूत्रों का कहना है कि कृष्णमूर्ति ने कलराज के प्रदेश कार्यकारिणी में अपनाए गए रवैए के लिए खिंचाई की। पार्टी मुख्यालय से उनके चले जाने के बाद भाजपा अध्यक्ष ने संवाददाताओं से कहा कि कलराज ने पार्टी की विधानसभा चुनावों में हुई हार की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है और पद छोड़ने की इच्छा जताई है।

उन्होंने कहा कि इस बारे में जल्दी ही वरिष्ठ नेताओं के साथ विचार विमर्श करके वे कलराज को फैसले से अवगत

दिलचस्प यह है कि जहां जना ने कार्यकारिणी की भावनाओं के अनुरूप फैसला करने का आश्वासन दिया था कि वे इस्तीफे पर प्रदेश कार्यकारिणी की भावनाओं (कार्यकारिणी ने कलराज की पेशकश को नामंजूर कर दिया था) के अनुरूप फैसला करेंगे, लेकिन आज कार्यकारिणी की भावनाओं की चर्चा उन्होंने नहीं की।

गौरतलब है कि कलराज ने भी अपने भाषण में इसी गुटबाजी और खींचतान की ओर राजनाथ सिंह, ओमप्रकाश सिंह और लालजी टंडन का नाम लिए बिना इशारा किया था। लेकिन पार्टी नेता उनके तरीके से नाराज थे।

कलराज मिश्र आज सुबह ही दिल्ली आ गए थे और दिन भर संवाददाताओं से मिलने से कतराते रहे। बस दोपहर बाद जना से बात की। उनको प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक से अवगत कराया और साथ ही इस्तीफा भी दे दिया।

केस्को एनटीपीसी को सौंपने का प्रस्ताव खारिज

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ, 3 जून

केस्को को राष्ट्रीय ताप बिजली निगम (एनटीपीसी) को सौंपने के शासन के प्रस्ताव को खारिज करते हुए विश्व बैंक ने वितरण का अनुभव रखने वाली किसी कंपनी से ही बातचीत करने को कहा है। विश्वबैंक ने वितरण कंपनियों के गठन के लिए छह माह तक दबाव न डालने का भी संकेत दिया है। इसके साथ ही स्पष्ट किया है कि ऊर्जा सुधार कार्यक्रम की सफलता पर ही अन्य क्षेत्रों के लिए वित्तीय सहायता

प्रस्ताव तैयार किया गया। इसका मकसद यह था कि केस्को की व्यवस्था पटरी पर आ जाने के बाद निजीकरण की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाए।

विश्वबैंक ने केस्को को एनटीपीसी के हवाले करने का विचार त्यागकर फिर से टेंडर आमंत्रित करने तथा निजी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए बेहतर पैकेज तैयार करने का सुझाव दिया है।

टीम ने शासन के अधिकारियों को आंध्र प्रदेश व राजस्थान से नसीहत लेने को कहा है।

पूरे प्रदेश में बिजली संकट बेकाबू

गई। ओबरा की तीन नंबर इकाई भी बंद हो गई है। पारीछा की इकाइयां कई बार ट्रिप हुईं।

ताप बिजलीघरों का कुल उत्पादन 2350 मेगावाट के आसपास रह गया है। जल विद्युतगृहों को पूरी क्षमता से चलाकर 260 मेगावाट से ज्यादा बिजली का उत्पादन किया जा रहा है। मांग अधिक होने के कारण दिन में केंद्र से 2,117 मेगावाट बिजली का आयात किया जा रहा था, फिर भी व्यापक पैमाने पर कटौती की जा रही थी। रात में मांग व उपलब्धता में लगभग 1,200 मेगावाट का अंतर है। ग्रिड को काबू में रखने के लिए पूरे प्रदेश में अतिरिक्त आपात कटौती की जा रही है।

उधर, राज्य विद्युत परिषद अभियंता संघ के अध्यक्ष ए.एन. पांडेय व महासचिव अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि पारीछा को छोड़ बाकी सभी अभियंताओं ने दो घंटे कार्य बहिष्कार किया।

अनपरा, ओबरा, पनकी, पारीछा, हरदुआगंज बिजलीघरों के अलावा गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, बरेली, फैजाबाद, कानपुर, झांसी, आगरा, मुरादाबाद, मेरठ व सहारनपुर में विरोध सभाएं आयोजित की गईं। शक्ति भवन में हुई सभा में पदाधिकारियों ने घोषणा की कि बिजली कंपनियों के गठन का फैसला निरस्त होने तथा आईएएस प्रबंधन वापस जाने तक आंदोलन जारी रहेगा।

चार बच्चों समेत छह लोग ट्रेन से

कर बच्चों को पटरी के मध्य फेंका और फिर स्वयं कूद गए। इसमें एक महिला समेत चार की मौके पर मौत हो गई, जबकि दो की सांस चल रही थी। उन्हें जिला अस्पताल लाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। इस घटना में सात माह का एक अबोध बालक बाल-बाल बच गया है।

हादसे की खबर मिलते ही वहां पसही, हिंदआरी, खैराही, मद्दूपुर, बभनौली समेत करीब आठ गांवों के लोग जुट गए, लेकिन मृतकों की शिनाख्त नहीं हो सकी। कोतवाली पुलिस के जाने के बाद वहां सीओ सदर एके सिंह व एसडीएम आरएन यादव पहुंचे और शवों को समेटकर अस्पताल लाया गया।

मास्टर आरपी सिंह के अनुसार चालक पांडेय ने पहले ही ट्रेन रोकने का प्रयास किया था, लेकिन गाड़ी खड़ी होने से पहले ही ये चपेट में आकर कट गए थे। इस बाद उत्तर रेलवे के इलाहाबाद जोन असिस्टेंट आपरेटिंग मैनेजर (एओएम) कंट्रोल रूम को खबर दी गई और चुनार राबर्ट्सगंज मार्ग पर सभी सिगनल तत्काल प्रभाव से डाउन कर दिए गए और इधर गुजरने वाली ट्रेनों को शव हटने तक लिए जहां-तहां रोक दिया गया। स्टेशन मास्टर श्री सिंह के मुताबिक सभी मृतक एक ही परिवार जैसे थे। ट्रेन जैसे ही आई ये बच्चों को लेकर बारी-बारी से कूद गए। कोतवाली पुलिस के अनुसार मरने वाले सभी एक ही परिवार के हो सकते हैं।